मासिक
वैदिक गर्जना
अप्रैल/मई २०१८

संस्कारस्तम्भ

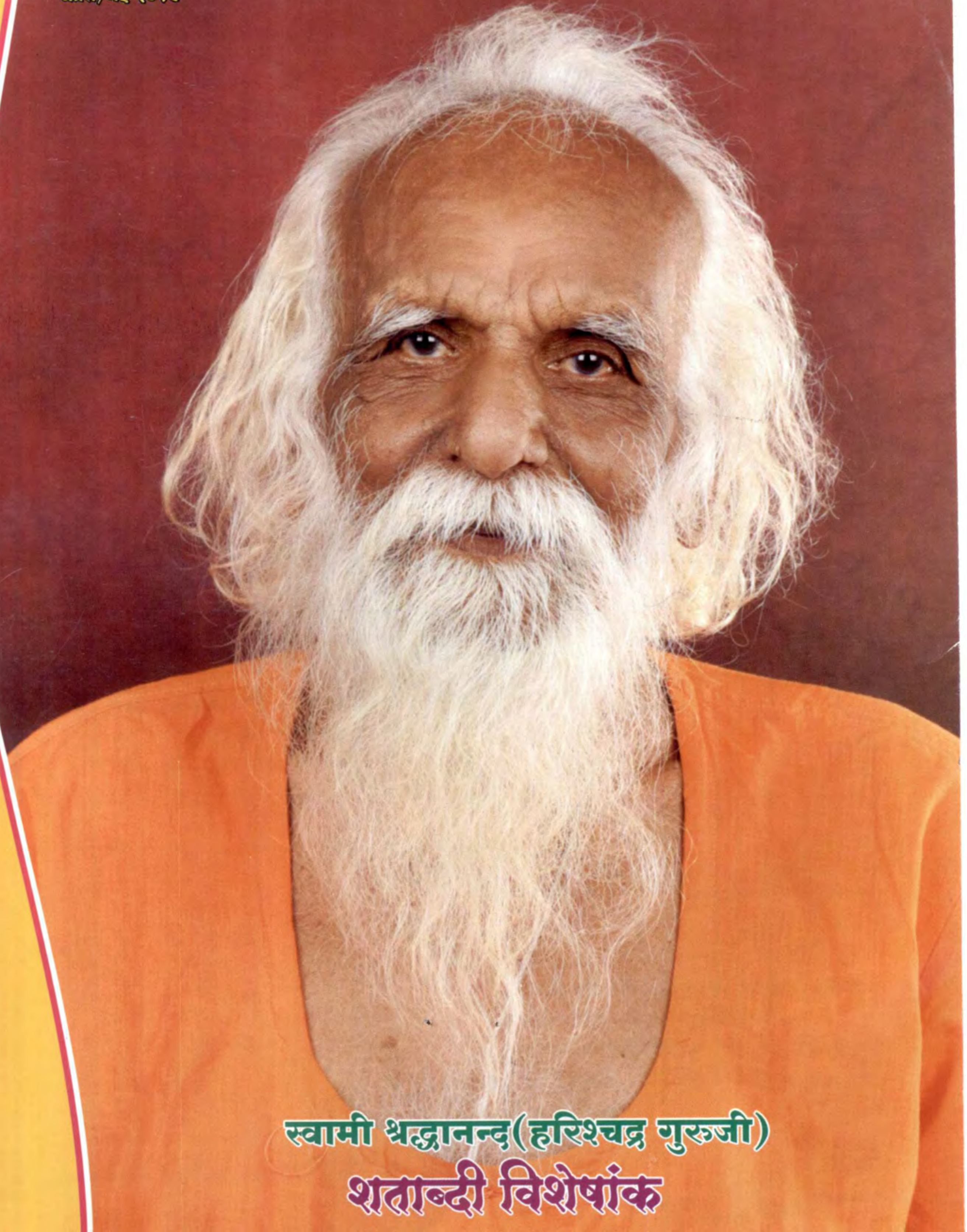

स्वामी श्रद्धानन्द(हरिश्चन्द्र गुरुजी)
शताब्दी विशेषांक

सन् २००६- परली में आयोजित गुरुजी (स्वामीजी) के भव्य गौरव समारोह में उनका सम्मान करते हुए आर्य जगत् के वरिष्ठ सन्यासी स्वामी धर्मानन्दजी सरस्वती।

सन २०१२ में दिल्ली के अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में स्वामीजी का अभिनन्दन करते हुए योगर्षि स्वामी रामदेवजी।

महाराष्ट्र सभा की ओर से लातूर में आयोजित पं.नरेन्द्र स्मृति समारोह में गुरुजी का सम्मान करते हुए आर्यजगत् के प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता प्रा.राजेन्द्रजी 'जिज्ञासु'।

सम्भाजीनगर (औ.बाद)के प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में स्वामीजी का महाशय धर्मपालजी, डॉ.सत्यपालसिंहजी, जयसिंगरावजी गायकवाड आदियों की उपस्थिति में सम्मान हुआ।

॥ओ३म्॥

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का

मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११९	कलि संवत् ५११९	विक्रम संवत् २०७५
दयानन्दाब्द १९४	चैत्र/वैशाख/अ.ज्येष्ठ	१० अप्रैल/मई २०१८

संस्कारस्तंभ

(स्वामी श्रद्धानन्द गौरव विशेषांक)

मार्गदर्शक सम्पादक

डॉ.ब्रह्ममुनि

(९४२११५११९०४)

प्रधान सम्पादक

माधव के.देशपांडे

(९८२२२९५५४५)

सम्पादक

डॉ.नयनकुमार आचार्य

(९४२०३३०१७८)

– सहसम्पादक –

प्रा.देवदत्त तुंगार

प्रा.सत्यकाम पाठक

प्रा.ओमप्रकाश होलीकर

ज्ञानकुमार आर्य

✻ प्रकाशक ✻

मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय–आर्य समाज, परली–वैजनाथ ४३१५१५

✻ मुद्रक ✻

वैदिक प्रिन्टर्स, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज, परळी–वै.

Reg.No.MAHBIL/2007/7493*Postal No.L/Beed/24/2018-2020

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली–वैजनाथ जि.बीड ही होगा।

संस्कारपीठ के कर्मयोगी आचार्य !...

समाजसुधार व देशसेवा के लिए जीवन जीनेवाले महापुरुषों की पुष्पमाला को सुरभित करनेवालों में हमारे वंदनीय गुरुदेव स्वामी श्रद्धानन्दजी (हरिश्चन्द्र गुरुजी) का नाम बडे गौरव के साथ लिया जाता है। अनेकों समाजसेवियों ने अपने सुधार का केन्द्रबिन्दू जहां समाज के सभी घटकों को माना, जिसमें प्रायः प्रौढ व वयस्क आ जाते हैं। किन्तु गुरुजी ने प्रभु आज्ञा से राष्ट्र की छात्रशक्ति को सुसंस्कारित कर उन्हें 'श्रेष्ठ मानव' बनाने हेतु अपना सारा जीवन लगाया। इस तरह की कार्यप्रणाली शायद ही अन्यों में देखने मिलेगी? क्योंकि गुरुजी ने यह जाना था कि, पुराने दृढ संस्कारों को धारण किये जडवृत्ति बने प्रौढों को उपदेश देने से क्या मतलब? उनमें सुधार या परिवर्तन होना प्रायः दुष्कर होता है, किन्तु कोमल व पवित्र अंतःकरणवाले बच्चों व विद्यार्थियों में सुसंस्कारों की स्थापना सहज सुलभ होती है। इसलिए गुरुजी ने अपना जीवनलक्ष्य छात्रसुधार को चुना। स्कूल-कॉलेज व छात्रावास में पहुंचकर अपना स्वयं का संस्कारपीठ खोला। अपने मधुरमय प्रबोधन से नैतिक शिक्षा का ऐसा पाठ पढाया जो कि निश्चय ही युगपरिवर्तनकारी सिद्ध हुआ।

स्वतन्त्रता के पश्चात् हमारी सरकारों ने शिक्षा के विकास के लिए करोडों रुपये व्यय किये, इससे वेतनभोगी वर्ग तो तैयार हो गया, किन्तु उसमें मानवीय मूल्यों का पूरी तरह अभाव रहा। इसकी पूर्तता सही अर्थों में गुरुजी ने की है। गुरुजी स्वयं ही एक महान संस्था थे। जो काम सरकारें नहीं कर पाती, उसे गुरुजी ने कर दिखलाया। देश में नैष्ठिक ब्रह्मचारी, साधु-संन्यासी, समाजसेवक, शिक्षाविद्, प्रचारक आदि अनेकों की संख्या में दिखाई देते हैं, किन्तु गुरुजी(स्वामीजी) जैसा कार्य करनेवाला क्वचितही मिलेगा।

महाराष्ट्र में सन्त व समाजसुधारकों की एक परम्परा रही है। अनेकों ने समाज व राष्ट्र के नवनिर्माण हेतु अपनी-अपनी बुद्धि से योगदान दिया। किन्तु इन्हीं में स्वामीजी का कार्य कुछ हटकर रहा। राष्ट्र की युवाशक्ति में बौद्धिक क्षमता को बढाने में अनेक प्रयत्न होते रहे है। आरक्षण के माध्यम से कमजोर वर्ग के छात्रों को निःशुल्क शिक्षा के अधिकार मिले। किन्तु इन सभी में मानवीय मूल्यों को धारण कराने हेतु किसीने प्रयत्न नहीं किया। इस दृष्टि से स्वामीजी का कार्य अभूतपूर्व माना जायेगा। गुरुजी ने अपना यह ईश्वरीय कार्य प्रसिद्धी से दूर रहकर किया। **'न मे कर्मफले स्पृहा'** इस वचन के अनुसार गुरुजी किसी भी प्रकार के फल की अपेक्षा न करते हुए अपनी कार्यक्षेत्र में सदैव आगे बढते रहे।

गुरुजी की तपस्या का फल है कि, आज सर्वत्र गुरुजी के विद्यार्थी हर क्षेत्र में नजर आ रहे है। महाराष्ट्र सभा का कार्य स्वामीजी के कारण ही प्रगतिपथपर है। ऐसे कर्मयोगी गुरुजी अपने यशस्वी जीवन के सौ वर्ष पूर्ण कर रहे हैं। इस उपलक्ष्य में उनके शताब्दी समारोह के अवसर पर वैदिक गर्जना का **'संस्कारस्तंभ'** यह विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है। इसके लिए सभा के पदाधिकारी एवं गुरुजी के छात्रों ने अत्यधिक सहयोग दिया। अनेकों ने अपने हिंदी-मराठी लेख भेजकर गुरुजी के प्रति अपने हार्दिक श्रद्धाभाव प्रकट किये। इन सभी का हम हृदय से आभार प्रकट करते है।प्रकाशन के कार्य में श्री हनुमान जाधव एवं संगणकीय कार्य में श्री दिगंबर सावंत ने कष्ट उठाये। इसलिए उनका हृदय से धन्यवाद!

- नयनकुमार आचार्य

कहाँ पर क्या पढें...?

हिन्दी विभाग

*	सम्पादकीयम् ....(डॉ.नयनकुमार आचार्य)	अ
१.	गुरुजी – क्या से क्या बनें ?.................. (प्रा.राजेन्द्र 'जिज्ञासु')	१
२.	शत् शत् अभिनन्दन वन्दन ....(डॉ.महावीर अग्रवाल)	४
३.	गुरुजी और मठ – एक अनोखा रिश्ता............. (स्वामी सदानन्द)	५
४.	आर्य सन्यासी– स्वामी श्रद्धानन्द ....(डॉ.रघुवीर वेदालंकार)	६
५.	'मनुर्भव' के सन्देशवाहक – गुरूजी ....(डॉ.तानाजी आचार्य)	७
६.	अनेकों के जीवननिर्माता ....(पं.विश्वनाथ आर्य)	१०
७.	आर्य समाज के सम्पोषक व संवर्धक ....(डॉ.ब्रह्ममुनि)	११
८.	विद्यार्थियों के पथप्रदर्शक ....(पं.सुधाकर शास्त्री)	१३
९.	गुरुजी–वैदिक धर्म के सिपाही................. (डॉ.व्यंकट कोलपुके)	१४
१०.	कृतात्मा 'स्वामी श्रद्धानन्दजी'...................(सुरेश गीर 'सागर')	१६
११.	पूज्य गुरूजी के सान्निध्य में ....(डॉ.बी.एम.मेहेत्रे)	१८
१२.	कृपा गुरूजी की ....(डॉ.रामचन्द्र पाटील)	१९
१३.	ध्येयवादी गुरुजी ....(प्रो.ओमप्रकाश होलीकर)	२१
१४.	मेरे प्रेरक – श्रद्धानन्द.......................................(वशिष्ट आर्य)	२२
१५.	गुरुजी को नमन!.............................(श्रीमती शशिकला आर्य)	२३
१६.	ब्रह्मचारी की कहानी ....(रोहित जगदाले)	२४

✲ मराठी विभाग ✲

१.	श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्दजी ....(डॉ.जे.एम.वाघमारे)	२५
२.	शतायुषी स्वामी श्रद्धानन्दजी ....(रमेश ठाकुर)	३०
३.	कृतार्थ हाताचा परीसस्पर्श ....(लक्ष्मण आर्य)	३३
४.	गुरुजींच्या विधायकतेचे शताब्दी वर्ष ....(प्रा.देवदत्त तुंगार)	३४
५.	गुरुजींचे ध्येयनिष्ठ जीवन व कार्य ....(किशन राऊत)	३५
६.	आमचे गुरुजी ....(माणिक सि. घाटे)	३७
७.	एक युगपुरुष–स्वामी श्रद्धानन्द ....(योगिराज भारती)	३९
८.	गुरुजी की बात–गावाची साथ ....(ॲड.मारुती घोरपडे)	४०
९.	माणसे जन्मावी लागतात! ....(सौ.लीलावती जगदाळे)	४२
१०.	आमचे भूषण–'गुरुजी'.................................... (गुणवंत पाटील)	४४
११.	माझे प्रेरणा स्थान – गुरुजी ....(डॉ.विठ्ठल जाधव)	४६
१२.	गुरुजींची प्रेमळ छाया ....(विजयकुमार कानडे)	४७
१३.	पाळणा गुरुजींचा! ....(सौ.सुभद्रा घोरपडे)	४८
१४.	गुरुजींचा सहवास ....(रवींद्र साळुंके)	४९
१५.	विद्यार्थ्यांचे दीपस्तंभ ....(माधव चव्हाण)	५०
१६.	गुरुजींमुळे जीवनाला नवदिशा ....(अर्जुन सोमवंशी)	५१
१७.	जातीअंताच्या चळवळीतील प्रेरक व्यक्तिमत्त्व ....(ज्ञानकुमार आर्य)	५२
१८.	गुरुजी–'वन मॅन आर्मी' ....(राजेंद्र दिवे)	५३
१९.	माझे संस्कार गुरु ....(विज्ञानमुनी)	५४

वैदिक गर्जना के शुल्क

वार्षिक रु.१००/-   आजीवन रु.१०००/-

सम्पादक से सम्पर्क : डॉ.नयनकुमार आचार्य (मो.९४२०३३०१७८) ई–मेल : nayankumaracharya222@gmail.com

उत्क्रामातः पुरुष मावपत्था।

भूयश्च शरदः शतात्।

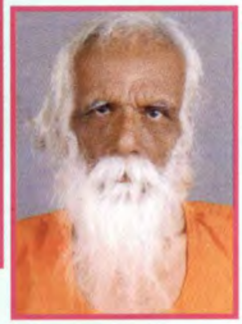

समय बीतता गया, अवस्थाएँ बदलती रही, फिर भी विद्यार्थियों के निर्माण का कार्य जारी रहा। जीवन भर आध्यात्मिक साधना को कभी खण्डित नहीं किया।

शतकपूर्ति पर आज भी उतना ही उत्साह कायम है...! हौसला बुलन्द है...!!

जगह-जगह आयोजित 'मानवता संस्कार शिविरों' में गुरुजी का मौलिक उपदेश-
श्रेष्ठ मानव बनो, मानवता में वृद्धि करो!

औराद ग्राम में आयोजित संस्कार शिविर के समापन समारोह का दृश्य। प्रमुख मार्गदर्शक स्वामी सुधानन्दजी एवं वि.रा.पाटील।

माणिकप्रभु ता.हुमनाबाद(कर्नाटक)के संस्कार शिविर में स्वामी इंद्रवेशजी का मार्गदर्शन। मंच पर हैं गुरुजी, प्रा.सोनेरावजी, आचार्य सुभाषजी।

शिविर के अन्तिम दिन विद्यार्थियों का सामूहिक उपनयन संस्कार किया जाता है।

टोकवाडी, परली-वै. में आयोजित संस्कार शिविर के समापन पर गुरुजी के साथ सहयोगी शिष्य एवं शिविरार्थी।

माता प्रयागबाई, बहन सौ.कोंडुबाई काले के साथ गुरुजी।
पार्श्व में खडी है भतीजी कलावती।

परली आर्य समाज में दि.२१.१२.१९८० को आयोजित महाराष्ट्र आर्य सभा के अधिवेशन में मार्गदर्शन करते हुए श्री हरिश्चंद्र गुरुजी। मंच पर हैं आनंदमुनिजी(शेषराव वाघमारे), श्री शिवमुनिजी(शिवरामजी जिंदम) एवं प्रा.वेदकुमार वेदालंकार।

संन्यास दीक्षा लेने के बाद गुरुदेव स्वामी सर्वानन्दजी सरस्वती(दयानन्द मठ, दीनानगर, पंजाब) से उपदेश ग्रहण करते हुए स्वामी श्रद्धानन्दजी।

भतीजी सौ.लीलावती राजेन्द्र जगदाळे द्वारा स्वामीजी के जीवनपर लिखे गये 'मानवतेचे पुजारी' इस ग्रन्थ का विमोचन करते हुए पूर्व केंन्द्रीय राज्यमन्त्री श्री जयसिंगराव गायकवाड एवं अन्य । साथ में है स्वामीजी।

सन् २००६ में स्वामीजी के गौरव समारोह में भेटस्वरूप २१ लाख रूपये का चेक स्वामीजी को प्रदान करते हुए स्वामी धर्मानन्दजी, आचार्य डॉ.धर्मवीरजी, डॉ.मेहेत्रे, डॉ.नवलकेले तथा रवीन्द्र साळुंके।

स्वाधीनता सैनिक श्री तुकारामपंतजी गंजेवार (धर्माबाद) की वानप्रस्थ दीक्षा दिलाने के पश्चात् उनका सन्मान करते हुए दीक्षागुरु स्वामीजी।

प्रसिद्ध विचारविद् डॉ.जे.एम.वाघमारे सहित कई ज्येष्ठ आर्यसेवकों का लातूर में स्वामीजी के हाथों गौरव किया गया।

महाशय धर्मपालजी (एम.डी.एच.)द्वारा गुरुकुल आश्रम परली में नवनिर्मित वानप्रस्थाश्रम भवन के उद्घाटन अवसर पर स्वामीजी एवं अन्य।

हरिश्चन्द्र गुरुजी - 'क्या से क्या बन गये ?'

- प्रा.राजेंद्र 'जिज्ञासु'

स्वामी श्रद्धानन्द जी (पूर्व हरिश्चंद्र गुरुजी) को आज महाराष्ट्र ही नहीं पूरे देश में समाजसेवी व धर्म प्रेमी जानते हैं। मेरी उनसे प्रथम भेंट इतिहास की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। यह आज से ५५ वर्ष पहले की घटना है। प्राचार्य भगवान्दासजी ने मुझे कहा, 'क्या पदयात्रीजी आपसे मिले?' मैंने कहा, मुझे तो कोई पदयात्री नहीं मिले। मैं यह समझा कि कोई विनोबा भावे जी का पदयात्री कालेज में अपने विचार देने आया होगा?

आपने कहा, 'विनोबा के नहीं, आर्यसमाज के पदयात्री आये हैं। वह आपसे मिलेंगें।' मैंने उनका पूरा परिचय पूछा, तो उन्होंने बताया कि गुंजोटी के समीप औराद ग्राम के एक आर्य मिशनरी हरिश्चंद्रजी ग्राम-ग्राम घूमकर पदयात्रा करते हुये युवकों में वैदिक धर्म का प्रचार करते हैं। यह पदयात्री पूरा वर्ष स्वतः प्रेरणा से शिक्षण संस्थाओं में जाकर सँवाद शैली से युवकों को प्रभावित करते और उनका जीवन-निर्माण करते हैं। आपके मुख से उस अथक यात्री के बारे में जानकारी प्राप्त करके मेरी गुरुजी से मिलने की उत्सुकता की कोई सीमा न रही । मैंने पूछा, 'वह कहाँ हैं?' प्राचार्यजी ने कहा-'वह आपको कागावास में मिलेंगे। मैंने आपका पता बताया है।' एक जागरुक पूर्णकालिक मिशनरी होने के कारण आप मुझे नाम से भली भाँति जानते थे।

भगवानदास जी आर्य समाज के ऐसे पहले नेता और विचारक थे, जिन्होंने हरिश्चंद्रजी की प्रतिभा को, लुप्त गुप्त शक्तियों को पहचाना। आपके कथन का सार यह था कि इस सीधे सादे ग्रामीण समाजसेवी की एक दिन समाज में पहचान होगी। ये युवकों पर का न्याय छोडेगा। महाराष्ट्र के आर्य समाज को एक नई दिशा देगा। आर्यसमाज के भविष्य का निर्माण बनेगा।

मेरा गुरु से जीवंत सम्पर्क हो गया। वे सोलापूर आते रहते। मैं गुंजोटी औराद प्रचारार्थ जाता ही रहता था। जहाँ जाता इनका परिचय सबको देता था। एक बार पं.नरेंद्रजी को इनके बारे कुछ इसी प्रकार से बताया । वे इन्हें तब कुछ २ जानते तो थे, परंतु इनकी अनुठी कार्यशैली के चमत्कारी प्रभाव को वे तब तक नहीं जानते थे सो मेरे कथन पर उन्हें पूरा विश्वास न हुआ परंतु अपने निधन से पूर्व पूज्य पंडित जी ने भी लिखित व मौलिक रूप से श्री गुरुजी को आर्यसमाज के भविष्य का एक कर्णधार माना।

श्री गुरुजी का जीवन बडा तपस्वी रहा। किसी से कभी कुछ माँगते ही न थे। भोजन के लिये भी किसी को कुछ न कहते। श्री गुणवंत, श्री अण्णाराव उनके निजी व्यय के लिये व यात्राओं में बस किराये के लिये जो कुछ देते थे, आप उस निमित्त कम से कम लिया करते थे। उनका आग्रह था कि किसी को मत बताना कि हम आपको सहयोग करते हैं, परन्तु आपने मुझ पर यह प्रकट कर दिया।

आप हमारे कॉलेज के छात्रावास में आते रहते थे। मैंने कहा, 'जब आया करें, ऊपर हमारे घर सूचना दे दिया करें। भोजन यहीं किया करना। आप कभी भोजन के लिये सूचना नहीं देते थे। जब दो-चार बार

आने से घनिष्ठता हो गई, तो फिर किसी छात्र या कॉलेज के कर्मचारी द्वारा सूचना पहुँचा देते। मैं देख लेता, तो स्वयं ही भोजन के समय बुला लिया करता। जब पौप के आने पर आपको स्थानबद्ध किया गया तो मैंने आप पर आर्य पत्रों में लेख दिया । किसी आर्य पत्र में प्रथम बार मैंने ही आप पर कुछ लिखा। आपका चित्र लाने के लिये औराद गुणवन्तजी को या किसी को भेजा। आपने अपना चित्र देने से इन्कार कर दिया।

श्रावणी पर सोलापुर आर्य समाज ने आपका विशेष सम्मान रखा। मैंने सोलापुर आने के लिये सन्देश भेजा। समाज की तो बात बताई ही नहीं। आप सब समझ गयें कि क्यों बुलवाया है? आप तब नहीं आये। यह कहकर सन्देहशवाहक को कहा, 'प्राचार्य भगवानदासजी व जिज्ञासुजी मेरा सम्मान करेंगें।'

* ऐसा तिरस्कार –

एक बार श्री कृष्णराव जी आर्य हलवाई (लातूर) के पुत्र ने आर्यसमाज के उत्सव पर सब विद्वानों के साथ आपको भी भोजन पर बुलवाया। जब समाज से सब चले तो आप भी साथ हो लिये। इस पर दिल्ली से आये एक बाबाजी ने कहा, "आपका वहाँ क्या काम? विद्वानों को ही बुलाया है।" अपमान का घूँट पीकर आपने कहा, 'मुझे उनके पिता भी बुलवाया करते थे। आज भी मैं आमन्त्रित हूँ।' तथाकथित ऐसे साधु जो आर्य समाज को चार कार्यकर्त्ता न दे सके, वे भी आपकी प्रतिभा व महत्ता न जान सके।

एक बार एक आर्य ने मुझे कहा, मैं पूरा समय समाज को दूँगा। मेरे पुत्र अपने कामधंदों में लगे हैं। हमारी खेती को सम्भालने वाला एक विश्वस्त मिला व्यक्ति दे दें। मैंने कहा, 'औराद के लोग आर्य हैं, सम्पन्न नहीं। गुरुजी एक व्यक्ति दे देंगें। आपको अच्छा कृषक मिल जायेगा।' उस आर्य को काम मिल जायेगा।

मैंने गुरुजी को एक अच्छा व्यक्ति देने को कहा। आपने हाँ कर दी परन्तु छह मास तक कोई व्यक्ति न दिया। मैंने कहा, 'गुरुजी ! आपको एक व्यक्ति देने को कहा था। आपने दिया नहीं?' आपने उत्तर में कहा, 'आपने एक व्यक्ति देने की बात नहीं कही थी, एक अच्छा श्रेष्ठ व्यक्ति देने को कहा था। कितनी ऊँची बात कही आपने...!'

मरते दम तक प्रचार करूँगा –

श्री अर्जुन सोमवंशी और मान्य ब्रह्ममुनिजीने सन १९०३ में मुझे कहा, "हम तो नहीं कह सकते। आप कह सकते हैं। आप गुरुजी से कहें, अब यात्रायें बन्द कर दें । परली में गुरुकुल में बैठे हम सेवा करेंगे। गुरुकुलवासी कुछ सीखेंगे। परली में श्री ब्रह्ममुनिजी के निवास पर कमरा बंद करके ऐसी सब बातें हमने विस्तार से आपको कहीं। आप चुपचाप रहकर हम दोनों को सुनते रहें। अंत में कहा, 'मैं जानता हूँ आपको मुझ से प्यार है। आप मेरी सेवा करना चाहते है, परन्तु मैं कहीं बैठकर विश्राम नहीं करुँगा। वैदिक धर्म प्रचार के लिये मरते दम तक यात्रायें करुँगा...!"

आपका यह उत्तर पाकर स्वामी श्रद्धानन्दजी, श्यामभाई के इस तप:पूत के चरणों में हमारा शीश झुक गया।

गुरुजी का अनुभव –

एक बार महाराष्ट्र सभा के मन्त्री श्री तेरकर ने एक कार्यक्रम का आयोजन किया। उस अवसर पर कई वक्ता, विद्वान आमन्त्रित थे। एक दूरस्थ प्रदेश से एक अनुभवी सुवक्ता महाराज जी बुलाये गये। तेरकरजी के घर पर ही उनके भोजन की व्यवस्था की गई। श्री हरिश्चन्द्रजी भी उनके निवास पर पहुँचें। सब जन बैठक में बैठे सामाजिक चर्चा कर रहे थे।

महात्माजी ने तेरकर जी की पत्नी को हलवा बनाने का निर्देश देते हुये कहा कि, "दिल्ली में जैसे हलवा बनाते हैं, वैसा ही बनाना!" वह देवी तो कभी मुंबई से आगे नहीं गयी थी। वह दिल्ली के पकवान की विधि क्या जाने? बाबाजी ने विधि भी समझा दी। पहली बार ही वह दक्षता से नया पकवान क्या बनाती? बैठक में बैठे हुये बातें छोडकर महाराज फुर्ति से पाकशाला में गये और कहा, "यह कैसा हलवा बना रही हो? दिल्ली का हलवा ऐसे थोडा बनता है...?"

यह प्रसंग सुनकर गुरुजी ने मुझसे पूछा, "उन महाराज को बैठक में बैठे कैसे ज्ञान हो गया कि रसोई में हलवा ठीक नहीं बन रहा?" यह सुनकर मैं हँस पडा। कहा, "उनको कुछ सिद्धियाँ प्राप्त होंगी। किसी का यम-नियमों की सिद्धि प्राप्त है। इनको सूँघने की गन्ध की सिद्धि प्राप्त होगी।" मेरा उत्तर सुनकर गुरुजी बहुत हँसे। ऐसे ऐसे अनुभवों का आपका अटूट भंडार है, जो अत्यन्त शिक्षाप्रद व प्रेरक है। अच्छा हो यदि नयनकुमारजी संग्रहीत करलें। मेरे मन में भी स्वामीजी के अनेक प्रेरक प्रसंग है, परन्तु फिर कभी ....!

– 'वेद सदन', नई सूरज नगरी, अबोहर, पंजाब

* * *

गुरुजी ने 'धर्मविरोधी' को 'धर्मप्रचारक' बना दिया...

बात आज से ४५-४६ वर्ष पूर्व की है। मैं और श्री गुरुजी अंबाजोगाई के बस स्टँड के सामने पब्लिक क्लब की सीढियों पर बैठे थे। 'तू धर्माला मानीत नाहीस म्हणे, सोनेराव!' गुरुजी ने पूछा। मैंने कहा, 'गुरुजी, धर्म के कारण संसार में कितने झगडे हुए हैं। हिन्दुओं-मुसलमानों, शिया-सुन्नियों, मुस्लिम-ख्रिश्चनों में झगडे... संसार में यदि धर्म न होता तो ये झगडे क्यों होते?'

गुरुजी बोले, 'अरे बाळ! ये झगडे धर्म के कारण नहीं हैं। ये तो तुमने गिनाए है ये धर्म नहीं, ये तो मत और पन्थ हैं। जो वास्तविक धर्म हैं, वह तो जोडता है, मानव को मानव से जोडता है, मानव को ईश्वर से जोडता है, मानव का सकल प्राणिमात्र से जोडता है।' गुरुजी के इन अमृत वचनों को सुन मेरे मस्तिष्क में सहस्रों सूर्यों का एक साथ प्रकाश पडा। कई जन्मों का अज्ञान-अंधेरा हट गया और कल का धर्म विरोधी आज अपना घर-बार छेड दूर देश में धर्म का प्रचारक बना। पूज्य श्री गुरुजी आप धन्य हैं।

- प्रा.सोनेराव आचार्य (आर्य समाज, लन्दन)

शत्-शत् अभिनन्दन-वन्दन!

- डॉ.महावीर अग्रवाल

धन्य है यह धरा, जहां समय-समय पर महापुरुषों का अवतरण होता रहता है। ये दिव्य गुणों से अलंकृत महामानव अपना समग्र जीवन मानवता की सेवा में समर्पित कर देते हैं। ऐसे श्रेष्ठतम पुरुषों में महाराष्ट्र की पुण्यभूमि में आज से १०० वर्ष पूर्व जन्म लेकर संपूर्ण जीवन 'एक आदर्श गुरु' के रूप में शिष्यों के निर्माण में न्यौछावर कर देनेवाले स्वनामधन्य माननीय श्री हरिश्चन्द्र गुरुजी का नाम स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य है।

गुरुजी ने समाज के निर्बल, प्रताडित, उपेक्षित, निर्धन वर्ग से आनेवाले हजारों शिष्यों की तन मन, धन से सहायता कर उन्हें उत्तम शिक्षा के साथ-साथ उत्कृष्ट संस्कार भी दिये। आप द्वारा शिक्षित व संस्कारित विद्यार्थी न केवल भारत के विविध राज्यों में अपितु अमेरिका, इग्लैण्ड आदि देशों में भी वैदिक शिक्षा पद्धति, संस्कृति एवं जीवनादर्शों के प्रचार-प्रसार में संलग्न हैं। आपके प्रिय शिष्यों ने अनेक क्षेत्रों में नेत्रदीपक उपलब्धियां प्राप्त की हैं।

राष्ट्र निर्माण के लिये अपना सर्वस्व आहुत कर देनेवाले श्रद्धेय गुरुजी ने वैदिक आश्रम व्यवस्था के अनुसार संन्यास की दीक्षा लेकर 'स्वामी श्रद्धानन्द' नाम धारण कर लिया, क्योंकि शिक्षा, धर्म, संस्कृति और बलिदान के मार्ग पर चलकर जीवन सफल बनानेवाले गुरुकुल कांगडी के संस्थापक पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द आपके प्रेरणा स्त्रोत थे। आपके प्रिय शिष्य जब आपके सम्बन्ध में श्रद्धापूर्ण हृदयोद्गार प्रकट करते हैं, तो हृदय श्रद्धा से भर आता है । सदाचार से परिपूर्ण गंगा जल के समान निर्मल, शीतल जीवन जीते हुए आपने **'जीवेम् शरदः शतम्'** की संकल्पना को साकार करते हुए दूसरी शताब्दी में प्रवेश कर लिया है, ऐसे देवपुरुष साक्षात् तीर्थरूप हुआ करते हैं। **'तीर्थभूताः हि साधवः'**

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि पूज्य स्वामी जी का जन्मशताब्दी महोत्सव, विनीत शिष्यों एवं समाज के प्रतिष्ठित महानुभावों द्वारा हर्षोल्लास पूर्वक मनाया जा रहा है और इस ऐतिहासिक, मंगल अवसर पर एक अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित किया जा रहा है। मेरा यह सौभाग्य है कि मैंने बीसवीं, इक्कीसवीं शताब्दी के इस महान सन्त के दर्शन किये हैं, उनका आशीर्वाद पाया है।

इस देश की हजारों वर्ष पुरातन गुरु-शिष्य परम्परा को पुनरुज्जीवित करनेवाले सच्चे महात्मा के श्रीचरणों में कोटि-कोटि प्रणाम करते हुए परम पिता परमात्मा से 'भूयश्च शरदः शतात्' की प्रार्थना करता हूँ।

(प्रति-कुलपति, पतंजलि विश्वविद्यालय
पूर्व आचार्य एवं उपकुलपति-गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय
पूर्व कुलपति उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार)

गुरुजी और मठ - एक अनोखा रिश्ता

- स्वामी सदानन्द सरस्वती

विद्यार्थियों के नवनिर्माण हेतु पूरा जीवन लगानेवाले आर्यजगत् के तपस्वी संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्दजी (हरिश्चन्द्र गुरुजी) को कौन नहीं जानता? स्कूल और कॉलेज के होनहार बच्चों व युवाओं का नैतिक मूल्यों का पाठ पढाकार उन्हें नेक इन्सान बनाने का पवित्र कार्य गुरुजी ने जीवनभर बडी निष्ठा व लगन से किया है। उनके इस कठोर व्रती व तपस्वी जीवन का ही परिणाम है कि उनके अनेकों शिष्य विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत हैं। गुरुजी अपनी सूक्ष्म दृष्टि से यह जान लेते थे कि कौन-सा विद्यार्थी किस गुणवृत्ति का है? यदि उस छात्र में सरलता, धार्मिकता, सत्यानुग्राहिता आदि ब्रह्मवृत्ति दिखाई पडती, तो वे उसे संस्कृत पढने हेतु गुरुकुल भेजते थे और वह भी सीधे दयानन्द मठ, दीनानगर ही!

इसी कारण गुरुजी का मठ के साथ स्नेहिल नाता बना रहा। उनके त्याग में समर्पण को हमने निकट से देखा है। बडे स्वामीजी पू.सर्वानन्दजी महाराज इनके छात्रनिर्माण के कार्यों से बहुत ही प्रभावित थे। इस कारण गुरुजी को संन्यास की दीक्षा देने हेतु वे उत्साह के साथ पंजाब से खुद ही चलकर उनके ग्राम औराद-गुंजोटी (महाराष्ट्र) पहुंचे थे। उस समय वीतराग संन्यासी सर्वानन्दजी महाराज ने गुरुजी के अद्‌भुत कार्यों को देखा और वे ही बहुत ही प्रसन्न हुए।

उन्हीं की तपस्या का फल है कि महाराष्ट्र में आर्य समाज का काम करनेवाला एक बडा शिष्यवर्ग तैयार है, जो कि सभा व आर्य समाज का नेतृत्व कर रहा है। मुझे याद है कि १९६८ से दयानन्द संस्कृत महाविद्यालय(दयानन्द मठ दीनानगर) में महाराष्ट्र के जितने भी विद्यार्थी पढने आते थे, वे सब गुरुजी की प्रेरणा से आते थे। अध्ययन के पश्चात् फिर आप उन विद्यार्थियों को सम्भालते थे। मुझे याद है एक ब्र.भरत सोलापुर का रहनेवाला मठ में पढने आया था, जो कि मेरे साथ पढता था। वह ब्र. भरत वर्ष मठ में पढा। उसने शास्त्री, आचार्य किया किन्तु एक बार भी घर छुट्टी नहीं गया। वह कहता था कि -'गुरुजी ने कहा है कि विद्वान् बनकर ही आना। फिर हम आप का स्वागत करेंगें।' भरत ने सूचना भेजी पढाई पूरी हो गई है, पिता ने और गुरुजी ने कहा, 'शास्त्री, आचार्य हो गया, तो क्या हुआ तेरे उपर मठ का कर्जा है, २ वर्ष अभी मठ की सेवा कर फिर महाराष्ट्र आना।'

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने क्या किया है, क्या आप नहीं जानते? स्वामीजी के भेजे अनेकों होनहार व बुद्धिमान छात्र मठ से पढकर गये और आर्यसमाज के लिए सेवा दे रहे हैं। आचार्य सुभाष, सोनेराव, दिनकर, राजेन्द्र, डॉ.तानाजी, डॉ.रामचन्द्र पाटिल, ताना शास्त्री आदियों को गुरुजी ने ही मठ में भेजा, जो कि आजकल अध्यापक, पुरोहित, धर्मप्रचारक आदि के रूप में देश-विदेशों में कार्य रहे हैं। और किन-किन के नाम गिनाऊं? इसी में नयनकुमारजी भी एक हैं। वे वैदिक गर्जना का सम्पादन कर रहे हैं, यह गुरुजी का ही चमत्कार है। गुरुकुलों की पुन: संस्थापना करनेवाले महात्मा मुंशीराम(स्वामी श्रद्धानन्द) भले ही क्यों न हो, किन्तु महाराष्ट्र में गुरुकुलों का आरम्भ करनेवाले गुरुजी के शिष्य आचार्य सुभाष जी भी है।

एक बार उत्तर भारत में संस्कृत भाषण की प्रतियोगिता हो रही थी, तब पंजाब विश्वविद्यालय की ओर से मठ से भी प्रतियोगिता में भाग लेने हेतु विद्यार्थी गये थे। पंजाब, हरियाणा, हिमाचल, जम्मु-कश्मीर के संस्कृत छात्र इकट्ठे थे, उनके सब को ललकारनेवाले गुरुजी की प्रेरणा से मठ में संस्कृत अध्ययन करने आये हुए छात्र सोनेराव थे। बडे-बडे विद्वान् सोनेराव की तरफ देखते हुए अवाक् रह गये। आजकल वे लन्दन में आर्यसमाज के पुरोहित प्रचारक हैं। स्वामीजी महाराज ने बडे-बडे विद्वान पैदा किये। आज महाराष्ट्र में जो भी वैदिक विद्वान हैं, उनमें अधिकतर गुरुजी के ही शिष्य है। गुरुवर स्वामी सर्वानन्दजी महाराज से संन्यास लेने के बाद। २०१३ में गुरुजी मठ में आये थे।

यह बहुत ही हर्ष की बात है कि महाराज शतायु हुए और इस उपलक्ष्य में विशेषांक प्रकाशित हो रहा है। इस उदारचेता, वीर सेनानी श्री स्वामीजी महाराज को हम मठवासी श्रद्धा से नमन करते हैं।

- अध्यक्ष, दयानन्द मठ, दीनानगर जि.गुरुदासनगर(पंजाब)

आदर्श सन्यासी - स्वामी श्रद्धानन्दजी

- डॉ.रघुवीर वेदालंकार

(पूर्व प्रोफेसर, रामजस कॉलेज, दिल्ली)

अपने भारत में ब्रह्मचारी भी ही है, ग्रहस्थ भी हैं तथा वानप्रस्थ एवं संन्यासी महात्मा भी पर्याप्त हैं, किन्तु जब बात आदर्शों की आती है, तो कुछ ही व्यक्ति ही इस कसौटी पर खरे उतरते हैं। ऐसे ही पूज्य सन्यासियों में श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्दजी (महाराष्ट्र) का नाम प्रथम पंक्ति में आता है। आप साक्षात प्रेरणापुंज हैं। हरिश्चंद्रजी (गुरुजी) के रुप में रहते हुए आप न जाने कितने व्यक्तियों के प्रेरणास्रोत रहे तथा अब भी ये शतवर्षीय सन्यासी हम सबके प्रेरणास्थान बने हुए है। ये वीतराग महात्मा हैं, जिन्होंने अपना पूरा जीवन ही लोककल्याण के लिए अर्पित किया। आपने त्यागमय गौरवपूर्ण जीवन व्यतीत किया। इसी के आधारपर आप महाराष्ट्र में '**गुरुजी**' के नाम से प्रसिद्ध हुए। यह नाम अति गौरवपूर्ण तथा श्रद्धायुक्त है, क्योंकि गुरु हो तो समाज का पथप्रदर्शन होता है।

सचमुच गुरुजी हरिश्चन्द्र ने भी आजीवन समाज का पथप्रदर्शन किया। अनेक युवक-युवतियों, व्यक्तियों के जीवन को सुधारा है। कोई भी समाज तभी आगे बढता है, तभी उन्नति करता है, जब उसे आदर्श पथप्रदर्शक प्राप्त हो। महाराष्ट्र का यह सौभाग्य रहा है कि यहां के निवासियों को, यहां के आर्यजनों को स्वामी श्रद्धानन्दजी जैसे नि:स्पृह, त्यागी, तपस्वी सन्त मिलें। स्वामीजी इस समय अपने जीवन के सौ वर्ष पूर्ण कर रहे हैं।

इस अवसर पर हम उनका अभिनन्दन करते हैं, तथा '**भूयश्च शरदः शतात्**' की कामना परमपिता से करते है। स्वामीजी चिरायु हो, दीर्घायु हो तथा जीवनपर्यन्त स्वस्थ, कार्यक्षम बने रहें, यही हमारी कामना है। डॉ.ब्रह्ममुनिजी तथा डॉ.नयनकुमारजी आदि सुयोग्य अनेक शिष्य स्वामीजी को मिले, यह सन्तोष का विषय है।

* * *

'मनुर्भव' के सन्देशवाहक- पू.गुरुजी

- डॉ.तानाजी आचार्य, लन्दन

श्रद्धेय पूज्यपाद गुरुजी का इस संसार में अवतरण ही केवल श्रेष्ठ मनुष्यों का निर्माण कर मानवता में वृद्धि के लिए हुआ है। इसे ईश्वरीय आदेश और अपने जीवन का जीवित कार्य मानकर उन्होंने संपूर्ण जीवन इस कार्य के लिए समर्पण किया है। इसी ईश्वरीय प्रेरणा के कारण देश के होनहार बालक-बालिकों को ढूँढकर उन्हें वेदज्ञान के आधारपर मानवता के संस्कार देकर श्रेष्ठ गुणसंपन्न और सामर्थ्यसंपन्न बनाने का सफल प्रयत्न उन्होंने किया है। इस मूलभूत विचार और शैली से मानवता धर्म का प्रचार और प्रसार करनेवाले महापुरुष आज भी दुर्लभ है। जब तक हम मनुष्य को श्रेष्ठ गुणसंपन्न और सामर्थ्यसंपन्न नहीं बनाऐंगें, तब तक इस संसार में सुखशान्ति, समृद्धि, विकास और कल्याण संभव नहीं है। इस मुलभूत सिद्धान्त को आधार मानकर उन्होंने कार्य किया है। यह पूज्य गुरुजी की दिव्य दृष्टि और अद्‌भुत कार्यपद्धति रही है।

इस कार्य को सम्पन्न करने में अनेकों संकट और बाधाएँ आयी, परन्तु गुरुजी कभी अपने पथ से विचलित नहीं हुए। पूज्य गुरुजी के जीवन आधार और सफलता का रहस्य है- ईश्वर के प्रति अटूट श्रद्धा, ईश्वर की न्यायव्यवस्था(कर्म सिद्धान्त) में विश्वास, निर्मल मन, पवित्र उद्देश्य, सत्य आचार-विचार में आस्था, नि:स्वार्थ सेवाभाव, प्रेम, विश्वास, सरलता, स्पष्टता, कठोर परिश्रम, वेदों की प्रामाणिकता इत्यादि। अपनी आस्था और वैदिक सिद्धान्तों के साथ उन्होंने कभी समझौता नहीं किया। इस दृष्टि से उनका नाम 'श्रद्धानन्द' भी सार्थक है ।

पूज्य गुरुजी ने हजारो विद्यार्थियों को मार्गदर्शन किया है। सभी को अपनी-अपनी श्रद्धा के अनुसार लाभ हुआ है। आशीर्वाद देनेवाले, ज्ञान बांटनेवाले महापुरुष अनेकों मिल सकते हैं, परन्तु उसका लाभ लेने के लिए श्रद्धा, पुण्य और शुभकर्मों का संचय चाहिए।

इसी अप्रैल २०१८ के प्रथम सप्ताह में पूज्य गुरुजी का एक सप्ताह का सान्निध्य सौभाग्य से प्राप्त हुआ। इस अवधि में उनको अनेक प्रश्न पूछकर उनका समाधान पा सका। उसमें **एक प्रश्न था**- 'आपका जन्म एक गरीब किसान के घरपर क्यों हुआ?' **उत्तर**-'मेरे प्रारब्ध कर्मों के कारण। मेरे माता-पिता गरीब और अशिक्षित थे। परन्तु मुझे श्रेष्ठ सामाजिक कार्य करने में वे प्रेरक थे, रुकावट नहीं। अपितु सदैव उन्होंने मेरी मदद की है।'

दूसरा प्रश्न था - 'यदि आपका जन्म एक धनाढ्य घर में होता तो?' **उत्तर** - 'मैं अपने जीवन में न्यूनतम सौ गुणा अधिक कार्य कर पाता।' (थोडा सोचकर बोले।) **तिसरा प्रश्न**- 'भावी जन्म के लिए ईश्वर से क्या प्रार्थना है ? क्या करने की इच्छा है?' **उत्तर**- 'भावी जन्म में ईश्वर मुझे इस जन्म से भी सौ गुणा अधिक शक्ति, सामर्थ्य और योग्यता दी, तो मैं अपने इसी मानवता धर्म का प्रचार इसी प्रकार सौ गुणा

अधिक कर सकुंगा।' परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि गुरुजी की वह सदिच्छा पूर्ण हो और 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' और 'मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्!' का वैदिक सपना साकार हो। पूज्य गुरुजी ने हम सभी विद्यार्थी, भारतवर्ष और विश्व का जो उपकार किया है, वह संस्मरणीय रहेगा। विश्व में आज जो कार्य उनके प्रेरणा से हो रहा है और होता रहेगा, उसके लिए यह विश्व उनका ऋणी रहेगा।

उनके कार्य का सही मूल्यांकन यदि हम कर पाते तो आज पूज्य गुरुजी को 'भारतरत्न' अथवा 'विश्वरत्न' का पुरस्कार /सम्मान मिल पाना असम्भव नहीं है। उनका यह कार्य बहुत दुर्लभ और मौलिक है। अनूठा है, अनुपम है। हम भी उन्हें समझने और उनका उचित सम्मान करने में असमर्थ रहें, ऐसा प्रतीत होता है।

गुरुजी के विषय में मेरे सुझाव -

पूज्य गुरुजी ने अपने सामाजिक जीवन के सफल सौ वर्ष पूर्ण कर सौ प्रतिशत सफलता प्राप्त की है। उन्होंने अपने जीवन का क्षण-क्षण और कण-कण केवल विश्व के कल्याण के लिए समर्पित किया। उनके प्रवचनो में और संवादों में विद्यार्थियों के लिए, समाज और राष्ट्र के लिए करुणा से उनका कण्ठ अवरुध होता है और धाय-धाय रोते हुए हमने अनेकों बार देखा है। अन्याय और अत्याचार के विरोध में ऊँचे स्वर में कठोर शब्दों का प्रयोग करते हुए अपने क्षत्रियत्व का परिचय भी वे देते रहते हैं। ब्राह्मणत्व और क्षत्रियत्व का मधुर संगम उनके व्यक्तित्व में दिखाई देता है। (शरादपि शापादपि)

पूज्य गुरुजी ने अपने अत्यल्प शिक्षण और साधनों के बिना हजारों विद्यार्थियों का जीवन निर्माण किया, परन्तु हम हजारों शिष्य मिलकर भी एक गुरुजी का कार्य कर नहीं सकते। आज हम पू.गुरुजी ने अपने जीवन की शताब्दी पूर्ण की है। यह हमारे लिए अत्यन्त सौभाग्य की बात है। हम सभी शिष्यगण उनके दीर्घ जीवन और उत्तम स्वास्थ्य के लिए ईश्वर के चरणों में प्रार्थना करते है। उनका जीवन हमारे लिए सदैव एक प्रेरणास्तम्भ है और रहेगा।

आज पूज्य गुरुजी के होते हुए हमारा क्या कर्तव्य है? और कल जब गुरुजी निर्वाण को प्राप्त करेंगें, तब हम शिष्यों का क्या कर्तव्य(उत्तरदायित्व) क्या होना चाहिए? इस पर हमें विचार करना चाहिए।

मेरे जीवन का अधिकतम समय पूज्य गुरुजी के साथ-साथ रहकर बीता है। उनके साथ 'मानवता संस्कार शिविर' के कार्य को करने का सुअवसर मुझे प्राप्त हुआ है। यह मेरे वर्तमान और भावी जीवन की प्रेरणा और पूँजी है। आज भी उनके आशीर्वाद से उनके अन्तरर्राष्ट्रीय वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के सपने को साकार करने में प्रयत्नरत हूँ। मेरे इस सारे कार्य का श्रेय पूज्य गुरुजी को देकर मैं उनके प्रति ऋषिऋण की स्वीकृति देता हूँ। पूज्य गुरुजी ही मेरे इस सामाजिक कार्य की प्रेरणा है और रहेंगें।

आज पूज्य गुरुजी अत्यन्त वृद्ध होने के कारण स्वयं अपने दैनिक कार्य और प्रवास करने में असमर्थ

हैं। कानों से सुनाई नहीं देता। हाथों में कंपन के कारण स्वयं खा-पी नहीं सकते हैं। उनका संपूर्ण जीवन होनहार छात्रों को ढूँढकर उनके जीवन निर्माण में गया है। यह कार्य करते-करते ही प्रवास में मृत्यु होने तक यह कार्य करने का उनका दृढ निश्चय है। यही उनका आनंद और जीवन की अन्तिम इच्छा है।

कुछ व्यक्तिगत सुझाव आपकी सेवा में प्रस्तुत कर रहा हूँ।

१) गुरुजी की इस वृद्धावस्थामें कोई एक शिष्य अब उनके साथ रहकर उनकी सेवा सुश्रूषा करता रहें। या उनकी व्यवस्था करें।

२) हम सभी शिष्यगण उन्हें यथावसर मिलते रहें। इससे उनको प्रसन्नता होगी। उनसे मार्गदर्शन पाते रहें।

३) पूज्य गुरुजी के अधिकतम फोटो और व्हिडिओ के द्वारा उनके जीवन की अधिकतम स्मृतियों को सुरक्षित करें।

४) गुरुजी के सभी विद्यार्थी गण परस्पर ईर्ष्या, द्वेष, हठ, दुराग्रह और के मतभेद को भूलाकर वेदप्रचार और मानवता के पुण्य कार्य को बढाना होगा। हमें अपना 'एक गुरु परिवार' करना होगा।

५) पूज्य गुरुजी के नये और पुराने विद्यार्थियों के सम्मेलन और मेलमिलाप का आयोजन करें।

६) 'मानवता संस्कार शिविरों' का आयोजन करें।

७) जो विद्यार्थी सेवानिवृत्त हैं, वे गुरुजी के मार्गदर्शन में विद्यार्थियों में कार्य करें।

८) वैदिक साहित्य और कम्प्यूटर आदि के माध्यम से युवा पीढी और अन्यों के लिए परोपकार के कार्य कर सकते हैं।

९) यह कार्य व्यक्ति और सामूहिक स्तर पर कर सकते हैं।

१०) उपलब्ध साधन सामग्री के आधार पर और व्यक्तिगत ज्ञान-अनुभव और कला के क्षेत्र में परोपकार के कार्य कर सकते हैं।

११) शुष्क सिद्धान्त दूसरों पर थोंपने के स्थान पर अपने आचरण से किया गया प्रचार अधिक प्रभावी रहेगा। अत: आचरण पर बल देवें।

१२) स्वयं किसी कारण प्रत्यक्ष शुभ कार्यों में सहयोग नहीं कर पाये, तो कम से कम शुभ कर्म करनेवालों को प्रोत्साहन तो दे ही सकते हैं। यह भी पुण्य कार्य है। जो कार्य आज पूज्य गुरुजी के होते-होते करना है, उन्हीं कार्यों के पश्चात् भी करना है।

यह कार्य निरन्तर चलता रहे इसका भरसक प्रयत्न करना होगा। इसके लिए जो भी सहयोग मेरे से संभव होगा, मैं उसे सहर्ष करता रहूँगा। शताब्दी महोत्सव पर पूज्य गुरुजी के लिए दीर्घ जीवन और उत्तम स्वास्थ्य की कामना करता हूँ।

अनेकों के जीवन निर्माता

– पं.विश्वनाथ आर्य(शास्त्री)

बडी प्रसन्नता की बात है कि हमारे आधारस्तंभ तथा अनेकों छात्रों के नवनिर्माता पूज्य गुरुजी (श्रद्धानन्दजी) इस वर्ष अपने जीवन के सौ वर्ष पूर्ण कर बडी यशस्विता के साथ उत्साहपूर्वक आगे बढ रहे है। गुरुजी ने जीवन में जो कार्य किया है, उनके उपकारों को हम भूला नहीं पायेंगें। एक आदर्श परिवार में जन्म लेकर उन्होंने बचपन से ही कडा संघर्ष किया। ब्रह्मचर्य का व्रत दृढतापूर्वक धारण कर छात्रों के जीवन निर्माण हेतु अपना सर्वस्व अर्पित किया। विद्यार्थियों को वैदिक सिद्धान्तों का अनुगामी बनाने हेतु वे सदैव घुमते रहे। छात्रों के अन्तरंग में छिपा हुये अज्ञान व अंधविश्वासों को दूर कर उसके स्थान पर श्रेष्ठ वैदिक मानवीय मूल्यों की स्थापना करने में वे काफी सफल रहे। अपने उज्ज्वल तेजस्वी जीवन के माध्यम से गुरुजी ने समाज पर अपने दैदीप्यमान व्यक्तित्व की छाप छोडी है। जैसे सूर्य अन्धःकार को दूर करके सारे विश्व को प्रकाश देता है, वैसे ही गुरुजी ने महाराष्ट्र के अनेकों छात्रों को तथा समाज को वैदिक ज्ञान से प्रकाशित किया। उनके प्रयत्नों से अनेकों को नवजीवन मिला है। गुरूजी ने न दिन देखा, न रात ! युवाओं व विद्यार्थियों के स्कूल-कॉलेज, होस्टल व घर-घर पहुंचकर उन्हें संस्कारित करते रहें। अपने शरीर की परवाह न करते हुए **'चरैवेति चरैवेति'** के सिद्धान्त के अनुसार वे जीवनभर चलते रहें। छात्र निर्माण ही एकमेव कर्म समझकर उन्होंने अपना जीवन **'छात्रेभ्यः स्वाहा'** के अनुसार अर्पित किया। इसके साथ ही राष्ट्रीय कार्यों में भी उन्होंने अपनी आहुति दी। उनके जीवनरूपी यज्ञ से अनेकों को नई दिशा मिली। उन्होंने जो कुछ किया, वह केवल विद्यार्थियों के लिए ही किया। कवि की निम्न पंक्तियों के अनुसार गुरुजी का जीवन रहा है।

नदियाँ न पिये कभी अपना जल, वृक्ष न खाये कभी अपने फल ।
तन का मन का धन का जो दूजों को दे दान करे, वो सच्चा इन्सान रे ।।

गुरुजी जिस औराद ग्राम में जन्में हैं, उसी ग्राम में मेरा जन्म हुआ है। यह मेरा बहुत बडा भाग्य हैं। उन्हीं के संस्कारों में पलकर हमें चरित्रवान्, सुविद्याविभूषित, संस्कारशील तथा सुयोग्य मानव बनने की प्रेरणा मिली। गुरुजी के सान्निध्य से ही हमारा जीवन विकसित हुआ। आज हम जो कुछ भी हैं, वह गुरुजी की ही देन है। ऐसे गुरुवर की जन्मशताब्दी पर उन्हें शत्-शत् प्रणाम!

परमात्मा से पूज्य स्वामीजी के शताधिक आयु हेतू हमारी सह्रदय कामना!

– स्मृति गार्डन, पिंपरी नगर, पुणे
मो.९८५०१०३९१९

आर्य समाज के सम्पोषक व संवर्धक - गुरुजी

- डॉ.ब्रह्ममुनि वानप्रस्थ(प्रधान,म.आ.प्र.सभा)

हम सबके प्रेरणास्त्रोत पू.स्वामी श्रद्धानन्दजी(गुरुजी) का समग्र जीवन वैदिक विचारों का अनुगामी रहा है। बचपन में आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द का अमरग्रन्थ **'सत्यार्थ प्रकाश'** उन्हें न मिलता, तो उन्हें वैदिक सत्य सिद्धान्तों का पता न चलता। समीपस्थ गुंजोटी नामक ग्राम स्वतन्त्रता से पूर्व आर्य समाज का गढ माना जाता था। हैदराबाद के प्रथम बलिदानी आर्ययोद्धा वेदप्रकाश इसी गांव के निवासी होने के कारण आर्य समाज की क्रांतिकारी गतिविधियों का केन्द्र ही गुंजोटी बना हुआ था। इसी का प्रभाव हमारे ग्राम औराद पर होना स्वाभाविक था। औराद के कई स्वतन्त्रता सेनानी हैदराबाद आन्दोलन में कूद पडे। इस कारण आर्य समाज के सिद्धान्तों की ओर गुरुजी भी आकृष्ट हो गये।

सातवी तक की पढाई करने के पश्चात् गुरुजी ने गांव में निजी विद्यालय शुरु किया। और आर्य समाज का प्रचारकार्य भी! आर्य समाज को स्वतंत्र जगह नहीं थी, फिर भी पौराणिक मन्दिर में ही यज्ञ, सत्संग, प्रवचन आदि चलता रहा।

गुरुजी अपने शिष्यों को गाँव के समीपस्थ नदी के किनारे ले जाकर उन्हें भले ही सरल और साधारण भाषा में 'मानवता' का उपदेश करते रहे हो, लेकिन उनके इन उपदेशों के पीछे आर्य समाज का ही तत्त्वज्ञान रहा है। आगे चलकर गुरुजी का कार्यक्षेत्र बढ गया । गाँव के बाहर अनेकों जिलों के स्कूल व कॉलेज तथा वसतिगृहों में पहुंचकर गुरुजी अपनी सरल व मधुर वाणीद्वारा जीवन कल्याण की बातें बताते रहें। एक ईश्वर, एक धर्म, एक मानव जाति, एक पूजा पद्धति, जातिनिर्मूलन, अंधविश्वास निवारण, देशप्रेम, समाजसेवा, राष्ट्रीय कर्तव्य आदि विषयों पर गुरुजी छात्रों को जानकारी देते और उनमें परिवर्तन लाने का प्रयास करते। गुरुजी के इन विचारों को सुनकर तथा उनके सादगीपूर्ण जीवन को देखकर अनेकों छात्र प्रभावित होते और गुरुजी के अनुयायी बनते। यह उपदेश देते हुए गुरुजी **'आर्य समाज'** का नाम नहीं लेते थे, क्योंकि प्राथमिक स्तर पर यदि आर्य समाज को वे प्रतिपादित करते, तो शायद इसे एक सम्प्रदाय या पंथ समझकर छात्र दूर हो जाने का भय गुरुजी को था। इस कारण वे आर्य समाज का नाम लेना टालते थे। जब इनमें से कुछ अच्छे व प्रगल्भ छात्र गुरुजी के पक्के शिष्य बनतें, तो उन्हें वे आर्य समाज की ओर ले आते थे। बहुत सारे छात्र आर्य समाज के विचारों व सिद्धान्तों को जानकर इस संस्था से अपना नाता जोड लेते।

आर्य समाज कोई चार दीवारी भवन नहीं है। ये तो एक ईश्वरीय शाश्वत विचार हैं। समग्र विश्व, देश-समाज व संस्कृति तथा मानवता की रक्षा करनेवाला यह एक क्रान्तिकारी आन्दोलन है। जब आर्य समाज के स्वरूप व सिद्धान्तों को न जानकर लोग केवल इसके सदस्य बनते हैं, तो वे आर्य समाजी नहीं कहलाते। जो वैदिक सिद्धान्तों पर चलता है, जिसका जीवन आर्यमय है, वही सच्चा आर्य समाजी है। अत: आर्य समाजी बनना कोई बुरी बात नहीं है। लेकिन गुरुजी स्वयं ही कभी-कभी 'आर्य समाज' के बारे में अपना अलग मत व्यक्त करते रहते हैं। उनके कुछ विद्यार्थी भी गुरुजी को आर्य समाज से अलग रखना चाहते है यह योग्य नहीं है। जब गुरुजी के विचारों व कार्यों का आधार ही आर्यसमाज है, तब आर्य समाज से नाता तोडना यह बुद्धिमत्ता नहीं है।

गुरुजी के कारण जो विद्यार्थियों का शिष्यवर्ग(समूह) बन गया है, उनके निम्नलिखित तीन विभाग बनते हैं।

१)साधारण शिष्य : पहले साधारण शिष्य वे होते है, जो कि गुरुजी के विचारों के सामान्य रूप से समझते हैं। वे सम्पर्क में आते हैं, और संस्कार शिविरों में सम्मिलित होते हैं, किन्तु कुछ वर्षों के बाद उनका गुरुजी से सम्पर्क टूट जाता है। कभी-कभी मिलने पर भविष्य में मिलने का वादा करते हैं। इनमें से कुछ गुरुजी के उपदेशों को सुनते हैं, किन्तु सिद्धान्तों के मूल तक नहीं पहुंचते। उपरी-उपरी विचारों को ग्रहण कर अपने पुराने विचारों को भी साथ लेकर चलते रहना वे गुरुजी के आसान विचारों को ग्रहण करते है। वे आर्य समाज को जानते और समझते भी नहीं है, बल्कि सरलतम जीने का प्रयास करते हैं। यदि वे आर्य समाज को समझते भी होते, तो उसे स्वीकारने में सक्षम नहीं बनते।

२) आर्य समाज को न माननेवाले शिष्य : दूसरे प्रकार के वे विद्यार्थी हैं जो कि आर्य समाज को समझकर भी जान बुझकर दूर रहना चाहते हैं। ऐसे विद्यार्थी स्वयं भी आर्य समाज से दूर रहते है और गुरुजी को भी आर्य समाज से दूर रखना चाहते हैं। गुरुजी भी कभी-कभी जोश में आकर स्वयं को आर्यसमाज से अलग बताने की कोशिश करते हैं। किन्तु यह सरासर गलत है। जब गुरुजी के विचारों व कार्य का आधार ही महर्षि दयानन्द, वेद एवं आर्य समाज है तो इनसे दूरी क्यों? फिर इनके परिवार की विचारधारा कौनसी? और भविष्य की योजना क्या होगी? इनका समाज कौन-सा होगा?

३) आर्य समाज के अनुयायी शिष्य : तीसरे प्रकार के वे विद्यार्थी हैं, जो गुरुजी के सिद्धान्तों को अच्छी तरह से जान पहचानकर उन्हें पूरी तरह से जीवन में उतारते हैं। 'गुरुजी के विचारों का मूलभूत आधार आर्य समाज ही है।' यह उन्हें पता चलनेपर, वे उसको ग्रहण करने में तत्परता दिखाते हैं और इतना ही नहीं अपने साथ अपने परिवार, शिष्य, पडोसी, मित्र आदि को भी आर्य समाज के साथ जोडते हैं। सही अर्थों में वे महर्षि दयानन्द के अनुयायी बनकर वेद के पावन सन्देश को अपने साथ अन्यों तक पहुंचाने का प्रयास करते है। विद्यार्थी ही जो कि आर्य समाज के अनुयायी है, वे ही गुरुजी के कार्यों के संवाहक है। ये ही विद्यार्थी गुरुजी के 'मानवता के पावन सन्देश' को जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास करते हैं।

पूज्य गुरुजी ने आरम्भ में अपने गांव में आर्य समाज की गतिविधियों को बढाया है। अनेकों आर्यसमाजी विद्वानों की सहाय्यता ली है। आर्य समाज के प्रान्तीय संघटन महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री पद पर रहे हैं। इनकी संन्यास दीक्षा आर्य जगत् के वीतराग संन्यासी स्वामी सर्वानन्दजी द्वारा हुई है। सभा के बीस वर्ष तक प्रधान रह चुके है। इनके नेतृत्त्व में आर्य समाज फूला-फला है। इसके लिए इनके शिष्यों ने भी सहाय्यता प्रदान की है। आर्य समाज के कार्यकर्ताओं के सहयोग से ही संस्कार शिविरों का आयोजन हुआ। साथ ही अनेकों विद्यार्थियों को आर्य समाज के गुरुकुलों में पढने हेतु उन्होंने भेजा और वे विद्वान् बनकर देश-विदेश में प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। इतना ही नहीं स्वामीजी का सम्मान अनेकों आर्य संस्थाओं ने किया है। सार्वदेशिक सभा, आमसभा गुरुकुल तथा अन्य संस्थाओं ने पुरस्कार भी दिये। इतना सब कुछ होते हुए भी कई लोग गुरुजी(स्वामीजी) को 'आर्य समाज' से अलग मानकर स्वतन्त्र ट्रस्ट या संस्था द्वारा कार्य कराना चाहते है, यह उचित नहीं है। इसमें न उनका भला है, न स्वामीजी का ! इसलिए गुरुजी के शिष्यों को आर्य समाज के साथ जुडकर काम करना चाहिए। जिससे की उनका, उनके परिवार का तथा समाज का सर्वहित कल्याण हो सकता है। स्वामीजी के शताब्दी अवसर पर गुरुजी के शिष्य आर्य समाज के विश्वव्यापी विचारों को अपने जीवन का अंग बनायेंगे, यही अपेक्षा! पूज्य गुरुजी के शताब्दी अवसर पर उनका अभीष्ट चिन्तन एवं सुस्वास्थ्य व शताधिक आयु की मंगल कामना...!

विद्यार्थियों के पथप्रदर्शक

- सुधाकर शास्त्री, पुणे

पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द पिछले ४० वर्षों से आर्य समाज, वैदिक सिद्धांत के रक्षा हेतु मनसा-वाचा-कर्मणा समर्पित है। उनका तपस्वी जीवन हम सभी के लिए प्रेरणादायी है। उन्होंने विद्यार्थियों के लिए मानवता संस्कार शिविर जो आरंभ किया। उन शिविरों मे से सैंकडों विद्यार्थी आर्यसमाजी बनें। स्वामीजी को परमात्मा ने वह कला दी है, जो विद्यार्थी एक बार उनके संपर्क में आया, मानों वह कुंदन बनकर चमक ही गया! मुझे २००१ से २०१६ तक सभा में महोपदेशक पद पर काम करने का अवसर मिला। लगभग १०० आर्य समाजें तथा महाराष्ट्र के सभी स्कूल, कॉलेजों में मानवता संस्कार शिविर में जाने का मौका मिला। हर गाँव, प्रत्येक स्कूल में स्वामीजी का शिष्य अवश्य मिल जाता। इनके जीवन का मूल उद्देश्य छात्र, युवा व देश का भविष्य है। आज भारत को चरित्रवान् व संस्कारशील युवकों की आवश्यकता है, जिसकी कवि ने निम्न पंक्तियों में अपेक्षा व्यक्त की है-

जिनके सीने में ही रोशन देशभक्ति के चिराग।
दिल तो दिल, दिल की तरह जिनके धडकते हो दिमाग।

पूज्य स्वामीजी जीवनभर छात्रों को उपदेश देने तथा आदेश युवक-युवतियों और विद्यार्थियों को बलवान, चरित्रवान बनाने में व्यतीत किया, जिसके कारण सैंकडों शिष्यों ने अंतर्जातीय विवाह करके समाज में फैली जातिव्यवस्था को समाप्त करने में योगदान दिया। स्वामीजी की प्रेरणा से आंतरजातीय विवाह करनेवाले शिष्यों की लम्बी श्रृंखला बन जाती है, जिसमें मैं भी एक हूँ।

सर्वश्री प्रा.अर्जुनराव सोमवंशी (उदगीर), राजेंद्रजी दिवे (लातूर), डॉ.आचार्य तानाजीराव (लंदन), पं.विश्वनाथजी(पुणे), पं.कालिदास गुंडाळे, अरुण मदनसुरे(लातूर), आचार्य नयनकुमारजी, पूज्य डॉ.ब्रह्ममुनिजी (परली), डॉ.विजय लिंबाळकर-(निलंगा), ओमप्रकाश पाखरसांगवे (निलंगा) आदि-आदि ऐसे अनेकों शिष्य हैं, जिन्होंने जातिप्रथा की विषैली बेल को जड से उखाड फेंकने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है। वेद के 'मनुर्भव' सन्देश के अनुसार गुरुजी के शिष्य भविष्य में मानवता का पथ अनुसरण करते हुए वैदिक धर्म व आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में पूरी शक्ति के साथ संलग्न होवें, तभी गुरुजी का जीवन और अधिक सार्थक बनेगा।

वेद के अनुसार स्वामीजी १०० वर्ष पूर्ण करने जा रहे हैं। उनके अच्छे कार्यों का फल है कि, परमात्मा ने उन्हें दीर्घ जीवन दिया है। कई बार अपने प्रवचनों में स्वामीजी कहते रहे हैं- 'मुझे १२० वर्ष जीना है।' उनके हृदय में इतना बडा आत्मविश्वास है। ईश्वर उनकी यह इच्छा पूर्ण करें। स्वामीजी तन व मन से स्वस्थ रहें, यही कामना। स्वामीजी पर यह पंक्ति लागू होती है-

तन से सेवा कीजिए, मन से भले विचार। धन से इस संसार में करीए पर उपकार ।।

***

गुरुजी-वैदिक धर्म के सिपाही

- डॉ.व्यंकट कोलपुके, लातूर

यद्यपि गुरुजी का कोई संसार नही है, लेकिन उनका बसेरा आर्यसमाजी परिवार में ही रहता है। आर्यसमाज की मातृभाषा हिंदी है । इतना ही बल्कि हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने में और संस्कृत का प्रसार-प्रचार करने में आर्य समाज का बडा योगदान रहा है। इसलिए उचित होगा कि मैं अपनी बात उसी माध्यम में करुँ ! अखंड हिन्दुस्थान के भिन्न-भिन्न भाषिक प्रांतों को जोडने में हिंदी भाषा की भूमिका अहं रही है। इसका बडा श्रेय मैं आर्यसमाज को देना चाहुंगा।

१९७१ में मै मैट्रिक उत्तीर्ण हुआ। अच्छे अंकों से सफलता मिली । तब ॲड.पांडुरंग खरेजी के माध्यम से मैं गुरुजी के संपर्क में आया । हमारी पहली मुलाकात कब और कैसे हुई, इसका मुझे स्मरण नहीं है । लेकिन दयानंद कॉलेज लातूर में आयोजित आर्य समाज के सम्मेलन में मैं सम्मिलित हो गया । तब उसमें स्वामी अग्निवेशजी और इंद्रवेशजी जो कि बडे जोशीले भाषण दिया करते थे, उपस्थित थे। मेरे युवा ह्रदयपर उनका बडा प्रभाव पडा। गुरुजीने मुझे पास बिठाया, बडे प्यार से पूछताछ की और अपनी डायरी में पता लिख लिया। अब मैं गुरुजी के शिष्यगणों में पंजीकृत हुआ। गुरुजी अक्सर बुद्धिमान बच्चों पर जादा ध्यान देते थे। स्वभावत: मैं उनका प्यार पाने का जादा हकदार हो गया। इस बातपर मैं कईं बार सोचता रहा कि, परीक्षा में गुणवत्ता हासील करनेवाले करिअर में तो आगे निकल जाते हैं, मगर उनकी रुचि सांसारिक सफलता के उपर नहीं उठ पाती। मैने यह भी देखा कि साधारण बुद्धि के लडके यदि लगन व श्रद्धा से काम से जुड जाते हैं, तो निश्चय ही परिणाम हाथ में आते हैं। उन्हें अपनी बुद्धिमत्ता और पद का अहंकार भी नहीं होता। छोटे-छोटे काम करने में भी वे तत्पर रहते हैं।

अस्तित्व में जब किसी चीज की जरुरत होती है, तब उसकी पूर्ति करने के लिए एक हवा पैदा होती है। कोई दृष्टा पुरुष उस हवा की रुख को पहचानता है और उसकी बागडोर अपने हाथ में लेता है। उन्नीसवी शताब्दी में हिन्दुस्थान की सोई हुई जनता को स्वामी दयानंद ने झकझोर कर दिया। सभी धर्मपंडितों की पाखण्डपूर्ण अविद्या को जडसे उखाड फेंका। वैदिक धर्म की मूल शुद्ध रूप उन्होंने बताया और धर्म को राष्ट्र के निर्माण के साथ सीधा जोड दिया। पू.हरिश्चंद्र गुरुजी उस बडे आंदोलन के छोटे सिपाही रहे। हमें ऐसे योद्धापर गर्व होना ही चाहिए।

कईं लोग अक्सर हठवादी और कर्मठ पाये जाते हैं। सिद्धांत को शस्त्र बनाकर कठोर प्रहार करने में वे कुशल होते हैं। इसलिए वे संगठन बनाने में पीछे रह जाते हैं। लेकिन गुरुजी बहुत बार परिस्थिति के साथ समझौता कर लेते है। मैं उनकी यह विशेष योग्यता मानता हूँ। क्योंकि जिसकी दृष्टि बहुत दूर तक देख सकती हैं, वे सत्य के उपर शुभ को बिठाते हैं, शास्त्र के ऊपर प्यार को रखते हैं । हमें इसी समाज में काम करना हैं। अगर सभी गलत हैं, तो तुम किसको समझाओगे? अगर करुणा न होगी, तो कौन सुनेगा? शायद आज कोई समझ न सके। हो सकता है, कल फिरसे सोचेगा। फिर हम प्रेम करने में कंजुष क्यों होवे? यही गुरुजी

की धारणा रही है। वैसे गुरुजी आर्य समाज के प्रधान बने रहे। उस पद की जिम्मेदारी भी निभाई। लेकिन उनकी आत्मा **'अकेले चलो'** की ही रही है। उनका मूल उद्देश्य तो छात्रों के नवनिर्माण का ही रहा है। उनका संपर्क करने में गुरुजी इतनी कठिनाईयाँ उठाते है कि जिसका कोई हिसाब नहीं। दूर देहात में रहनेवाले बच्चों को मिलने हेतु वे कोसों तक पैदल चले जाते हैं। छात्रावास गुरुजी का कार्यक्षेत्र रहा है। जब भी वे होस्टल पर आते, कुछ फल लेकर आते थे । उनकी थैली में हमेशा किताबें रहती थी। पढने के लिए वे हमे देते थे और हम शायद ही उसे लौटा देते। बच्चों को गुरुजी पहले नाम से पुकारते है। जिससे हार्दिक संबंध बनता है, अपनेपन का भाव नजर आ जाता है।

विद्यार्थियों को पत्र लिखने की गुरुजी की पुरानी आदत है। उनकी मराठी लीपी और अभिव्यक्ति पर मैं बहुत प्रेम करता हूं। उनके पत्र मैनें कई सालों तक सम्भाल रखे थे। उसे बार-बार पढने में दिल भर जाता था। इतने सुंदर अक्षर बहुत कम इन्सान के हाथ से निकलते है। हमारे तरफ देखने की उनकी दृष्टि बहुत उंची रहती थी। हम उनकी अपेक्षाएं कभी पूरा कर न पायेंगे, इसका मुझे अफसोस भी होता था। सिर्फ उंची बाते करने से क्या होता है ? हम न जाति के बाहर पडे, न योग में उपर चढे। न संन्यास लिया, न वैदिक परंपरा का पालन किया। जिंदगी की आपाधापी में ऊर्जा खोती गई। सार का बोझ ढोने मे उम्र बीत गई।

गुरुजी ने मानव धर्म के बीज बचपन में जो बोया था, वो नष्ट नहीं हुआ। देरअबेर वो अंकुरित हुआ। चालीस साल के बाद फिर धर्म के रास्ते पर निकल पडा। लेकिन अब रास्ते अलग हुये थे, मगर प्रेरणा उन्ही की थी। अब मैं 'ओशो रजनीश' से प्यार करने लगा, जो कि गुरुजी को 'ओशो' कतई पसंद नही थे। इस उम्र में उनके साथ विवाद करना मेरे लिए पीडादायी था। लेकिन इससे मेरा उनके प्रति प्यार कम नही हुआ। वे क्या समझते होंगें, मुझे पता नहीं। लेकिन मैंने गुरुजी के आँखो में कभी नफरत नहीं देखी। वे नाराज जरुर हो जाते, कभी गुस्सा भी करते, संपर्क छोड देते। मगर क्रोध कबतक टिका रहता? देरअबेर पिघलही जाता था। गुरुजी का ह्दय माँ का ह्दय है।

कई बातों में गुरुजी प्रशंसा के अधिकारी है। वैदिक धर्म के प्रति उनकी श्रद्धा सौ प्रतिशत सच्ची है। अविवाहित रहकर जिंदगी गुजारना आसान बात नहीं है, लेकिन उन्होंने इस बात का की जिक्र नहीं किया। संसार प्रलोभनों से भरा है। कहीं धन का तो कहीं दुकान का, कहीं पद का तो कहीं प्रतिष्ठा का! इन सभी का आकर्षण मनुष्य को पतीत करने में कामयाब रहता है। लेकिन गुरुजी उनके संकल्प से न हारे, न गिरे। वैसे गुरुजी न संस्कृत जानते हैं, न शास्त्रार्थ करते है, मग उनकी अविचल निष्ठा के सामने विद्वान् पंडित भी शान्त हो जाते हैं। आर्य समाज में पंडितो की कभी कमी नही रही थी, लेकिन रुखी सूखी रोटी खाकर दिनरात पदयात्रा करनेवाला कौन शास्त्री मिलेगा? यही गुरुजी का बलस्थान है। उनके चरणों पर सीर झुकाने में हमे गर्व होता है। अभागा होगा, वह दिन जब मस्तक झुकाने के लिए उनके पैर उपलब्ध नहीं होंगें। लेकिन मुझे विश्वास है कि, पृथ्वी इतनी नपुसक कभी नहीं होगी, जब धर्म से आस्था खो जाएगी और परमात्मा की खोज बंद होगी। पूज्य गुरुजी के शताब्दी पर उन्हें श्रद्धापूर्वक नमन!

* * *

कृतात्मा 'स्वामी श्रद्धानन्दजी'

- सुरेश गीर 'सागर' (लातूर)

जीवन के पथपर चलते-चलते जब मैं पलटकर देखता हूँ, तो मुझपर हुई ईश्वर की अपार कृपा के दर्शन होते हैं। ईश्वरीय इसी कृपा को यदि मैं मानवरूप में देखना चाहूँ, तो मेरी आँखों के सामने कृतात्मा **'स्वामी श्रद्धानन्दजी'**(हरिश्चन्द्र गुरुजी) खडे दिखाई देते हैं।

सन् १९७५-७६ की बात है। मेरी किशोर अवस्था में मैं आर्य समाज गांधी चौक, लातूर के समीप रहा करता था। मेरे चचेरे भाई दिवंगत 'महादेवजी शास्त्री' गुरुकुल से लौटे थे। उन्हीं के साथ-साथ मैं आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग में जाता रहता था। धीरे-धीरे वैदिक विचारों में मेरी रूचि बढने लगी। वैदिक विद्वानों के भाषण सुनने के लिए मेरे कान लालायित रहते, तो मेरा मन आर्य समाज के वार्षिक उत्सव की उत्कंठा से प्रतीक्षा किया करता। जिन आर्यसमाजी विद्वानों से मैं प्रभावित रहा, उनमें विशेष रूप से **'स्वामी श्रद्धानन्दजी'**(हरिश्चन्द्र गुरुजी) भी एक रहे ।

मेरे पिताजी की अकाल मृत्यु के दु:ख से मैं अभी उभरा भी नहीं था, तो माताजी के कैन्सरग्रस्त होने का पता लगा। माताजी को कैन्सर तीसरे स्तर का होने के कारण डॉक्टरों ने उनकी आयु केवल छह महिने ही बची होने के संकेत दिये। पिताजी के आकस्मिक देहावसान से चिंतीत माताजी की चिंता हम बच्चों के भविष्य को लेकर और भी गहराती नजर आने लगी। उनकी चिंता में मेरी नोकरी के साथ मेरे विवाह का होना भी अंतर्भुत था। नोकरी के लिए मेरी शिक्षा अभी अधूरी थी, परंतु आयु की दृष्टि से मैं विवाह योग्य हुआ था। तो माताजी का एक सपना पूर्ण करने हेतु आर्यसमाज की अन्तर्जातीय विवाहसंस्था के पदाधिकारियों से मिलने के मुझे ईश्वरीय संकेत हुए। इसी प्रक्रिया कें अंतर्गत 'गुरुजी' से मेरा प्रत्यक्ष वार्तालाप हुआ जो कि कुछ इस तरह का था-

गुरूजी :- तेरा नाम क्या है?
मैं :- सुरेश श्यामगीर गीर ।
गुरुजी :- आर्य समाज में आते हो क्या?
मैं :- हाँ जी! मैं मेरे चचेरे भाई महादेव शास्त्री के साथ आया करता हूँ।
गुरुजी :- महादेव शास्त्री के भाई हो क्या तुम?बहुत अच्छा! पढाई कहाँ तक हुई है तुम्हारी?
मैं :- एम.ए.हिन्दी के द्वितीय वर्ष में पढ रहा हूँ।
गुरुजी :- अच्छा! तुम्हारी लडकी के बारे में क्या अपेक्षा है? मतलब तुम्हें पत्नी कैसी चाहिए?
मैं :- अनुरूप होनी चाहिए।
गुरुजी :- आर्य समाज में जाती-पाती को मान्यता नहीं है, यह तुम्हें पता ही होगा?
मैं :- हाँ ! पता है।
गुरुजी :- अब तुम एम.ए. सिखे हो, तब कम पढी-लिखी पत्नी स्वीकार हैं तुम्हें?

मैं :- (चुपचाप)

गुरुजी :- यह देखो सुरेश! मेरा स्वभाव बहुत ही स्पष्ट है। कुछ छिपाकर रखने की मेरी आदत नही है। माणिकराव भोसले एवं किशनराव राऊत ने तुम्हारी स्थिति के बारे में मुझे सबकुछ बता दिया है। इसलिए मैं तुम्हें स्पष्ट कह देता हूँ, लडकी बहुत कुछ पढी-लिखी नहीं है। कर्नाटक के साधारण स्कूल में दुसरी-तिसरी तक ही पढी-लिखी होगी। मराठी सीखी नहीं है। सुंदरता से साधारण होने पर भी वह स्वभाव से बहुत अच्छी है। माणिकराव भोसले तुम्हें लडकी के घर ले जायेंगे। देखलो... और सुनो... मेरी बात मानते हो तो तुम लडकी को पसन्द करो। तेरा कल्याण ही होगा।

मैं :- (चुपचाप)

गुरुजी :- जो सच है, वही मैं बता रहा हूँ।

गुरुजी ने कहा वो सत्य सिद्ध हुआ । गुरुजी और मेरे बीच हुए उपरी वार्तालाप में मुझे पूछे गए गुरुजी के प्रश्नोंपर यदि हम चिंतन करते हैं और प्रश्नों के उद्देश्यों को समझ पाते हैं, तो समझ लेना, हमने गुरुजी के व्यक्तित्त्व को समझ लिया। जहां तक मुझे ज्ञात है, 'हरिश्चंद्र गुरुजी' किसी गुरुकुल के स्नातक नही रहें, न ही वे संस्कृत के प्रकांड पण्डित रहें। परंतु अपनी आकलन शक्ति के बलपर उन्होंने वैदिक धर्म को यथावत् समझा है। आर्यसमाज के मूलभूत महानतम उद्देश्य **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** को ही साकार करने हेतु गुरुजी ने आजन्म ब्रह्मचारी रहने का संकल्प किया और उसे जीवनभर निभाया भी।

ठिक इसी प्रकार जिनकी उम्र को ढलानपर है, उन्हें उपदेश करने की अपेक्षा विद्यार्थियों को वैदिक धर्म से, वैदिक आचरण से अवगत कराना अधिक फलदायी हो, इसी लक्ष्य को अपने जीवन के मध्य में रखकर अपना अधिकार व सर्वस्व विद्यार्थियों के लिए व्यतीत किया। सफल जीवन जीने के लिए शारीरिक दृष्टि से सशक्त, समर्थ होने की आवश्यकता समझाते रहते। अच्छे विद्यार्थियों की अन्वेषण प्रक्रिया में समय निकालकर विद्यालयों से संपर्क किया करते। होनहार विद्यार्थियों से निरंतर संपर्क बनाए रखते । होस्टल हो या विद्यार्थियों के घर! बिना बुलाए वे जाया करते थे। उनके साथ मार्गदर्शन हेतु समय बिताया करते और अपना पक्का शिष्य बना लेते। उनके ऐसे कई शिष्य आज वैदिक धर्म के कट्टर अनुयायी है।

गुरुजी जितने सीधे-सरल हैं उतने ही वे वास्तविकता से जुडे रहते है। प्राप्त परिस्थितियों में समाज सुधार हेतु जो भी अपनी क्षमतानुसार बन पडा, उसे पूर्णत्व प्रदान करनेवाले ही समाजसुधारक कहलाते हैं। शतायु पार करनेवाले कृतात्मा की शारीरिक क्षमता जरूर घटी है, परंतु समाजसुधार करने की ऊर्जा आज भी उतनी ही ऊष्म है। गुरुजी की इस पावन ऊष्म ऊर्जा को मेरा प्रणाम।

आर्य जगत् के तपस्वी, सन्यासी अनेकों विद्यार्थियों को वैदिक विचारों का अमृतपान करारकर उनके जीवनोद्यान को सुरभित करनेवाले कृतात्मा पू. स्वामी श्रद्धानन्दजी को ईश्वर और दीर्घायु प्रदान करें। १०० वे जन्मदिवस पर हार्दिक अभिनन्दन एवं शुभकामनाएँ।

- 'इंदिरा निवास', केशवनगर, लातूर-मो.९४०५००६२७१

पूज्य गुरुजी के सानिध्य में

- डॉ.बी.एम. म्हेत्रे(हैदराबाद)

मैं प्रथम बार गुरुजी को १९७५ में मिला। तब मैं ११ वी कक्षा में चन्नबसवेश्वर कॉलेज भालकी में पढ रहा था। हमारे क्लास के ३ विद्यार्थियों को गुरुजी मिले थे। मैं और दो मेरे साथी। हमारे प्राध्यापक श्री शेषराव वांजेरखेडे जी ने हमारा परिचय गुरुजी से कराया था। उसी वर्ष में मैने 'सत्यार्थ प्रकाश' पुस्तक पढी। पढते समय जो शंकाएं मुझे आयी, उन सारी शंकाओं का श्री वांजरखेडे सर ने समाधान किया।

उसके बाद जब मैं इंजिनिअरींग की पढाई के लिए गुलबर्गा गया, तब गुरुजी मुझे मिलने कॉलेज के होस्टल पर नियमित आने लगे। मैं गुलबर्गा में ५-६ वर्ष रहा और वही पर ही गुरुजी के साथ ज्यादा जुड गया। गुरुजी हर २-३ महिने में एक बार तो मुझे मिलने आते थे। हर बार मेरे लिए नई-नई पुस्तकें लाते थे। उन दिनों में पोस्टकार्ड का प्रचलन था। गुरुजी के पत्र भी आते थे। १९७८ में लातूर में मानवता संस्कार शिविर हुआ। गुरुजी ने मुझे शिविर में बुलाया था और मैं गया भी। शिविर में एक सर्वांगिण दृष्टि मिली। उस शिविर में परीक्षा भी हुई। उसमें गुरुजी ने मौखिक परीक्षा ली। उन्होंने मुझे पूछा था कि शिविर में आकर क्या लाभ हुआ? मेरा उत्तर था- 'जो मैं पढा था और सोचता था, उस सबका सशक्तिकरण हुआ और बहुत अच्छा लगा।'

एक बार की घटना है। गुरुजी गुलबर्गा आये थे। प्रोफेसर हरिश्चंद्र रेणापुरकर (संस्कृत विभाग) के निवास पर मुझे बुलाया गया। तो मैं गुरुजी से मिलने गया । गुरुजी मेरे लिए कुछ पुस्तकें लाये थे और वे पुस्तक मैने ले ली। इस पर प्रोफेसर रेणापुरकर ने कहा- गुरुजी, इंजिनिअरींग की पढाई बहुत कठिन होती है और यदि यह विद्यार्थी ऐसी पुस्तकें पढता रहा, तो उसके उपर अध्ययन बुरा असर पढ सकता है। उसका उत्तर गुरुजी देने से पहले मैंने दिया - 'इन पुस्तकों को पढने से मुझे बहुत उत्साह आता है और इससे मुझे अच्छा अध्ययन करने की ऊर्जा मिलती है।'

मुझे जीवन में पिताजी और दादाजी का प्रेम और वात्सल्य नहीं मिला। इसकी पूर्ति गुरुजी ने कर दी। गुरुजी के कारण मुझे जीवन में एक दिशा और नव दृष्टि मिली। विशेषकर सामाजिक और राष्ट्रीय विचार दृष्टि उन्हीं के कारण मिली। आध्यात्मिक जीवन की कुंजी भी इन्हीं से मिली। इसे मैं मेरा अहोभाग्य समझता हूँ।

पिछले २५-३० वर्षों से मैं हैदराबाद में निवास करता हूँ। गुरुजी हमारे घर आते हैं। वे जब कभी भी आते हैं, घर पर एक उत्सव जैसा वातावरण रहता है। हमें बहुत अच्छा लगता है। गुरुजी का आदेश था कि मैं वैज्ञानिकों में वेदों का प्रचार करूं! उनकी इस इच्छा पर मैं इस काम को तन-मन-धन से कर रहा हूँ। मैं पिछले ६-७ वर्षो से प्रोफेसर हूँ। एम.टेक और पीएच.डी. के विद्यार्थियों को पढाता हूँ और मार्गदर्शन करता हूँ। वैदिक दृष्टि ही मानवता की दृष्टि है और होनी चाहिए। इसी दिशा में मेरा प्रयास है। पूज्य गुरुजी के जन्मशताब्दी पर उनके सुस्वास्थ्य की कामना करते हुए सभी शिष्यगणों से (गुरुबन्धुओं) से अपील करता हूँ कि इस अवसर पर हम सब गुरुजी के बताये हुए वैदिक सिद्धान्तों तक दृढता के साथ चले और संगठित होकर वैदिक धर्म के प्रचार व प्रसार में संलग्न होवें!

कृपा गुरुजी की

- डॉ.रामचन्द्र पाटील(शास्त्री-लन्दन)

मैं और हमारा पूरा परिवार बहुत ही सौभाग्यशाली है कि पूज्य गुरुजी का सान्निध्य हमें सदैव प्राप्त हो रहा है। श्रद्धेय गुरुजी का जन्मशताब्दी समारोह महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के अंतर्गत हो रहा है। इस हर्षोल्लासमय शताब्दी महोत्सव को भावी पीढी के लिए एक स्वर्णिम अध्याय के रुप में देखा जाएगा।

बाल्यावस्था में जब मैं थोडा-थोडा समझने लगा, तब से ही मेरे कदम पूज्य गुरुजी के घर मेरेपिताश्री विज्ञानमुनिजी के साथ चलने लगे थे। मुझे विशेष रुप से याद हैं कि जब भी कोई त्यौहार होता था। मैं, भाई राजेन्द्र, शरद और बहन प्रेमलता के हाथों बडी थाली में भोजन सजाकर हमारी माता सौभाग्यवती शकुंतलादेवी अन्नाराव पाटील देती थी। गुरुजी घर में हो या न हो, हम उनकी माताजी स्व.प्रयागबाई रामराव सूर्यवंशी को देकर आते थे। उसके पश्चात् ही हमें भोजन मिलता था। मैं कभी मंदिर में पूजा की थाली को लेकर नहीं गया। पूज्य गुरुजी का ही स्मरण है। गुरुजी के माताजी को मेरी माँ के हाथ का भोजन प्रिय था। वह कभी-कभी हमें कहती थी-'तुम्हारी माँ को बोलो... यह पदार्थ बनाकर दे दो!' गुरुजी की माताजी को साफ-सफाई बहुत पसंद थी। घर में जाना हो, तो पैर धोकर ही प्रवेश मिलता था।

स्वाभाविक रूप से जन्मदात्री गुरु माता प्रयागबाई का स्मरण आता है। वह दयालु, सभ्य, उदार हृदयवाली माँ धन्य है, जिसने विश्व को महान ऋषि दिया, हम ऋणी है । गुरुजी के अनुज स्वर्गीय गुलचंदजी एवं श्रीमती निर्मला सूर्यवंशी एवं परिवार का योगदान अविस्मरणीय हैं।

श्रद्धेय गुरुजी के जीवन में क्रांतिकारी विचारधारा उत्पन्न करनेवाला ग्रंथ **'सत्यार्थ प्रकाश'** है। इसकी प्राप्ति हमारे नाना स्वर्गीय आनंदप्पा गिरप्पा पालापुरे व हमारी नानी श्रीमती रत्नाबाई आनंदप्पा पालापुरे(नानी लगभग १०० वर्ष की है) के द्वारा हुई। एक दिन बैलगाडी में सामान भरते समय ऋषि दयानन्द का यह अमर ग्रंथ **'सत्यार्थ प्रकाश'** गीर गया और पूज्य गुरुजी के हाथ लग गया। स्वाध्याय से गुरुजी के जीवन में प्रश्न उत्पन्न होने लग गये। मैं इस संसार में क्यों आया हूँ? क्या करना है ? जीवन का उद्देश्य क्या है? आदि-आदि प्रश्न आने लगे, उत्पन्न ध्यान की अवस्था में परमेश्वर से जागति हुई। और उसी वाणी को आत्मसात करके हजारो लोगों के बीच में परमेश्वर की शक्ति और सामर्थ्य, मनुर्भव के माध्यम से स्थापित कर रहे हैं।

हमारे पूरे परिवार को इस बात का विशेष आनन्द है कि हमारे पिताश्री के दीक्षा गुरु तथा मेरे शिक्षा गुरु स्वामी सर्वानन्दजी सरस्वती गुरुजी को सन्यास के समय औराद पधारे थे, तब उन्होंने हमारे घर पधारकर सब को आशीर्वाद दिया था। काषाय वस्त्र में गुरुजी का व्यक्तित्व अब और जब गुरुजी श्वेत वस्त्रों में थे, तब भी उनका व्यक्तित्त्व बहुत ही प्रभावशाली था। श्वेत धोती, बिना बाहुओंवाला कुर्ता यह उनकी वेषभूषा और हाथ में सफेद थैली व पैरों में चप्पल... तेजी से चलना, व्यवस्थित दिनचर्या ये बातें सबको सुहाती थी। घर में जब भी देखते थे, तो वे स्वाध्याय में तल्लीन रहते थे। तोकोई मिलने वाले भी रहते थे।

प्रतिदिन मेरे पिताजी और चाचाजी गुणवंतराव पाटील ये दोनों ही गुरुजी के पास जाते थे और उनके घर में आये छात्र, विद्वान्, संन्यासी आदि को घर लाकर उनका आतिथ्य करते! उसी का परिणाम है कि हमारे घर का सात्विक वातावरण है। मैं गुरुकुल में डॉक्टर तानाजी आचार्य (लंदन निवासी) के नाम से गया था, जो बचपन में हमसे बहुत प्यार करते थे। हमें तानाजी 'गुरुजी' बुलाते थे। आज मैं लंदन में ३०.०३.१९९८ से अब तक उनके सान्निध्य में रहकर वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार में कार्यरत हूँ।

रक्षाबंधन और नारलीपूर्णिमा २३ अगस्त १९८३ मंगलवार के दिन पू.हरिश्चन्द्र गुरुजी ने मुझे और उनके भांजे (स्वर्गीय)नरेंद्र वसंतराव काले को पू.श्रीशिवमुनिजी (शिवराम जिंदम) के गुरुकुल वैदिक सेवा आश्रम वाजेगांव नांदेड में प्रवेश कराया। मुनिजी की पत्नी माता राधाबाई शिवराम जिंदम भी इस वर्ष सौ वर्ष पूर्ण कर रही हैं। उन्हें हार्दिक शुभकामनायें।

जब हम गुरुजी के साथ गुरुकुल नांदेड के लिए निकले थे, तब लातूर आर्य समाज में रुके। गुरुजी किसी विद्यार्थी को मिलने के लिए गए थे, मैं और उनके भांजे नरेन्द्र ने बिना बताए पोस्ट ऑफिस जाकर पत्र खरीदें। नांदेड में बस से उतरने लगे, तो कंडक्टर ने कहा २५ पैसे दो और एक रुपया लो! गुरुजी को पता था कि पैसे हमारे पास नहीं थे। ७५ पैसे कंडक्टर ने नहीं दिए। तब गुरुजी ने नाराज होकर दोनों को डांट लगाई और बताया कि ७५ पैसे मैं कितने ही पोस्ट कार्ड आते हैं और मैं कितने ही विद्यार्थियों से संपर्क करता। इस घटना को हमेशा स्मरण करता हूँ, क्योंकि उस समय १५ पैसे मैं एक पोस्टकार्ड आता था।

हमारे पिताश्री और चाचाजी हमेशा ही गुरुजी का मार्गदर्शन लेते रहें। हमारा परिवार व्यापार, खेती, ट्रान्सपोर्ट दुकान आदि में व्यस्त था। गुरुजी जैसे मार्गदर्शन देते हैं, वैसे ही व्यापार करते रहें। 'अपरिग्रह' अर्थात् आवश्यकता से अधिक धनसंपत्ति अर्जित नहीं की। गुरुजी का यह आदेश उन्हें शिरोधार्य था। मैंने अभी तक पिताजी को चाय या कॉफी पीते नहीं देखा। हमारे परिवार पर वैदिक सिद्धान्तों का प्रभाव है, अत: परिवार के अनेक सदस्य संस्कृत और वैदिक संस्कृति के प्रचार व प्रसार में हैं।

पूज्य गुरुजी के आशीर्वाद से मैं अंतर्जातीय विवाह करना चाहता था। गुरुजी ने उच्च सुशिक्षित घर के तीन परिवार से परिचय कराया और सब परिवार के सदस्यों की सहमति मिली, किन्तु मेरी पू.माताजी शकुन्तला देवी तीन दिन तक निराहार सोती रही। हम सब घर में अस्वस्थ रहें और अन्त में माँ की बात मानी गयी और अंतर्जातीय विवाह नहीं हुआ। बाद में पू.गुरुजी मेरे सजातीय रिश्तें के समय साथ रहे और (स्वर्गीय) प्रोफेसर बस्वराज विश्वनाथ पाटिल उदगीर की कन्या डॉक्टर मीनाक्षी पाटिल से विवाह हुआ, जो कि वैदिक सिद्धान्तों पर चलते हुए मेरा पूरा साथ निभाती है।

पूज्य गुरुजी(स्वामीजी) का हम सबपर ऐसा ही स्नेहाशीष बना रहे, ताकि हम वेदपथ पर चलने में पूरी तरह से और भी अधिक सक्षम हो सकेंगें। परमात्मा पूज्य गुरुजी को शताधिक आयु प्रदान करें व वे अन्ततक सुदृढ रहे, जिससे कि हमारा, आर्य जाति तथा युवकों का मार्गदर्शन होता रहे।

***

ध्येयवादी गुरुजी

- प्रो.ओमप्रकाश होलीकर(विद्यालंकार)

बात १९७० की है। मैं लातूर के दयानन्द महाविद्यालय में प्राध्यापक पद पर नियुक्त हुआ। कुछ ही दिनों में एक कृष्णवर्णीय, सुदृढ शरीरवाला, कंधे पर झोला लटकाए, अपनी ही मस्ती में निमग्न, विद्यार्थियों के झुंड में आकर्षक व्यक्ति को देखने का अवसर मिला। पूछने पर पता चला कि यह व्यक्ति ग्रामीण क्षेत्र का है। बहुत पढा लिखा हुआ न होते हुए भी, शिक्षा के महत्त्व को पहचाननेवाला, युवावर्ग में दृढ आस्था एवं विश्वास रखनेवाला, जीवनव्रती, संस्कारों की खेती करनेवाला, श्वेतवस्त्रधारी, सरल स्वभाववाला, आजीवन ब्रह्मचर्य का व्रतधारी, आचार्य शब्द को सार्थक करनेवाला, गुरुजी के नाम से विद्यार्थियों में अत्यंत आदरणीय एवं अनुकरणीय व्यक्ति 'श्री हरिश्चद्रजी' हैं। तब से आज तक प्रत्यक्ष या अपत्यक्ष रूप से उनसे अभी भी सम्बद्ध हूँ।

गुरुजी की पृष्ठभूमि अत्यंत सामान्य है। अत्यंत अभाव और विपन्नता में बाल्यावस्था व्यतीत की। उसमें भी पिता की वात्सल्य छाया से बचपन से अछूते रहे। सभी प्रकार की प्रतिकूलताओं के बावजूद भी उनकी जीवन आस्था अविरत रही और उसे ध्येय निष्ठा से संपृक्त कर अपने संपूर्ण जीवन को समाज के लिए आहुत करने का संकल्प किया। आज उन्होंने जीवन के सौ वसन्तों का अनुभव प्राप्त किया है। ऐसे पावन अवसर पर सर्वप्रथम सर्वशक्तिमान परमेश्वर से उनके दीर्घायु और स्वास्थ्य की मंगल कामना करता हूँ।

गुरुजी स्वतंत्रता सेनानी हैं। जिस तारुण्य अवस्था में जीवन के स्वाभाविक सुखों की सभी आकांक्षा करते हैं, ऐसी अवस्था में स्वेच्छा से सभी भौतिक सुखों से पराङ्मुख होकर राष्ट्रप्रेम की भावना से आप्लावित होकर हैदराबाद की निजाम सरकार के क्रूर सामाजिक, धार्मिक, भाषिक, शैक्षिक अत्याचारों एवं अन्यायों के विरोध में अपनें प्राणों की चिंता न कर देश की स्वन्तत्रता के लिए कठोर कारावास को भोगा। जेल से घूटने के बाद भी आजतक वही राष्ट्र प्रेम की पावन-धारा उनके जीवन का मुख्य ध्येय बना है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भारत सरकारद्वारा उन्हें ताम्रपट प्रदान कर सन्मानित किया।

गुरुजी की मातृभाषा मराठी है, किंतु महर्षि दयानन्द जी की कालजयी रचना **'सत्यार्थ प्रकाश'** को पढकर उनके जीवन की दिशा ही बदल गयी। स्वराष्ट्र, स्वभाषा और स्वशासन की त्रिसूत्री का प्रतिपादन जो महर्षि ने अपने ग्रंथ में किया, वही उनके जीवन का पाथेय बना। अत: आर्य समाज के संपर्क से राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रति उनकी आस्था दृढ होती गयी। जिसके परिणाम स्वरूप हिंदी को राष्ट्रभाषा के पद पर अभिषिक्त करने के लिए पंजाब हिंदी सत्याग्रह के आन्दोलन में गुंजोटी और स्वग्राम औराद के साथियों के साथ राष्ट्रिय सहयोग दिया तथा कारावास भी भोगा।

गुरुजी मूलत: संस्कारों का विश्वविद्यालय हैं। ऐसा विश्वविद्यालय कि, जिसकी भौगोलिक सीमा नहीं। प्रदेश का कोई बन्धन नहीं। अत: आंध्रप्रदेश, तेलंगना, कर्नाटक तथा महाराष्ट्र में गुरुजी यायावरी-वृत्ति से विद्यार्थियों को ढूंढते रहे। उनके सम्पर्क में आकर उनके अंतरंग मित्र बनें। उनकी समस्याओं का निराकरण

किया। उनका मार्गदर्शन कर उनके जीवन-पथ को सुकर बनाया। आज इन सभी प्रान्तों में उनके विद्यार्थी उच्च पदों पर आसीन होते हुए भी संस्कारशील है, जिसके मूल में गुरुजी के संस्कार एवं तपस्या है। उनके अनेक विद्यार्थी यथा डॉ.ब्रह्ममुनिजी, डॉ.तानाजी आचार्य, डॉ.सोनेराव आचार्य व डॉ.रामचन्द्र पाटील(लन्दन), डॉ.नयनकुमार आचार्य ये देश-विदेश में लब्धप्रतिष्ठ और आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में संलग्न हैं। उनके वैज्ञानिक क्षेत्र में कार्यरत विद्यार्थी सर्वश्री डॉ.नवलकेले(मुम्बई), डॉ.म्हेत्रे(हैदराबाद), डॉ.धरणे(बेंगलोर) आदि अपना एक विशेष स्थान बनाये हुए हैं। आपके विचारों एवं संस्कारों का यह क्रियात्मक परिणाम है।

गुरुजी आज महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के संरक्षक है। उनके मार्गदर्शन में उनके प्रिय शिष्य प्रा.डॉ.ब्रह्ममुनिजी के नेतृत्व में महर्षि दयानन्दजी के विचारों का प्रचार-प्रसार कर रही है। सभा के बहुमुखी कार्यक्रमों के मूल में आपकी तपस्या, त्याग, निःस्पृहता, समाजसेवी वृत्ति, जाति विषमता को नष्ट करने का संकल्प, प्राचीन गुरुकुल पद्धति के प्रति आस्था, मानवता संस्कार शिविर, नारी सम्मान इत्यादी जीवनमूल्य हैं, जो कि वर्तमान जीवन के लिए अत्यन्त आवश्यक हैं। आपकी शताब्दी के अवसर पर परमेश्वर से प्रार्थना है '**जीवेत् शरदः शतम्, भूयश्च शरदः शतात्।**'

- पशुपतिनाथ नगर, क्र.२, कम्युनिटी हॉल के पिछे,
औसा रोड, लातूर मो.९८८१२१५६१६

* * *

मेरे प्रेरक-श्रद्धानन्द गुरुजी

- वशिष्ठ आर्य-गुरुजी

'**सन्ति सन्तः कियन्तः**' अर्थात् संसार में ऐसे सन्त कितने है? जो कि दूसरों के छोटे-से गुण को बडा बनाकर उनकी प्रशंसा करते है और प्रसन्न होते हैं? मेरे प्रेरक स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती (पूज्य हरिश्चंद्र गुरुजी) के लिए यह पंक्ति मुझे सर्वाधिक सटीक लगती है। जबसे उनका सान्निध्य मिला, तब से मेरी जीवनवाटिका सुरभित हुई है। पिछले दिनों उन्होंने मुझे चकित कर दिया। उन घटनाओं का उल्लेख करना हम सभी के लिए प्रेरणाप्रद होगा।

मेरा ग्राम और गुरुजी के मामा का ग्राम (भूकम्पग्रस्त मंगरूळ ता.औसा जि.लातूर) एक ही है। उनके मामा और मेरे पिताजी मित्र थे। इसलिए बचपन से ही मेरा उनसे सम्पर्क रहा। यहां १९३५ से आर्यसमाज है। पू.उत्तममुनिजी (डी.आर.दास), शेषराव वाघमारे, व्यास बन्सीलालजी ने इसकी स्थापना की है। यहांपर पं.नरेंद्रजी, नरदेवजी स्नेही, प्रेमचंद्र प्रेम, प्रकाशवीर शास्त्री और आर्यसमाज गांधी चौक लातूर में आनेवाले विद्वान आया करते थे। एकबार गुरुजी ने 'मानवता संस्कार शिबिर' के लिये आने के लिए कह दिया, जब मैं शिवाजीराव गायकवाड के खेत में था। फिर भी मैं शिविर में सम्मिलित हुआ और वहां पर मैने बहुत कुछ सीखा। प्रतिवर्ष दीपावली और गर्मियों की छुट्टियों में औराद जाता था, तब मुझे पढने के लिए गुरुजी अच्छी किताबे देते थे। उनकी माताजी प्रयागबाई मुझे शिरसे मुहंपर हात फिराकर लाड प्यार करती थी, तब मैं

उनका श्रद्धापूर्वक दर्शन करता था। मैं उनके मायके का(माहेर) बच्चा होने से खेत में का गन्ना, फल्ली, मटर, बेर, गाजर, काकडी आदि वे मुझे खिलाती थी। साथ ही ग्लास भर-भर के गाय का दूध पिलाती थी। और आग्रहपूर्वक भोजन खिलाती थी। मैं उन्हें बुवा(आत्या) कहता था।

यह लाड प्यार देखकर गुरुजी के मन में अपनापन लगता रहा। मेरी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। पढना तो था ही, किन्तु क्या करे? फिर भी जैसे-तैसे जब मैं दयानंद कॉलेज सोलापूर में इ.स.१९६४-६५ में प्रवेश लिया, तब गुरुजी ने मेरी मदद करने के लिए अनेकों को प्रोत्साहित किया। प्रो.राजेन्द्र 'जिज्ञासु', गुणवंतराव पाटील, उत्तमराव सूर्यवंशी, दिनकर पाटील, आर्यसमाज के प्रधान बन्सीलाल गोदानी, ज्वालापुर की विदुषी विद्योत्तमा यतिज्ञा ये सभी मुझे प्रतिमाह ५-५ रु. भेजते थे। राजेंद्रजी जिज्ञासु जब होस्टल में रेक्टर थे, तब वे मुझे दैनिक हवन करने लगाते थे। उस समय होस्टल में ३०० छात्र थे। मैं आर्यसमाज कस्तुरबा मार्केट में साप्ताहिक सत्संग के लिए भी जाता था। जब कभी वे वहां सोलापुर आते थे, तब पीठपर हाथ रखकर पूछताछ करते थे और प्रेरणा देते थे। भूख लगने पर गुरुजी मुझे पचास पैसे देकर केला और फुटाने लाने लगाते थे और मुझे खिलाकर वे भी खाते थे। लेकिन खुद होकर किसीके यहां भोजन के लिये नही जाते थे। ऐसा ही लातूर में भी होता था।

मुझपर विश्वास रखकर वे अनेक 'मानवता संस्कार शिविर' के लिए धन इकट्ठा करने हेतु रसीद बुक देते थे। मैं धन जमा करके लाकर देता था। विद्योत्तमा यतिज्ञा के कार्यक्रम के निधि संकलित करने हेतु धारूर, वाशी, कळंब, शिराढोण, येडशी भेजते थे। गुरुजी के सान्निध्य में रहने से मेरे जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन आया है। मेरा तथा मेरी कन्याओं व पुत्र के मनुष्यकृत जातिव्यवस्था को छोडकर विवाह हुए। आज गुरुजी का यह ज्ञान मैं जगह-जगह स्कूल-कॉलेज घुमकर छात्रों को वितरीत कर रहा हूँ। गुरुजी के पावन विचारों से ही मेरा जीवन सुमधुर हुआ है। इसलिए मैं उनका शतशः ऋणी हूँ। स्वामीजी को मेरा शतशः वन्दन!

- सदर बाजार, अम्बाजोगाई जि.बीड

गुरुजी को श्रद्धापूर्वक नमन...!

- श्रीमती शशिकला आर्य(हिसार)

मुझे यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है कि, महाराष्ट्र के तपस्वी सन्यासी एवं आर्य समाज व मानवता के प्रसारक स्वामी श्रद्धानन्दजी का शताब्दी महोत्सव मनाया जा रहा है। मैं बचपन से ही गुरुजी के कार्यों से परिचित हूँ। मेरे पिता आर्य समाज की वैदिक विचारधारा के अनुयायी तथा कट्टर ऋषिभक्त थे। उनके मुख से मैं गुरुजी के बारे में सदैव सुना करती थी। विद्यार्थियों पर नैतिक संस्कार प्रदान कर उनकी जीवनवाटिका को पल्लवित करने में गुरुजी का समग्र जीवन समर्पित रहा है। सही अर्थों में गुरुजी एक संत व कर्मशील समाजसेवक हैं। मेरा सौभाग्य रहा कि, इन्हीं के गाँव के भूमिपुत्र आचार्य पं.विश्वमित्रजी शास्त्री की मैं सहधर्मचारिणी बनकर अन्त तक उनका साथ निभा सकी। औराद ग्राम की बहु बनकर मैं आज भी गुरुजी के ही विचारों का आर्य समाज के माध्यम से पालन कर रही हूँ। दिवंगत पतिदेव द्वारा से भी मैंने गुरुजी के बारे में बहुत कुछ सुना था। शताब्दी वर्ष पर मैं गुरुजी के चरणों में श्रद्धापूर्वक नमन कर उनके शेष दीर्घायु की कामना करती हूँ।

ब्रह्मचारी की कहानी ...

- रोहित जगदाळे(परभणी)

सुनो एक ब्रह्मचारी सन्यासी की वह कहानी है...।
जिसके पदचिन्हों पर निकली तीन पीढियों की रवानी है ।

क्या नेता, क्या अफसर और क्या धर्म प्रचारक,
सारे ही के सारों का यह सन्यासी जैसे तारक ।
सामाजिक बुराइयों व अन्याय-कुरीतियों का यह प्रहारक,
दुष्ट दुश्शासनों के लिए कहलाये स्वयं ही संहारक ।
जिसके असीम तप ही की सारी यह निशानी है,
सुनो एक ब्रह्मचारी सन्यासी की ये कहानी है....।

राजा हरिश्चंद्र का नाम जिसने जीवन सत्य में उतारा है,
सत्यान्वेषी रहकर आजीवन झूठ से किया किनारा है।
अपनी अनुपम छाया से कितनों को दिया सहारा है,
सहकर कष्टों को जिसने सबको जैसे बहारा है ।
जिसके जीवन प्रकाश से जैसे वैदिक ज्योति जगमगानी है,
सुनो एक ब्रह्मचारी सन्यासी की ये कहानी है...।

मानवता का पाठ पढाया सारी कौम को एक कर,
परमात्मा की प्रेरणा 'जो भी कर तू नेक कर।'
अकेला चला सन्यासी था, कारवा बढता गया सब देख कर,
स्थितियां विपरीत आती रही चलते ईश्वर की राह पर,
फिर भी न डगमगाया योद्धा यह अपना कार्य करता रहा,
मानवता के संवर्ध हेतू पूरा जीवन जिसका जलता रहा ।
'स्वामी श्रद्धानन्द' है नाम जिसका, सबको याद थी दिलानी है ।
सुनो एक ब्रह्मचारी सन्यासी की यह कहानी है....।

सौ वर्ष की आयु में भी अविरत जो चलता है,
सारा आर्य जगत् जिसको वन्दन करता है ।
इस संन्यासी के संग यादें बडी सुहानी है,
सुनो एक ब्रह्मचारी सन्यासी की यह कहानी है....।

* * *

श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानंदजी

- डॉ.जनार्दन वाघमारे(माजी राज्यसभा सदस्य)

औराद हे उमरगा तालुक्यातील (जि.उस्मानाबाद) एक छोटेसे खेडे. या खेड्यातल्या एका सामान्य शेतकरी कुटुंबात हरिश्चंद्र गुरुजींचा जन्म झाला. निजामी राजवटीतील हे आडवळणाचे गाव. ना घरात शिक्षणाचा वारसा ना गावात शिक्षणाच्या सोई. गुंजोटी हे शेजारचे मोठे गाव. आर्यसमाजी चळवळीचे एक महत्त्वाचे केंद्र. घरच्या विपन्नावस्थेमुळे या मुलाचे फारसे शिक्षण झाले नाही. तरीपण अतिशय चिकाटीने सातवीपर्यंत ते कसे बसे शिकले. आर्यसमाजी चळवळीने त्या काळातील तरुणांच्या मनामध्ये देशभक्तीची ऊर्मी निर्माण केली होती. त्यामुळे अनेक तरुण आर्यसमाजी चळवळीकडे वळले. स्वामी दयानंद सरस्वती लिखित **'सत्यार्थ प्रकाश'** हा ग्रंथ त्या चळवळीचे बायबल ठरला. हरिश्चंद्र सूर्यवंशीच्या ते वाचनात आले. हा ग्रंथ त्यांचा शाश्वत प्रेरणास्रोत बनला.

एका लहानशा खेड्यातला हा मुलगा. 'सत्यार्थ प्रकाश' या ग्रंथाच्या वाचनाने तो वैदिक विचारांचा पाईक बनला. **'चलो वेदों की ओर'** ही स्वामी दयानंद सरस्वतींची हाक त्याच्याही कानावर पडली. आर्यसमाज हा जुल्मी निजामी राजवटीच्या विरुद्ध झुंज देत होता. स्वातंत्र्य चळवळीचा तो कणा होता. अनेक तरुणांनी त्यात आहुती दिली. हरिश्चंद्र या तरुणाने देखील आपल्या जीवनाची आहुती देण्याचा वज्रनिश्चय केला. वेदाच्या शिकवणुकीने त्याच्या मनावर सखोल संस्कार केले. इतरांवर संस्कार करणे हेच त्याच्या जीवनाचे मिशन बनले.

'माणुस हो' ही वेदाची पहिली शिकवण. मनुष्य बनणे ही सोपी गोष्ट नाही.मनुष्य बनणे म्हणजे मानवी मूल्ये आत्मसात करणे व ती आचरणात आणणे होय. बौद्धिक शक्तीबरोबर नैतिक व आध्यात्मिक शक्तींची उपासना करणे हे ध्येय ठरले. आरोग्याची साधना केल्याशिवाय बौद्धिक, नैतिक व आध्यात्मिक शक्ती प्राप्त करण्याचा मार्ग प्रशस्त होत नाही. या तरुणाने आपले सगळे जीवन देशसेवेसाठी अर्पण करावयाचे ठरविले. त्याने अविवाहित राहावयाचा निर्णय घेतला. ब्रह्मचर्य व्रत म्हणजे असिधाराव्रत! घरदार आणि सर्वकांही सोडून देऊन समाजसेवेस या तरुणाने स्वत:ला वाहून घेतले. त्याची सदसद्‌विवेक बुद्धी त्याला दिशा दाखवत होती. त्या दिशेने तो चालत राहिला.

देशाचे भवितव्य तरुण पिढीवर अवलंबून असते, हे लक्षात घेऊन तरुण पिढी निर्माण करण्याचा कार्याला त्याने सर्वोच्च प्राधान्य दिले. तरुणांवर चांगले संस्कार केले तरच समाज विवेकी व गतिशील बनेल हा विचार त्याच्या मनात घोळू लागला. आर्यसमाजाच्या चळवळीने त्याच्या मनात देशभक्ती व राष्ट्रप्रेम निर्माण केले होते. स्वामी दयानंद सरस्वती व अन्य आर्यसमाजी नेत्यांचे साहित्य त्याने वाचले. अनेक नेत्यांची स्फूर्तीदायक भाषणे त्याने ऐकली. शेवटी हरिश्चंद्र सूर्यवंशी हे लोकशिक्षक बनले. **'गुरुजी'** हे नामाभिधान त्यांना प्राप्त झाले.

हरिश्चंद्र गुरुजींचे औपचारिक शिक्षण फारसे झाले नव्हते. परंतु वाचनाचा छंद त्यांनी लावून घेतला

होता. ते स्वाध्यायशील बनले. चौफेर वाचन व सखोल मनन यामुळे ते चिंतनशील बनले. महान भारतीय व्यक्तींची जीवन चरित्रे त्यांनी वाचून काढली. पाश्चात्य देशभक्तांची जीवन चरित्रे देखील त्यांनी वाचली. महात्मा टॉलस्टॉय यांच्यासारख्या क्रांतिकारकांच्या विचारांनी ते अक्षरश: भाराऊन गेले. स्वत:च्या जीवनाचे ते शिल्पकार बनले.

एका खेड्यात जन्मलेल्या व वाढलेल्या हरिश्चंद्र गुरुजींनी आपल्या कार्याला स्वत:च्या खेड्यापासूनच सुरुवात केली. गावातील विद्यार्थ्यांशी त्यांनी संवाद साधला. अवतीभोवतीच्या खेड्यांतील विद्यार्थ्यांच्या संपर्कात ते येऊ लागले. त्यांच्या या कार्याकडे पाहून सॉक्रेटीसचीच आठवण व्हावी. सॉक्रेटीस हा अथेन्स शहराच्या रस्त्यावर चालणारा लोकशिक्षक. रस्त्यात भेटणाऱ्या तरुणांशी त्याने ऋणानुबंध निर्माण केले. आमचा हा सॉक्रेटीस मात्र खेड्यात राहणारा. त्याने आपले ऋणानुबंध स्थापन केले ते खेड्यातील तरुणांशी. खेड्यापाड्यातील विद्यार्थ्यांचे ते मार्गदर्शक, मित्र व तत्त्वज्ञ बनले. ज्ञान व संस्कारांनी त्यांनी तरुणांची मने प्रज्ज्वलित करायला सुरुवात केली.

इतर समाज सुधारक व हरिश्चंद्र गुरुजी यांच्यात फरक असा की इतरांनी आपले कार्य शहरीभागात सुरु केले,तर हरिश्चंद्र गुरुजींनी ते ग्रामीण भागात सुरु केले. ग्रामीण भागातील तरुणांना ते परके वाटले नाहीत. त्यांचा वेश व त्यांची भाषा,त्यांचे वागणे व बोलणे आणि एकंदर जीवनशैली हे सर्व आपलेच आहे असे त्यांना वाटले. त्यांच्यामध्ये व गावातील विद्यार्थ्यांत कसलेच अंतर नव्हते. त्यांच्यात निर्माण झालेली जवळीक अगदी स्वाभाविक होती. ग्रामीण भागातील विद्यार्थी उच्च शिक्षणासाठी शहरात जाऊ लागले. आणि म्हणून गुरुजींचा संपर्कही शहरांशी होऊ लागला. अनेक विद्यार्थ्यांचे ते प्रेरणास्थान बनले. गुरु हा आपल्या विद्यार्थ्यांना केवळ ज्ञान देत नाही, तर तो त्यांना प्रेरणाही देतो. गुरु हा आपल्या विद्यार्थ्यांना ऊर्जा देत असतो. अंधारातून त्यांना तो प्रकाशाकडे नेत असतो. हरिश्चद्र गुरुजींनी हेच केले.

हरिश्चंद्र गुरुजी हे चार भिंतीच्या वर्गखोलीमध्ये शिकवणारे शिक्षक नव्हते. त्यांच्यासाठी समाज हीच मुक्तशाळा होती. ग्रामीण भागातील, विशेषत: बहुजन समाजातील विद्यार्थ्यांशी त्यांचा संपर्क होता. त्यांना ते चार हिताच्या गोष्टी सांगत. त्यांच्या खोल्यावर जाऊन ते त्यांना भेटत. 'तू खूप शिक, मोठा हो, आपल्या आई-बापाचे व गावचे पांग फेड' ही त्यांची शिकवण होती. हाच विषय या गुरुजींनी आयुष्यभर शिकवला. याच विषयाचे ते शिक्षक आहेत. दोन पायांवरची मुक्त संस्कार शाळा म्हणजे हरिश्चंद्र गुरुजी. अनेक जातींच्या विद्यार्थ्यांच्या ते संपर्कात आले. संपर्काचे रुपांतर गुरु-शिष्याच्या पवित्र नात्यात झाले. आपल्या विद्यार्थ्यांच्या सुख-दु:खात ते सहभागी झाले. त्यांच्या अडचणी ते सोडवू लागले. त्यांच्यात आशावादच नव्हे तर ध्येयवाद त्यांनी निर्माण केला. आपण समाजाचे देणे लागतो आणि म्हणून समाजाची सेवा केली पाहिजे ही भावना त्यांनी त्यांच्यात निर्माण केली. त्यांच्याशी ते पत्रव्यवहार करू लागले. मुक्त गुरुकुलातला हा आचार्य आपल्या विद्यार्थ्यांचा शिल्पकार बनला. आपल्या विद्यार्थ्यांना त्यांनी स्वावलंबन व स्वाभिमान शिकवला.

साधी राहणी व उच्च विचारसरणी हे हरिश्चंद्र गुरुजींचे ब्रीद. धोतर, हाफ शर्ट, पायात वाहाना आणि

हातात पिशवी. भव्य कपाळ व भेदक डोळे आणि सावळा रंग. वाढलेली दाढी हे त्यांचे व्यक्तित्व! गुरुजींची भ्रमंती आयुष्यभर राहिली आहे. गुरुजी हे परिव्राजक आहेत.

जातिविहीन समाज हे गुरुजींचे जीवन स्वप्न! आणि म्हणून अनेक तरुणांना आंतरजातीय विवाहासाठी त्यांनी प्रेरित केले. त्यांच्या मार्गदर्शनामुळे व प्रेरणेमुळे त्यांच्या संपर्कात आलेल्या अनेक तरुणांनी आंतरजातीय विवाह केले आहेत. शिकण्याच्या प्रेरणा तर त्यांनी दिल्याच पण अनेकांचे आंतरजातीय विवाह त्यांनी जमवून दिले. जातीपातींनी चिरफळलेल्या परंपरावादी समाजात असे परिवर्तन घडवून आणणे, ही सोपी गोष्ट नाही. हरिश्चंद्र गुरुजींचा संदेश आहे : 'जातिविहीन व्हा आणि जातिविहीन समाजाची निर्मिती करा.'

जातिव्यवस्थेने हिंदू समाजाचे अतोनात नुकसान केले आहे, हे ते तरुणांना पटवून देतात. त्यांच्या संपर्कात आलेल्या तरुणांनी त्यांच्या सल्ल्यानुसार जाती तोडून विवाह केले. आंतरजातीय विवाह करणे म्हणजे क्रांतिकारक पाऊल उचलणे होय. स्वामी दयानंद सरस्वतींनी जातिव्यवस्थेला सुरुंग लावणारे विचार व्यक्त केले. स्त्री-शूद्रांना ब्राह्मणाइतकाच विद्या व वेदाचा अधिकार आहे, हे ठणकावून सांगितले. समतेच्या झेंड्याखाली सगळ्यांना आणले. त्यांनी स्थापन केलेल्या आर्यसमाजाच्या चळवळीच्या कार्यक्रमाचा हा अविभाज्य भागच बनला. हरिश्चंद्र गुरुजी आर्यसमाजी चळवळीच्या प्रभावाखाली आले नसते तर त्यांच्या हातून ते क्रांतिकारी कार्य घडले नसते. संसारापासून अलिप्त राहणाऱ्या ह्या परिव्राजकाने अनेकांचे संसार उभे केले आहेत. त्यांच्या कुटुंबाचे ते आधारस्तंभ बनले आहेत. त्यांच्या संसारात आलेल्या अडचणीही त्यांनी सोडवल्या आहेत.

हरिश्चंद्र गुरुजींपासून प्रेरणा घेऊन पुढे गेलेले अनेक जण मला माहित आहेत. उच्च शिक्षण घेऊन त्यांनी निरनिराळ्या क्षेत्रात उच्चपदावर काम केलेले आहे. आजही ते निरनिराळ्या क्षेत्रात निःस्वार्थपणे कार्य करीत आहेत. त्यांपैकी काहींचा मी येथे उल्लेख करतो.

डॉ.ब्रह्ममुनी वानप्रस्थी हे पूर्वाश्रमीचे प्रा.सुग्रीव काळे. ते हरिश्चंद्र गुरुजींच्या गावचेच अर्थात औरदचे. लहानपणीच ते गुरुजींच्या संपर्कात आले. प्रतिकूल परिस्थितीवर मात करून त्यांनी शिक्षण पूर्ण केले. परळी येथील वैद्यनाथ महाविद्यालयामध्ये वनस्पतीशास्त्राचे प्राध्यापक म्हणून त्यांनी काम केले. त्यांची पत्नीही त्याच महाविद्यालयामध्ये प्राध्यापिका होती. सेवानिवृत्त झाल्यानंतर त्यांनी वानप्रस्थ आश्रमात प्रवेश केला. ब्रह्ममुनी हे नाव त्यांनी धारण केले. परळी येथे त्यांनी गुरुकुलाची स्थापना केली. खरे तर ते माझेही विद्यार्थी आहेत. माझ्या या विद्यार्थ्यांचा मला अभिमान वाटतो.

प्रा.सोनेराव आचार्य हे संस्कृतचे अधिव्याख्याता होते. अप्रतिम वक्तृत्व. हिंदी व संस्कृत या दोन्ही भाषांवर सारखाच अधिकार. लातूरच्या राजर्षी शाहू महाविद्यालयामध्ये माझे ते सहकारी होते. सध्या ते इंग्लंडमध्ये वैदिक धर्मप्रचारक म्हणून कार्यरत आहेत. डॉ.कुशलदेव शास्त्री हे गुरुकुलचे स्नातक होते. नांदेडच्या नेताजी सुभाषचंद्र कॉलेजमध्ये संस्कृतचे ते प्राध्यापक होते. ते संशोधकही होते. अनेक पुस्तकेही त्यांनी लिहिली आहेत. एक थोर संशोधक म्हणून त्यांचा लौकिक आहे. दुर्दैवाने आज ते हयात नाहीत.

डॉ.तानाजी आचार्य हे वैदिक साहित्याचे गुढ अभ्यासक आहेत. इंग्लंडमध्ये वैदिकधर्म प्रचारक म्हणून

गेल्या अनेक वर्षापासून ते काम करीत आहेत. श्री दिनकरराव मोरे हे सुपरिन्टेन्डेंट इंजिनिअर म्हणून सेवानिवृत्त झाले. जलतज्ञ म्हणून त्यांनी नावलौकिक कमवला आहे. महाराष्ट्र शासनाच्या जल आयोगाचे ते एक सदस्य होते. शेती व पाणी या विषयावर ते लेखन करतात.श्री अर्जुनराव सोमवंशी हे उदगीर येथील शामलाल विद्यालयाचे सेवानिवृत्त शिक्षक आहेत. एक आदर्श व्यक्तिमत्व म्हणून त्यांच्याकडे आम्ही पाहतो. डॉ.नयनकुमार हे परळी वैजनाथ येथील वैद्यनाथ महाविद्यालयात संस्कृतचे विद्यार्थीप्रिय प्राध्यापक आहेत. 'वैदिक गर्जना' या हिंदी-मराठी मासिकाचे ते संपादक आहेत.

वानगी दाखल या सहा-सात नावांचा मी येथे उल्लेख केला. गुरुजी हे अनेक इंजिनिअर्स, डॉक्टर्स, वैज्ञानिक, लेखक, संशोधक, धर्म प्रचारक, प्राध्यापक यांचे निर्माते आहेत. त्यांचे विद्यार्थी देश-विदेशात विखुरलेले आहेत. अनेकांना त्यांनी गुरुकुलांमध्ये शिक्षण घेण्यासाठी प्रेरित केले. त्यांचे अनेक विद्यार्थी संस्कृतचे प्राध्यापक आहेत. चांगले नागरिक तयार करणे ही फार मोठी देशसेवा आहे.

'माणसाने माणसाशी माणसासारखे वागावे' हाच गुरुजींचा धर्म आहे. हाच धर्म ते समाजाला शिकवत राहिले आहेत. वैदिक धर्मामध्ये त्यांना हाच मानवता धर्म आढळला. हाच धर्म गुरुकुलांमध्ये शिकवला जातो. म्हणून अनेक विद्यार्थ्यांना त्यांनी गुरुकुलामध्ये शिकण्यासाठी प्रवृत्त केले. त्यांचे बरेच विद्यार्थी देश-विदेशात वैदिक धर्माचा प्रचार-प्रसार करीत आहेत.

स्वामी दयानंद सरस्वतींनी गुरुकुल शिक्षण पद्धतीचे पुनरुज्जीवन केले होते. 'वैदिक धर्माकडे चला' याचा अर्थ वैदिक काळात जो आदर्श समाज होता, तसाच आजचाही समाज आदर्श असावा, ही त्यांची भूमिका होती. आर्यसमाजाने उत्तर भारतात गुरुकुलांची ठिकठिकाणी स्थापना केली. वेद-वेदांगांचा ध्यास व त्यासाठी संस्कृतचा अभ्यास हाच त्यांचा श्वास आहे. गुरुजींनी गुरुकुल पद्धतीचा हिरिरीने पुरस्कार केला. त्यांच्या प्रेरणेने एडसी आणि परळी-वैजनाथ येथे गुरुकुले स्थापन झाली आहेत. या गुरुकुलांना आर्थिक सहाय्य मिळावे म्हणून गुरुजींनी सतत पायपीट केली आहे.

हरिश्चंद्र गुरुजींनी आणखी एक महत्त्वपूर्ण गोष्ट केली. दिवाळी व उन्हाळ्याच्या सुट्टीमध्ये ते **'मानवता संस्कार शिबिर'** आयोजित करीत असतात. बौद्धिकांच्या माध्यमातून विद्यार्थी-विद्यार्थीनींवर उत्तम संस्कार ते करीत असतात. तरुणांचे शारीरिक, बौद्धिक, नैतिक व आध्यात्मिक बल वाढवण्याचा त्यांचा प्रयत्न असतो. ते जातिव्यवस्थेवर हल्ले करीत आले आहेत. व्यसनाधीनता व अंधश्रद्धा निर्मूलनासाठी त्यांचे प्रयत्न राहिलेले आहेत. मूर्तिपूजेचे खंडन ते सतत करीत आलेले आहेत.

गुरुजींचे कार्यक्षेत्र हे केवळ मराठवाडा नाही. हैद्राबाद राज्यातील तेलंगणा, कर्नाटक व मराठवाडा या तिन्ही विभागांशी त्यांचा संबंध आहे. या तिन्ही विभागातील विद्यार्थ्यांच्या संपर्कात ते आले आहेत. स्वामी अग्निवेश, स्वामी इन्द्रवेश अशा विद्वानांची व्याख्याने त्यांनी ठिकठिकाणी आयोजित केली आहेत.

गुरुजी हे उत्तम संघटक आहेत. आर्यसमाजाच्या कार्याकडे तरुणांना आकर्षित करण्यासाठी त्यांनी अथक प्रयत्न केलेले आहेत. दुर्दैवाने आर्यसमाजी नेत्यांनी त्यांच्याकडे द्यावे तेवढे लक्ष दिलेले नाही. पण फळाची अपेक्षा त्यांनी केली नाही. कर्मयोग्याचे जीवन ते जगत आहेत. त्यांचे कार्य चालूच आहे. आर्य

परिषदेच्या माध्यमातूनही त्यांनी महत्त्वाचे कार्य केले आहे. प्रांतीय आर्य सभेशीही त्यांचा निकटचा संबंध राहिलेला आहे. महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेला त्यांचे कुशल नेतृत्त्व लाभलेले आहे.

गुरुजींच्या उत्तर आयुष्यातील सर्वात महत्त्वाचा टर्निंग पॉईंट म्हणजे त्यांनी घेतलेली संन्यास दीक्षा. वयाच्या ७८व्या वर्षी त्यांनी संन्यास दीक्षा घेतली. हा समारंभ दि.२९ डिसेंबर १९९६ रोजी त्यांची जन्मभूमी औराद या गावी संपन्न झाला. औपचारिक रितीने त्यांनी संन्यास दीक्षा घेतली असली तरी त्यांचं संबंध जीवन एका संन्याशाचेच जीवन राहिलेले आहे. लहानपणापासूनच ते परिव्राजक आहेत. संन्यास दीक्षा घेतल्यानंतर त्यांनी **'स्वामी श्रद्धानंद'** हे नाव धारण केले. स्वामी सर्वानंदजी यांनी त्यांना संन्यास दीक्षा दिली. स्वामी श्रद्धानंदजी हे सर्वांच्या श्रद्धेस पात्र आहेत. ते सर्वांचे श्रद्धेय आहेत.

जन्माधिष्ठित वर्णव्यवस्थेने हजारो जातींना जन्म दिला. समाज जीवनाची वीणच त्यामुळे विस्कटली. त्यामुळे समाज व्यवस्थेच्या चिंध्याचिंध्या झाल्या. हरिश्चंद्र गुरुजींनी जातिनिर्मूलनासाठी आपले संबंध आयुष्य खर्च केले आहे. खरे तर जातिनिर्मूलनाची चळवळच उभी करायला हवी. गुरुजींच्या पुढाकाराने व त्यांच्या मार्गदर्शनाखाली अनेक तरुणतरुणींनी आंतरजातीय विवाह केले आहेत. त्यांचे हे कार्य अतिशय मोलाचे आहे यात शंका नाही.

हरिश्चंद्र गुरुजींना राष्ट्रभाषा हिंदीचा खूप अभिमान आहे. खरे तर संस्कृत ही राष्ट्रवाणी व हिंदी ही भारताची राष्ट्रभाषा आहे. त्यांचा भर राष्ट्रभाषेच्या प्रचार-प्रसारावर राहिलेला आहे. १९५८ साली त्यांनी आपल्या सहकाऱ्यांबरोबर राष्ट्रभाषा हिंदीसाठी सत्याग्रह केला होता. गुरुजींनी हैद्राबाद स्वातंत्र्य लढ्यात तर भाग घेतलाच पण गोवा स्वातंत्र्य लढ्यातही भाग घेतला. १९४६ साली गुंजोटी येथे मुसलमानांनी 'वेद प्रकाश' या आर्यसमाजी तरुणावर हल्ला करून त्याचा खून केला. गुंजोटी हे त्यांच्या औराद या गावच्या शेजारचे गाव. वेदप्रकाशच्या बलिदानाचे अनेक तरुणांना स्वातंत्र्य लढ्यात खेचले. हरिश्चंद्र गुरुजींनी हैद्राबाद स्वातंत्र्य लढ्यात उडी घेतली. कारावास भोगला.

स्वामी श्रद्धानंद यांच्या प्रदीर्घ समाजसेवेची दखल त्यांना वेगवेगळे पुरस्कार प्रदान करून घेण्यात आली आहे. त्यांचे कार्य निखळ मानवतावादी आहे. मातृह्रदयी स्वामी श्रद्धानंदजी यांचे कार्य खरे तर मानवजातीसाठीच आहे. **'जगाच्या कल्याणा संतांच्या विभूती। देह कष्टविती परोपकारे।।'** या उक्तीप्रमाणे ते जगलेले आहेत.

सन २००६ मध्ये त्यांना आर्य चॅरिटेबल ट्रस्टतर्फे **'आर्यरत्न'** या उपाधीने गौरविण्यात आले. त्यांना प्राप्त झालेला हा सर्वोच्च पुरस्कार आहे. गुरुजींनी यावर्षी शतक गाठले आहे. आमच्यात त्यांची उपस्थिती हाच आमचा गौरव आहे. समाजासाठी आपले संपूर्ण जीवन अर्पण करणाऱ्या व्यक्तीच्या सहवासात येणे म्हणजे दिव्यत्वाची प्रचीती येणे होय. दिव्यत्वाची जेथे प्रचीती येते तेथे माझे कर नम्रतेने जुळतात. ऋषीकुलातील या आचार्याला मी दीर्घआयुरारोग्य आणि अभीष्ट चिंतितो.

– 'अविष्कार', श्रम साफल्य कॉलनी, अंबाजोगाई रोड, लातूर

संपर्क : ९४२३७७७२००

शतायुषी स्वामी श्रद्धानंदजी

- रमेश ठाकुर(निवृत्त मु.अ.)

चार वर्षापूर्वीचा एक प्रसंग ! श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानंदजी अर्थात पूर्वाश्रमीचे पू.हरिश्चंद्र गुरुजी हे त्यांचा पुतण्या रणवीर सोबत मजकडे आले होते. मनमुराद गप्पा झाल्या. गुरुजींच्या हाताला काहीसा कंप होता व श्रवणक्रिया मंदावली असल्याने थोडेसे मोठ्याने बोलावे लागायचे. बोलता-बोलता गुरुजी म्हणाले, ''रमेश! अलिकडे माझ्या हाताला थोडासा कंप व्हायला लागला आहे, पण माझी तब्येत उत्तम आहे. मला आता ९६ वर्षे पूर्ण झाली आहेत. मी शंभरी नक्की ओलांडणार आहे. मला आणखी चार वर्षे तरी कांहीही होणार नाही याची मला खात्री आहे.'' आत्मविश्वासाने बोलत असलेले गुरुजींचे ते शब्द आजही माझ्या कानात गुंजायमान होत आहेत.

आज ती चार वर्षे पूर्ण होत आली आहेत. गुरुजींचा आत्मविश्वास तितक्याच प्रखरतेने त्यांचे बोल सिद्ध करीत आहेत. गुरुजींनी म्हंटल्याप्रमाणे ते 'नॉट आऊट' शतक झळकत आहेत. **''जीवेत् शरदः शतम्।''** या उक्तीची ते पूर्तता करीत आहेत. शंभरी तर पूर्ण होत आहेच, पण त्याहूनही ते अधिक काळ आपला सहवास आम्हांला देत राहतील यात तीळमात्र शंका नाही. महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभा त्यांची शताब्दी साजरी करीत आहे उर आनंदाने भरून येत आहे. आज त्यांच्याशी निगडीत जुन्या आठवणी उचंबळून येत आहेत.

१९६६-६७ चे वर्ष! मला सोलापूर येथील दयानंद शिक्षण महाविद्यालयात बी.एड्. करण्याची संधी मिळाली. आजवर घरातली चटणी भाकरी खाऊन पायी उमरगा गाठून बी.एस.सी.वर्गात प्रथम येऊन श्री छत्रपती शिवाजी महाविद्यालयातून मी शास्त्राची पदवी घेऊन बाहेर पडलो. वनस्पती शास्त्रात विद्यापीठात पहिला असूनही मी पुढील शिक्षणासाठी जाऊ शकलो नाही. गावातच मी जेथे शिकलो, तेथेच शिक्षक झालेलो, १९६७ मध्ये ! पण त्या अगोदरच सतत संपर्क होता पू.हरिश्चंद्र गुरुजींचा. त्याबरोबरच प्रा.राजेंद्रजी जिज्ञासूंचा, जे की दयानंद महाविद्यालय सोलापूर येथे प्राध्यापक होते. एक अतिशय भारावून गेलेला माणूस! आजचे ते पं.लेखरामजीच आहेत, असे आम्हाला वाटायचे. महर्षि दयानंदांच्या विचारांनी ते भारावलेले! गुंजोटी औरादच्या प्रेमात अडकलेले. साहजिकच त्यांच्या प्रेमजाळ्यात आम्हीही अडकलेले होतो. त्यात पू.हरिश्चंद्र गुरुजींचीही प्रा.जिज्ञासू व आमचेवर मोहिनी होती. त्यात भर म्हणून की काय, मला सोलापूर येथे बी.एड्. करण्याची व तीही दयानंद महाविद्यालयात शिक्षण घेण्याची संधी मिळाली. प्रा.राजेंद्रजी जिज्ञासू हे वसतिगृहाचे रेक्टर व आम्ही त्या वसतीगृहातील विद्यार्थी. रिकामा वेळ मिळाला की, मी त्यांच्याकडे जायचो. आम्ही उभयत: व पू.हरिश्चंद्र गुरुजी एक स्नेहबंधाने जखडले गेलो होतो. आमचे कॉलेज सकाळी ११.३०ला संपायचे. सराव पाठ नसला की आम्ही मोकळेच! माझ्या वर्गात उस्मानाबाद जिल्ह्यातील आम्ही बरेचजण होतो. श्री गोविंद टेकाळे, श्री माने, श्री बिराजदार इत्यादी. हे तिघेही पू.हरिश्चंद्र गुरुजींचे

शिष्य होते. यामुळे एक वेगळेच वातावरण! त्यात भर की काय, वसतीगृहातील प्रार्थना स्थळात दररोज सकाळी ७ वाजता हवन होई. यास प्रा.राजेंद्रजी, प्रा.ओमकुमारजी, प्रा.चंद्रभानुजी सोनवणे (रा.मोगरगा) यांची उपस्थिती राहावयाची. हे तिघेही उत्तम वक्ते होते. आम्हाला ही एक पर्वणीच असायची. श्री माने हे ही गुरुजींचे शिष्यच. औसा तालुक्यातील आशीव येथून आलेले श्री बिराजदार व श्री टेकाळेही त्यांचे मित्र मध्येच एक वादळ आले आणि श्री माने एका समस्येत अडकले. सर्व मित्रवर्यांनी तोडगा काढण्याचा प्रयत्न चालवला होता. पण यश येत नव्हते. हे गुरुजींना कळाले. गुरुजी खास सोलापूरला आले. त्यांनी त्यातून मार्ग काढला. गावाकडून आलेल्यांना शांत करून पाठविले. वादळ शमले. हेच माने पुढे बी.एड्. झाल्यानंतर लातूर येथील एका विद्यालयाचे मुख्याध्यापक झाले. पू.गुरुजी अशा तऱ्हेने मुलांचे सर्वच दृष्टीने पालक होते.

महाराष्ट्रातील वेगवेगळ्या शहरातील वसतीगृहे ही गुरुजींची भेटीची ठिकाणे होती. वसतीगृहातील विशेष करून हुशार मुलांचा ते शोध घेत आणि खूप चर्चा करीत. चर्चेत मुलांना आपलेसे करून घेत. देश, श्रद्धा-अंधश्रद्धा, आदर्श नागरिक, खऱ्या धर्माचे स्वरूप, ईश्वर आदीवर चर्चा होई. समाजातील ईश्वर, धर्म इत्यादीबद्दलच्या चुकीच्या कल्पना दूर करण्याचा सातत्याने प्रयत्न करीत असत. मुलांमध्ये याबद्दल जिज्ञासा जागृत करण्याचे काम गुरुजी करत. गुरुवर दयानंदांच्या विचारसरणीची प्रचंड छाप गुरुजींवर होती. मुलांसोबत त्या विचारधारेबद्दल विशेषत्वाने चर्चा करीत. सत्यावर प्रचंड निष्ठा, सद्वर्तन यांवर भर. स्वामी दयानंदांनी यासाठीच **'सत्यार्थ प्रकाश'** हा ग्रंथ लिहिला. गुरुजी हे गुण मुलांमध्ये रुजवण्याचा प्रयत्न करीत. आपल्या संबंध आयुष्यात स्वामी दयानंदांनी जगासमोर सत्य तेच मांडण्याचा प्रयत्न केला व खरा धर्म, खरे तत्वज्ञान, खरा परमेश्वर हे समजवण्याचा प्रयत्न केला. पू.हरिश्चंद्र गुरुजी देखील आयुष्यभर हेच करीत राहिले व आजही करीत आहेत. आम्ही चुकीचा विचार घेऊन स्वतःला जातीच्या, अज्ञानाच्या व अंधविश्वासाच्या जाळ्यात स्वतःला कसे कोंडवून ठेवले आहे हे लक्षात आणून देत. बुद्धिमान मुलांपर्यंत पोहोंचण्याची किमया गुरुजींकडे असल्यामुळे देशभरात गुरुजींचे विद्यार्थी विखुरले आहेत. विदेशातही भारतीय विचारधारेचा व म.दयानंदांच्या तत्वज्ञानाचा प्रचार आणि प्रसाराचे कार्य करीत आहेत.

पू.गुरुजी हे माझ्या गुंजोटी गावाजवळील औरादचे ! तसे औराद-गुंजोटी एकच असल्यासारखे आहेत. दोन्हींतील अंतर केवळ दीड कि.मी. चे! परिसरात गुंजोटी येथे दहावी पर्यंतच्या शिक्षणाची सोय. यामुळे आजुबाजूच्या खेड्यातील मुले शाळेला येत. गुरुवार हा आठवडी बाजारचा दिवस. शाळा अर्धीच असायची. दुपारची सुट्टी. पू.गुरुजी या दिवशी हमखास गुंजाटीत असायचे. गुंजोटीत मोठे आर्य समाज आहे. भारतातील अनेक विद्वानांची भाषणे इथे ऐकण्याची संधी मिळायची. यामुळे गुरुजींचे काम सोपे व्हायचे. औरादलाही आर्य समाजाची सुरुवात झाली. त्यावेळी स्वतंत्र इमारत नव्हती, पण काम चालूच. परिसरातील मुलांना विनासायास खरे तत्त्वज्ञान अवगत होई. यात पू.हरिश्चंद्र गुरुजींचे योगदान अवर्णनीय आहे. याच काळात सोलापूरच्या दयानंद महाविद्यालयात मा.भगवानदासजी प्राचार्य म्हणून आले. हे कॉलेज भारतातील डी.ए.व्ही.संस्थेशी संलग्नित कॉलेज होते. यामुळे प्राचार्यांसह कांही प्राध्यापक देखील

पंजाब, हरियाणा येथून आलेले असायचे. यांची कॉलेजवर चांगली पकड असायची. आपल्याच जिल्ह्यातील मोगरगा येथील प्रा.चंद्रभानूजी सोनवणे(गुरुकुलचे स्नातक) हे प्राध्यापक होते. प्रा.ओमकुमार, प्रा.राजेंद्रजी जिज्ञासू हे ही प्राध्यापक होते. यामुळे रोजच सत्संग व्हायचा. याच काळात औरादचे श्री अण्णारावजी पाटील(सध्याचे विज्ञानमुनिजी) यांनी सोलापूर ये आडत दुकान सुरु केले होते. पू.गुरुजी देखील यायचे म्हणून सोलापूर हे गुरुजींच्या कामाचे एक कार्यक्षेत्रच बनले होते.

पू.गुरुजी व प्रा.राजेंद्रजी जिज्ञासू यांच्या प्रेरणेने आम्हीही भारावून गेलो होतो. १९६४ ला मी शिक्षक म्हणून लागलो. यामुळे मुलांच्या प्रत्यक्ष संपर्कात आलो. परिणामी आम्ही योगासनाचे वर्ग चालू केले एवढेच नाही, तर 'उमरगा तालुका वेद प्रचार मंडळाची' स्थापना केली. यात मी स्वत: श्री काशीनाथ कदेरे, श्री सुभाषजी चव्हाण, श्री शिवराज आर्य, श्री प्रियदत्तजी(आता उपदेशक आहेत), श्री राजवीरजी(हेही उपदेशक आहेत.), श्री विश्वनाथ महाजन, श्री प्रतापसिंहजी चौहान (सभेमध्ये भजनोपदेशक) इत्यादींचा समावेश होता. यात श्री महाजन-तबलावादक, श्री प्रियदत्त-हार्मोनियम वादक, श्री प्रतापसिंह-गायक यांचा सहभाग. उन्हाळ्याच्या व दीपावलीच्या सुट्टीत आम्ही सर्व लवाजम्यासह परिसरातील खेड्यांना (बेडगा, चिंचोळी, पळसगाव, मळगी, मळगीवाडी, चंडकाळ, उजळंब, लांडवंती, चाकूर, कासारशिरसी इत्यादी गावांना) पायी जायचो. वैदिक तत्त्वज्ञानावर विचार मांडायचे. यज्ञविधीही करायचो. त्याचे वैज्ञानिक महत्त्व सांगायचे. अशीही प्रचार यंत्रणा काम करीत असे.

याच कालावधीत पू.गुरुजींनी मुलांसाठी 'संस्कार शिबिरे' घेण्याची योजना आखली. औरादपासून सुरुवात झाली. शिबिरात बौद्धिके व स्वास्थ्यरक्षा कार्यक्रमांची आखणी असायची. शंका समाधानाचाही कार्यक्रम असायचा. औरादचेच श्री शंकररावजी मयाचारीही (माझे गुरुजी) व मी आम्हाला व्याख्यानाची आवड होती. आम्हा दोघांची मुलांसाठी भाषणे व्हायची. आम्हाला हे काम आमचेच वाटायचे. औराद, लातूर, भालकी, उदगीर, परळी इत्यादी ठिकाणच्या शिबिरात माझाही सहभाग होता. या सर्वांपाठीमागे एकच प्रेरणास्थान ते म्हणजे पू.हरिश्चंद्र गुरुजी!

या सगळ्या आठवणींना उजाळा दिला याचे कारण पू.हरिश्चंद्र गुरुजी अर्थात् आजचे स्वामी श्रद्धानंदजी! आज त्यांना शंभर वर्षे पूर्ण होत आहेत. 'जीवेत शरद: शतम्' हे प्रत्यक्षात पूर्ण झाले आहे. अतिशय कणखर, बाल ब्रह्मचारी, निर्भिड, स्पष्ट वक्ता, प्रचंड मनोबल, मुलांशी सतत संपर्क, पायी फिरून प्रचार(चालणे फार वेगाचे), स्वातंत्र्य सेनानी आणि लढवय्ये व्यक्तिमत्त्व! विदेशातही वेद प्रचाराचे काम करीत असलेले श्री सोनेरावजी, श्री तानाजी हे गुरुजींचे शिष्यच आहेत. आर्य समाजाच्या इतिहासातील हे एकमेव उदाहरण आहे. जे खेडोपाडी मुलांपर्यंत पोहोंचून प्रचाराचे कार्य करणारे! 'न भूतो न भविष्यति!' म्हणूनच 'येथे कर माझे जुळती...!'

– यज्ञ, गजानन मंदिर परिसर, औरंगाबाद

कृतार्थ हाताचा परीस स्पर्श

- लक्ष्मण आर्य गुरुजी

पू.हरिश्चंद्र गुरुजीचं व्यक्तिमत्व एवढं भव्यदिव्य आहे की, कितीही लिहिलं तरी लेखनी अपूरीच पडते. गुरूजींना परमेश्वराने भव्य शरीरयष्टी दिली. त्यासोबत दिव्य बुद्धीही दिली. त्यांच्याकडे पाहिलं की, माणसांवर नकळतच व्यक्तित्वाची छाप पडते व दिव्यत्वाची प्रचिती येते. त्यांच्या मवाळ वाणीतून अमृताचा झरा सतत पाझरत असतो. त्या झऱ्यातून जीवन घडविणारं अमृत मिळतं व आपण कसे व कधी गुरुजींचे होऊन जातो, हे कळतच नाही. त्यांच्या बोलण्यात मधुरता, कल्याणाची भावना व तळमळ असते. कोणी परिचित असो वा अपरिचित,थोर असो वा लहान... गुरुजी त्याला प्रश्नोत्तराच्या शैलीने बोलके करतात. 'बाळ, तुला मोठा (महान) बनावं वाटतं का ? त्यासाठी तू काय प्रयत्न करतोस?' असे एक ना अनेक प्रश्न विचारून त्याला विचार करायला प्रवृत्त करतात. जर प्रश्नांची उत्तरं आली नाहीत, तर त्याला प्रश्नाची उकल हळुवारपणे करून देतात. ही उकल म्हणजे वैदिक ज्ञानाचे बाळबोध धडेच असतात.

गुरुजींना विद्यार्थ्यांना घडवण्याचं वेड लागलेलं असतं. ते गावोगावी, वसतिगृहावर, शाळेत, महाविद्यालयात जाऊन विद्यार्थ्यांशी संवाद साधतात. एखादा गुणी, जिज्ञासू विद्यार्थी मिळाला की त्यांचा आनंद गगनात मावेनासा होतो. असे अनेक विद्यार्थी त्यांनी घडविले. कांही उद्योजक, शास्त्रज्ञ, अधिकारी, विद्वान, शिक्षक-प्राध्यापक हे सर्व या जगात गुरुजींनी दिलेल्या ज्ञानामुळे यशस्वीरित्या समाजकार्य करीत आहेत. मानवता संस्कार शिबिरातून अनेकांना घडविले. माझा गुरुजींचा संबंध कॉलेजच्या वसतिगृहात आला. त्यांचे मधुर, हितकारी संभाषण मला फार भावत असे. त्यांच्यामुळे आर्य समाजाची तोंड ओळख झाली. पुढे डॉ.काळे सरांमुळे आर्य समाजाचे विचार दृढ झाले.

अनेक कार्यक्रमांमध्ये गुरुजींचे दर्शन होई व वात्सल्याचा हात पाठीवर फिरे. काही महत्त्वाची गोष्ट असली की, मला जवळ घेऊन सांगत. ही जवळीक माझ्या जीवनातील अमूल्य ठेवा आहे. २००९ साली मथुरा येथे आर्य महासम्मेलन झाले. त्यावेळी गुरुजी तर होतेच, पण मीही मथुरेस गेलो होतो. एके दिवशी सकाळचे सत्र संपून भोजनाची सूचना दिली गेली. गुरुजी बरोबर रणवीर असायचा. तो ताट वाढून आणण्यासाठी गेला होता. गर्दी खूप होती, त्यामुळे खूप वेळ लागला. त्या अगोदर मी ताट वाढून घेतले होते. इतक्यात गुरुजी एकटेच बसलेले दिसले. त्यांना विचारल्यास त्यांनी रणवीर बऱ्याच वेळापासून गेल्याचे सांगितले. मी त्यांना माझे ताट दिले. पण ते म्हणाले मला हाताच्या कंपामुळे जेवता येत नाही. मी म्हणालो गुरुजी मी जेवू घालतो. मी चमच्याने त्यांना जेवू घालत होतो, तेंव्हा माझं हृदय भरून येत होत व धन्यता वाटत होती. मला परमेश्वराने महान आत्म्याची सेवा करण्याची संधी दिल्यामुळे धन्यता वाटत होती. जेवण संपल्यावर त्यांनी माझ्या पाठीवरून हात फिरवला. तो केवळ हात नव्हता, तर कृतार्थ हाताचा परीस स्पर्श होता.

परमेश्वर गुरुजींना उदंड आयुरारोग्य देवो व समाज, राष्ट्र, मानवतेचा दीपस्तंभ सदा तेवत राहो.

– 'पंचप्रकाश', विद्यानगर, परळी–वै.

गुरुजींच्या विधायकतेचे शताब्दी पर्व

- प्रा.देवदत्त तुंगार

उस्मानाबाद जिल्ह्यातील उमरगा तालुका आर्य समाजाचे तीर्थक्षेत्र आहे. हैदराबाद मुक्ती संग्रामातील पहिले बलिदान करणारे वेदप्रकाश हे उमरग्याजवळील गुंजोटीचे आर्यवीर होते. त्यामुळे १९३८ सालापासून भारतातील सर्व आर्यसमाजी नेत्यांना आणि कार्यकर्त्यांना वेदप्रकाशमुळे उमरगा तालुका सर्व ज्ञात आहे. श्री हरिश्चंद्र सूर्यवंशी यांचा माझ्याशी व तुंगार परिवाराशी १९६० पासून घनिष्ट संबंध आहे. हरिश्चंद्र गुरुजी म्हणूनच ते मराठवाड्यातच नव्हे, तर सर्व महाराष्ट्रात ख्यातकीर्त आहेत. उमरगा तालुक्यातील सर्वश्री दिनकर देशपांडे, सुग्रीव काळे, शंकरराव मयाचारी तसेच डॉ.संजय तुंगार, दिनकर मोरे, राधेश्याम मोपलवार, नवलकेले, म्हेत्रे, नयनकुमार, ओमप्रकाश होळीकर प्रभृती मंडळी त्यांच्या शिष्यवर्गात आहे.

आता शंभरीच्या उंबरठ्यावर असलेले स्वामी श्रद्धानंद अजुनही शारीरिक व बौद्धिक दृष्ट्या सक्षम आहेत. अनेकदा एकट्याने बस-प्रवास करतात. अनेक किलोमीटर पायी चालू शकतात. उत्तम भाषण देतात. त्यांना सध्या कमी ऐकू येण्याचा कानाचा त्रास होतो, पण बाकी प्रकृत्ती ठणठणीत आहे.

महाराष्ट्रातील सर्व आर्यसमाजांची केंद्रीय सभा म्हणजे महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभा या सभेचे श्रद्धानंद अनेक वर्ष अध्यक्ष होते. त्यांचे शिष्योत्तम प्रा.सुग्रीव काळे(ब्रह्ममुनी) यांच्याकडे अध्यक्षपदाची धुरा सोपवून ते संघटना कार्यातून मोकळे झाले. अर्थात त्यांची वृत्ती संघटना उभी करणे, पदाधिकारी बनणे, मिरवणे अशी नसल्याने आर्यसमाजाच्या संघटनात्मक कार्यात त्यांनी कधी फारशी रूची दाखवली नाही. त्यांचे मुख्य आवडीचे कार्यक्षेत्र म्हणजे विद्यार्थी वर्गाला सुसंस्कारित करणे हे आहे. नांदेड, परभणी, औरंगाबाद, पुणे, सातारा, सांगली, मुंबई, कोल्हापुर आदी कॉलेजातील वसतिगृहात जाऊन तेथील विद्यार्थ्यांशी मनमोकळा संवाद करीत व्यसनमुक्त संस्कारी जीवनाचे त्यांनी अखंडपणे अर्धशतकापेक्षा अधिक काळ धडे दिले. तसेच विद्यार्थ्यांची गावातील तरुणांची 'मानवता संस्कार शिबिरे' भरवून त्यांना पंथ मतनिरपेक्ष मानवतावादी मूल्यांचा संस्कार त्यांनी दिला. सुधीर, संजय, मिलींद या माझ्या तिन्ही मुलांना मानवता संस्कार शिबिरातून स्वामी श्रद्धानंदांनी सुसंस्कारित केले. त्यामुळे तिघेही मुंबई आणि पुणे येथील मोहनगरीत राहून व उच्च दर्जाच्या सरकारी नोकरीत कार्यरत असतांनाही व्यसनमुक्त, कार्यक्षम व प्रभावी शासकीय उच्च अधिकारी म्हणून त्यांनी लौकिक संपादन केला आहे. स्वामीजी नांदेडला आले की बहुतेक वेळा माझ्या घरीच मुक्कामाला असतात. सर्व जिल्ह्यात त्यांचे शिष्य आहेत. कोणी प्राध्यापक, प्राचार्य आहेत, कोणी पत्रकार आहेत, कोणी डॉक्टर तर कोणी इंजिनिअर! स्वामीजींचा स्वत:चा असा परिवार नाही. महाराष्ट्रभर विखुरलेले त्यांचे शिष्य हाच त्यांचा मोठा परिवार.स्वामीजींच्या शताब्दी वर्षानिमित्त त्यांच्या महान राष्ट्रीय व सामाजिक कार्यास शतश: वंदन! ते शतकोत्तर आयुष्य अतिशय आनंदाने व समाधानाने व्यतीत करोत अशी कामना!

- 'निरामय', कला मंदिरामागे, नांदेड

(लेखक स्वा.रा.ती.म. विद्यापीठाच्या पत्रकारिता व जनसंवाद विभागाचे पहिले विभाग प्रमुख आणि महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेचे उपमंत्री आहेत)

गुरुजींचे ध्येयनिष्ठ जीवन व कार्य

- किशन राऊत (बोरगांवकर)

औराद गुंजोटी ह्या लहानशा खेड्यात गुरुजी लहानाचे मोठे झाले. त्यांचा जन्म आजोळी मंगरूळ(ता.औसा) येथे झाला. त्यामुळे आऊराद व मंगरुळ येथे त्यांना चांगला मित्र परिवार लाभला. गावी पत्र्याचे लहानसे घर व थोडी शेती. औरादपासून जवळच उमरगा हे गाव ! तेथे औराद व गुंजोटीचे विद्यार्थी शिक्षणासाठी जायचे. त्यामुळे तेथील शाळेत परिचय व्हायचा. औराद येथे त्या काळी शाळा नसायची. म्हणून गावी त्यांनी १९४४ ते १९४७ पर्यंत गावठी शाळा चालवली. तेथे ते मुलांना नैतिकतेचे पाठ व इतर सर्व शिक्षण द्यायचे. त्यामुळे हरिश्चंद्र या नावाऐवजी गावात त्यांना सर्व 'गुरुजी' या नावाने ओळखू लागले.

भारताला स्वातंत्र्य मिळाले व नंतर गुरुजीला सरकारी शाळेत उमरगा येथे नोकरीसाठी बोलवणे आले. परंतु गुरुजी ध्येयनिष्ठ असल्यामुळे त्यांनी शिक्षकाची नोकरी नाकारली. त्यांनी महाराष्ट्रात स्वत:चेच चालते-फिरते विद्यापीठ निर्माण केले. इ.स.१९७४-१९७५ मध्ये मी मेघराजनगर, शहाणे निवास, लातूर येथे राहत होतो. त्यावेळी मी आंतरजातीय विवाहाचे काम पाहत होतो. त्या ठिकाणी ते एका शिष्याला घेऊन माझे घरी आले व विद्यार्थ्यांचा परिचय दिला. या विद्यार्थ्यांच्या हातात गुरुजींची साहित्य-पुस्तकाची पिशवी होती. तो विद्यार्थी म्हणजे इंजिनिअरींगचे शिक्षण घेतलेले श्री दिनकरराव मोरे होते. ते पुढे चालून पाटबंधारे खात्यातील मुख्य अभियंता व महाराष्ट्राचे सचिव या पदावर पोहोचले. उमरगा येथील गरीब मुलांच्या वसतिगृहावर राहून त्यांनी शिक्षण घेतले. तेथे त्यांना व अशा कितीतरी विद्यार्थ्यांना गुरुजी आर्थिक सहकार्य देखील करायचे व आर्य समाजाकडील वैदिक साहित्य विद्यार्थ्यांना भेट करायचे. पुढे हेच विद्यार्थी मोठे अधिकारी झाले की, त्यांच्याकडून गरीब विद्यार्थ्यांना सहकार्य करण्यासाठी आर्थिक मदत मागायचे. ही साखळी सतत गुरुजींनी सुरु ठेवली. नेहमी ते पायी फिरायचे. महाराष्ट्रात जेथे-जेथे हुशार व गरीब विद्यार्थी असतील, तेथे शोध घेऊन त्यांची भेट घेत आणि वैदिक साहित्य व आर्थिक मदत करीत. गुरुजींची फारच साधी राहणी होती. पवणी कापडाची धोती, शर्ट व फेटा ही त्यांची ओळख व दाढी वाढलेली!

गुरुजींना श्री गुलचंद सूर्यवंशी नावाचे एक भाऊ. त्यांच्या मुलाच्या शिक्षणाचीही ते काळजी घेत. त्यांचा पुतण्या रणवीर हा सावली सारखा त्यांचे बरोबर असायचा. काही कारणामुळे रणवीरच्या १२वी शिक्षणावर त्याचा परिणाम झाला. त्याचे दु:ख गुरुजीला बोचायचे. पुढे रणवीर व वीरेंद्र या नातूंनी जातीत लग्ने करून घेतली.त्याचे दु:ख त्यांना झाले.घरात आंतरजातीय विवाह व्हावेत,ही गुरुजींची तळमळ असायची.

गुरुजींचे ध्येय जातिविरहित समाज निर्मितीचे आहे. राष्ट्राला जो जातिव्यवस्थेचा कलंक लागलेला आहे, तो धुऊन काढणे, हेच ध्येय मनाशी बाळगून आहेत. आर्य समाजाचे कार्य, वैदिक विचार व गुरुकुल शिक्षण पद्धतीवर त्याचा भर आहे. त्यासाठी ते सतत कार्यरत असतात. त्यासाठी ते अखंड ब्रह्मचर्य पालन करीत जगत राहिले. १९९६ साली त्यांनी संन्यास दिक्षा घेतली. हेच सध्याचे 'श्रद्धानंदजी!'

मी जातिप्रथा निर्मूलन विवाह केंद्राचा सचिव म्हणून काम करीत असल्यामुळे व यापूर्वी आंतरजातीय

विवाह मंडळाचे ही कार्य करीत असल्यामुळे आवजून गुरुजी माझ्या घरी गुरुजी यायचे व म्हणायचे हे कार्य सतत चालू राहू दे!

मी अंबाजोगाईला इ.स.१९७१ ला होतो. त्यावेळी गुरुजी अंबाजोगाईला आले. आर्य समाजामध्ये अजमेर येथील धार्मिक परीक्षा केंद्र चालविले होते. अंबाजोगाई येथील स्वातंत्र्यानंतरचे पहिले आमदार द्वारकाप्रसाद चौधरी यांची मुलगी पाहण्यासाठी परिक्षा केंद्रावर आले. तेथे सरस्वती नावाची मुलगी विद्यावाचस्पतींचा पेपर सोडवत होती. थोडा वेळ थांबून मुलगी पाहुन गेले. कारण मंगरुळचा मुलगा वशिष्ठ हब्बू (आर्य) हा शिक्षक म्हणून कार्यरत होता. लातूरच्या आर्य समाजामध्ये दोन्ही परिवाराला बोलावून मुलगी पाहण्याचा व पसंदी झाल्यानंतर त्यांचा गुरुजींनी साखरपुडा आटोपून टाकला. नंतर दि.८ मे १९७१ ला अंबाजोगाई येथे त्या मुलाच्या परिवाराचा विरोध असतांनाही सर्वांना समजावून सांगून विवाह लावला.

दुसरा प्रसंग असा की, गुरुजींचा शिष्य तानाजी आचार्य अमेरिकेहून लातूरला आले. शिष्याला विचारले, 'तुझी काय इच्छा आहे? लग्न करणार आहेस का ?' त्यांनी होकार देताच गुरुजी माझ्याकडे आले. त्यावेळी मी पाटबंधारे खात्यात लातूरला कार्यरत होतो. गुरुजी घरी आले व म्हणाले, 'मुलीच्या काही नोंदी आहेत का?' मी म्हणालो, 'औरंगाबादला पाच जिल्ह्याचे रजिस्ट्रार अधिकारी श्री धर्मराज कदम यांची मुलगी संगीता ही एम.ए.मराठीतून केलेली आहे. तिची नोंद दि.१०.०९.२००२ला विवाहासाठी झालेली आहे. ती मुलगी आपण पं.तानाजी आचार्यांना दाखवू या!' तेंव्हा संचिका(फाईल) घेऊन गुरुजी तानाजींकडे गेले. डॉ.तानाजींना फोटो व बायोडाटा पसंद पडला. लागलीच गुरुजी आचार्य तानाजींना घेऊन श्री धर्मराज कदमकडे औरंगाबादला गेले व मुलगी पाहुन पसंदी दर्शविली. दि.१५.१२.२००२ ला पं.तानाजी आचार्य यांचा विवाह लावला. थोडक्यात असे की, मुला-मुलींची पसंदी आली की, ते त्यांच्या विवाहासाठी थांबत नसत. ताबडतोब विवाह लावून मोकळे होत.

स्वतःच्या परिवारात दोन्ही पुतण्यांनी आंतरजातीय विवाह केले नाहीत, याचे दुःख गुरुजी नेहमी बोलून दाखवत. योगायोगाने रणवीरची मुलगी पदवीधर झाली. तिचा विवाह आंतरजातीय व्हावा अशी इच्छा व्यक्त केली. परंतु मुलीच्या आईची इच्छा स्वतःच्या जातीत देण्याची होती. गुरुजींनी रणवीरच्या पत्नीला बोलून दाखविले की, 'जर तुझ्या मुलीचा आंतरजातीय विवाह केला नाहीस, तर तुझ्या घराचे तोंड देखील मी पाहणार नाही.' त्यामुळे ती तयार झाली व दि.४ फेब्रुवारी २०१८ ला श्री चुडमुडे यांचे चि.वेदभूषण यांच्या समवेत विवाह संपन्न झाला.

तसेच गुरुजींचा दुसरा पुतण्या वीरेंद्र यांचा मुलगा यशवर्धन याने पण लिंगायत मुलीशी विवाह केल्यामुळे माझे ध्येय सार्थक झाले, असे गुरुजींनी उद्‌गार काढले. तरुण पिढी निर्व्यसनी व्हावी, उच्च शिक्षित व्हावी. जातिविरहित समाज निर्मितीसाठी त्यांचा पुढाकार असावा व आदर्श राष्ट्र निर्माण करावे, हेच ध्येय व विचार घेऊन शंभर वर्षात ते पदार्पण करीत आहेत. याचा आम्हांला अभिमान वाटतो. हे ऋषितुल्य व्यक्तिमत्त्व आम्हा सर्वांसाठी आदर्श आहे. मानवंतेची शिकवण देणाऱ्या या युगपुरुषास मानाचा मुजरा!

– 'क्रांति-कुंज', सीताराम नगर, लातूर(मो.९४२२९६८६७४)

* * *

आमचे गुरुजी

- माणिक सि. घाटे

निजाम राजवटीत पायगा म्हणजे जिल्ह्याचे ठिकाण गुंजोटी हे होते आणि त्याच्या शिवशेजारी पश्चिमेकडे अवघ्या दीड ते दोन कि.मी. अंतरावर पश्चिमेकडे औराद हे लहान खेडे. याच गावात एका शेतकरी गरीब कुटुंबात हरिश्चंद्र गुरुजींचा जन्म झाला. त्यांच्या वडीलांचे नाव रामराव सूर्यवंशी. आई प्रयागबाई, आजी पार्वतीबाई, भाऊ गुलचंद आणि बहीण कोंडाबाई. गुरुजी हे सर्वात मोठे होते.

गुरुजींचे शिक्षण केवळ सातवी पर्यंतच झाले. या गावी १९३७ ला आर्यसमाजाची स्थापना झालेली असल्यामुळे वैदिक धर्माचे विचार गावात रुजले होते. त्यामुळे गुरुजी ही त्याकडे आकर्षित झाले. एकदा लहानपणी ते आपल्या मित्रासोबत एका शेतात सिगारेट ओढत असल्याचे एकाने पाहिले आणि त्यांनी त्यांच्या श्री मारुती पाटील या खाजगी मास्तरला सांगितले. मारुती मास्तरांनी सिगारेट ओढलेल्या श्रीपती दुधभाते आणि हरिश्चंद्रांना उभे केले आणि हातावर छडी मोडीपर्यंत मारले व 'सिगारेट ओढता का रे?' असे खडसावले. या दोघांनी तेंव्हापासून सिगारेट ओढणे सोडून दिले.

गुरुजींनी सत्यार्थ प्रकाश सात वेळा वाचला. तेंव्हा मनात ठरवून टाकले की आपण वैदिक धर्माचा प्रचार व प्रसार केला पाहिले आणि चांगल्या विचारांचे विद्यार्थी तयार केले पाहिजेत. हे कार्य करायचे असेल तर लग्न करून भागणार नाही. म्हणून आई आणि वडिलांची परवानगी घेतली. वडील फक्त म्हणाले 'फार कठीण काम आहे बघ! विचार करून मार्ग स्वीकार.' वडिलांची परवानगी मिळाली. सुरुवातीला गुरुजी गावातच गावठी शाळेत शिकविण्याचे काम करीत. त्यामुळेच सर्वजण त्यांना 'गुरुजी' या नावाने संबोधतात. मला सुद्धा गुरुजींनी इयत्ता पहिलीला शिकविले आहे. गुरुजींचा लहान भाऊ श्री गुलचंद शेती करत. गुरुजी त्यांना देशी गायी पाळण्यास सांगत. देशी गाईचे दुध चांगले असते. खत चांगला असतो. गुलचंद ची पत्नी निर्मला ही सुद्धा कधी गुरुजींच्या कामाच्या आड येत नसत. गुरुजींच्या संपर्कातील बाहेरगावची अनेक मुले-मुली औरादला येऊन घरी राहत. खाऊ-पिऊ घालून त्यांच्याशी आपलेपणाचा व्यवहार हे सर्व कुटुंबीय करीत असत. गुरुजी बोरांच्या सुगीत विद्यार्थ्यांना आवडीने खारकी बोरे देत. आंब्याच्या सुगीत चांगल्या आंब्याचे रस खाऊ घालीत असत. गरीबी असूनही मुलांना अखंडपणे बोलावणे, त्यांना मार्गदर्शन करणे, नदी किनारी जाऊन संध्या करणे व योगाचे धडे देणे, मुलांना निर्व्यसनी करणे एवढा एकच छंद गुरुजींचा असे.

महाराष्ट्रातील लाखो मुले घडविण्याचे कार्य गुरुजींनी केले आहे. गुरुकुलमध्ये मुलांना पाठविण्याचे काम गुरुजींनी केले. आज गुरुजींचे विद्यार्थी(शिष्यगण) भारतातच नाही तर इंग्लंडमध्ये सर्वश्री तानाजीराव आचार्य, सोनेराव आचार्य, रामचंद्र पाटील हे कार्य करीत आहेत. योगीराज रामदेव बाबांना प्रेरणा देणारे स्व.अप्पाराव (विश्वमित्रजी), माधवराव विभूते (हिसार-हरियाणा) हे ही आमच्याच गावचे! हे आम्हास अभिमानाचे सांगावे वाटते. हे ही गुरुजींचे शिष्य. डॉ.ब्रह्ममुनिजी (सु.ब.काळे-प्रधान महाराष्ट्र आर्य

प्रतिनिधी सभा), पं.सुधाकर शास्त्री, विज्ञानमुनी(आ.सा.पाटील), स्व.शिवमुनी(शं.भी.मयाचारी) हे ही औराद गावचेच आहेत. ही आमच्यासाठी गर्वाची गोष्ट आहे. विद्यार्थी घडविण्यासाठी गुरूजींनी 'मानवता विकास शिबिरा'ची सुरुवात केली. पहिली शिबिरे औराद गावात घेतली गेली. पुढे ही शिबिरे महाराष्ट्रात प्रत्येक वर्षी प्रांतीय सभेतर्फे घेतली जात आहेत.

गुरुजींनी औराद गावामध्ये सामाजिक कार्यही भरपूर केलेले आहे. त्यांच्याच प्रयत्नाने गावातील जि.प.शाळेची दगडी इमारत त्यांच्याच हातून झालेली आहे. तसेच गावातील आडाचे बांधकाम, आर्य समाज मंदिराचे बांधकाम त्याच्या हातून घालेले आहे. तसेच उमरगा येथील आर्यसमाज मंदिराचे हे काम ही त्यांनीच केले असून येडसी (ता.उस्मानाबाद) व परळी वैजनाथ (जि.बीड) येथील गुरुकुलांची स्थापना व इमारतीची कामे त्यांनीच केलेली आहेत हे येथे आवर्जून नमूद करावेसे वाटते.

गुरुजींच्या प्रेरणेमुळे या गावातील लोकांनी हिंदी भाषा सत्याग्रह, गोवा सत्याग्रह, गोवध बंदी सत्याग्रह इत्यादी राष्ट्रीय कार्यात उत्साहाने सहभाग घेतलेला होता. मी स्वत: गोवध बंदी सत्याग्रहात सहभागी झालो होतो. गुरुजी आमचे जत्थेदार प्रमुख होते. त्यामध्ये २२ विद्यार्थ्यांनी सहभाग नोंदविला होता. यामुळे १० मे १९६७ ते २५ मे १९६७ तिहाड सेंट्रल जेलमध्ये आम्हाला सजा झालेली होती. त्यावेळी २५-३० रू. मध्ये आम्हाला आग्रा, कानपुर, दिल्ली, लाल किल्ला, सचिवालय व प्रसिद्ध दिल्लीतील प्रसिद्ध ठिकाणे गुरुजीमुळेच पाहायला मिळाली याचा उल्लेख करावासा वाटतो. गुरुजींच्या कार्याविषयी शब्दबद्ध केलेल्या काही ओळी याप्रसंगी व्यक्त कराव्याशा वाटतात-

एके काळी
चाळीस-पंचेचाळीस वर्षापूर्वी
नदी किनारी बसूनी
एक गोरा, नाकेला उंच माणूस
हाप शर्ट, धोतर, फेटा बांधलेला....

मुलांसोबत बसूनी रोज सायंकाळी
देत असे धडे निर्व्यसनाचे, वैदिक धर्माचे.....
जाती बंधनाचे, योगासन प्राणायामाचे
आंतरजातीय विवाहाचे, राष्ट्रप्रेमाचे....

त्याचेच नाव हरिश्चंद्र रामराव सूर्यवंशी
आणि आताचे नाव 'श्रद्धानंद'

आदरणीय गुरुजींचे कार्य अखंडितपणे चालत राहो, ही प्रभु चरणी प्रार्थना करतो!

- मु.पो.औराद(गुं.) ता.उमरगा जि.उस्मानाबाद
मो.९४२०६९४७५९

एक युगपुरुष - स्वामी श्रद्धानंद

- योगीराज भारती

अनेक महापुरुषांमध्ये आमचे पूज्य गुरुजी अर्थात् स्वामी श्रद्धानंदजी यांचे नाव जगाच्या इतिहासामध्ये अजरामर आहे. चंदनाप्रमाणे अहोरात्र झिजवणारे पूज्य गुरुजी हे आमच्यासाठी महान मार्गदर्शक, सच्चे गुरु आणि आराध्य दैवत आहेत. आजही गुरूजी वयाची शंभर वर्ष उलटली तरीही तितक्याच जोमाने, निष्ठेने तरुणवर्गाला मानवतेची शिकवण देत सेवा करीत आहेत. लंडनस्थित असलेले पूज्य गुरुजीचे अंत्यत निकटचे पट्टशिष्य डॉ.तानाजी दर्शनाचार्य यांच्या प्रयत्नाने, प्रेरणेने इ.स.१९७० साली अंबाजोगाई (जि.बीड) येथे गुरुजींचा आणि माझा परिचय झाला. गुरुजी माझ्याकडे सतत येत राहिले आणि त्यांच्यामुळे माझ्या आयुष्याचे सोने झाले. माझे जीवन सार्थक झाले. मला गुरुजी (पूज्य स्वामी श्रद्धानंद) यांसारखे सद्गुरु प्राप्त झाले. हा माझ्या जीवनातील सुवर्णकाळ आणि भाग्योदय आहे असे मी समजतो.

मी वैजापूर व गंगापूर या तालुक्यामध्ये १९७३ ते १९७६ या चार वर्षांमध्ये वीज मंडळामध्ये कार्यरत असतांना देखील गुरुजी माझ्याकडे येत व अत्यंत सहानुभूतीने व सद्भावनेने सत्संगाचे अनेक कार्यक्रम करून हजारो विद्यार्थ्यांना आणि नागरिकांना जागृत करण्याचे आवाहन करीत असत. आज या वयात देखील गुरुजी सतत फिरतात आणि देशसेवा करतात. ही आपणांसाठी फार मोठी उपलब्धी आहे.

ज्यांनी आम्हाला मानवता संस्कार शिबिरांद्वारे आर्यसमाजाचा परिचय करून दिला, ज्यांनी आम्हाला अहिंसा, सत्य, करुणा, दया आणि परोपकाराची जाणीव करून दिली, ज्यांनी आम्हाला वैदिक सिद्धांताचे महत्त्व पटवून दिले, राष्ट्रभक्तीची शिकवण दिली, व्यसनमुक्तीची, सात्विक आहाराची प्रेरणा दिली, ज्यांनी आम्हाला आदर्श आणि श्रेष्ठ नागरिक बनण्यासाठी दिशा दिली, माता-पिता, गुरुचे ऋण फेडण्याचे आवाहन केले, संप्रदायातून बाहेर पडून मानवतावादी खऱ्या वैदिक सिद्धांतांकडे वळण्याची शिकवण दिली आणि आमचा मोक्षमार्ग सुलभ करून दिला, असे दिव्यात्मे क्वचितच आढळतात. त्यांनी मानवता संस्कार शिबिरांद्वारे हजारो व लाखो तरुणांना मानवतावादाची, देशभक्तीची शिकवण दिली. आज गुरुजींचे हजारो विद्यार्थी आदर्श नागरिक, श्रेष्ठ नागरिक बनलेले दिसून येत आहेत, ही त्यांचीच कृपा!

'रामलिंग येडसी' येथील गुरुकुल आणि परळी येथील गुरुकुल पाहिले म्हणजे ब्रह्ममुनींची आणि गुरुजींची आठवण आल्याशिवाय राहत नाही. आज संपूर्ण महाराष्ट्र प्रांतात आणि भारत देशात सर्वप्रिय आणि कर्तव्यदक्ष असलेले आर्यसमाजाचे महाराष्ट्र प्रांताचे अध्यक्ष मार्गदर्शक म्हणून ब्रह्ममुनी जे कार्यरत आहेत, ते देखील स्वामी श्रद्धानंदजींचेच अनुयायी आणि पट्टशिष्य आहेत. दोन्हीही गुरुकुलांच्या निर्मितीमध्ये गुरुजी व ब्रह्ममुनींचा (डॉ.सु.ब.काळे) मोलाचा सिंहाचा वाटा आहे हे कदापि विसरता येणार नाही.

अशा महान, आदर्श गुरुजींना म्हणजेच स्वामी श्रद्धानंदजींना आमचे कोटी-कोटी प्रणाम! असेच थोर विभूती आमच्या भारतमातेच्या पोटी पुन्हा-पुन्हा जन्माला यावेत हीच ईश्वरचणी नम्र प्रार्थना!

- 'आर्यभवन', विद्यानगर, परळी-वै. जि.बीड

गुरुजी की बात गावाची साथ

- ॲड.घोरपडे एम.बी.

दहावीची परीक्षा दिली व सुट्ट्यांसाठी मामाचे गांव औराद गाठले. कारण येथे मामाची मुले पांडुरंग व विठ्ठल माझ्या वयाचीच होती. एखादा वर्ष मागे पुढे! तिसरा मित्र विनायक सूर्यवंशी हा नेहमीच बरोबर असायचा. हा हरिश्चंद्र गुरुजींच्या भावकीतला! गावातील कुबेर घर! कारण विनायकचे भाऊ त्र्यंबकराव सूर्यवंशी बरेच दिवस सरपंच होते. याच काळात 'मानवता संस्कार शिबीर' उदयास आले. या काळात हरिश्चंद्र गुरुजी म्हणजे औराद गावचे नेते होते. सत्याग्रह हे गुरुर्जीचे आवडते हत्यार. गावातील पाण्याचा प्रश्न असो की शाळेचे बांधकाम अथवा आडाचे बांधकाम! गुरुजी सर्वांच्या पुढे असायचे. गुरुर्जींच्या मागे ग्रामपंचायत व पूर्ण औराद रहिवाशी खंबीरपणे उभे असायचे. या काळात शाळा देवळातच भरायची. गुरुर्जींनी शाळा सुरु केली. गावातील मुले अ,आ, इ, ई शिकू लागली. गुरुजी पूर्ण वेळ अवैतनिक शिक्षक म्हणून द्यायचे. सुरुवातीला पहिलीपर्यंतची शाळा गावातच होती. नंतर बांधकाम करूनच शाळा गावाबाहेर नेली. पुढे मात्र शाळा जि.प.ची उघडली. एक ते चार वर्ग सुरु झाले. त्यानंतर आता गुरुजी पूर्ण वेळ आर्य समाजाचा प्रचार व हुशार विद्यार्थी शोधून त्यांना राष्ट्रसेवेचे, समाजसेवेचे व आर्यसमाज सिद्धांताचे धडे देऊ लागले.

मी दहावी नापास झालो. कारण वाडी ते मुरुम दहा किलोमीटर जावे लागत असे. जाणे-येणे पायीच असायचे ! दहावीचे इंग्रजी व गणित हे विषय गेले. आता काय पुढे ? अंधार! शेतीची राखण करू लागलो. शेत सडकेच्या बाजूला होते. हा राष्ट्रीय हमरस्ता क्र.०९ पुणे-हैद्राबाद होय. गुरुजीची पांढरी कार याच रोडने सोलापूर-पुणे जायची. माझे लक्ष रोडकडे! कारण गुरुजी हिंदी सत्याग्रही असो किंवा गोहत्याबंदी सत्याग्रह, गोवा मुक्ती सत्याग्रह याच रोडने जायचे. माझा चिमुकला जीव रोडकडे डोळे लावून असायचा. 'सत्याग्रह जथ्याची पांढरी कार दिसते का?' कारमध्ये शंकरराव गायकवाड व दत्तोपंत काळे(ब्रह्ममुनीचे मोठे भाऊ) नक्कीच गुरुजींच्या सोबत असायचे. परकियांचे आक्रमण असो वा एतद्देशीय स्वार्थी राजकारण्यांच्या संकुचित वृत्तीमुळे राष्ट्रभाषेवर किंवा गोमातेच्या प्राणांवर बेतलेले संकट असो! गुरुजी आपले सर्वस्व अर्पित करण्यासाठी सदैव तत्पर राहत. याविरुद्ध गावकऱ्यांना प्रेरणा देत... तर काही देशभक्तांना सोबत घेऊन लगेच आंदोलनासाठी निघत. असे राष्ट्रभक्त मातृभूमिच्या सेवेसाठी जाताना ते पाहण्यात मला मनोमन धन्यता वाटे. गुरुर्जींनी ग्रामसुधारणेबरोबरच विद्यार्थ्यांना मानवतेची दिशा देण्यासाठी स्वतःला वाहून घेतले. तसेच देशरक्षणाच्या कार्यात देखील ते अग्रेसर राहिले. कारण देश सुरक्षित असेल तरच त्या अंतर्गत समाजसेवा, परोपकार, शिक्षणप्रसार, अंधश्रद्धा निर्मुलन, जाती भेद निवारण इत्यादी उद्दिष्ट्ये साध्य होऊ शकतात. शांततेसाठी शास्त्राबरोबरच शस्त्राची तितकीच गरज आहे, असे गुरुजी नेहमी सांगत. त्यांचा क्षत्रियबाणा अन्याय व अत्याचाराविरुद्ध पेटून उठत असत... अशा क्षात्रतेजाने भारलेल्या गुरुर्जींनी आपले ब्रह्मतेजही जागृत ठेवले. म्हणून त्यांनी आपल्या सात्विक व शुद्ध वाणीने राष्ट्राच्या भाग्यविधात्यांना घडविण्याचा

सत्कार्य केला.

सुरुवातीला गावाशेजारील नदीच्या वाळुत बसून गुरुर्जींचा उपदेश दररोज संध्याकाळी व्हायचा. नदीत खेळायला व उपदेश ऐकायला येणाऱ्या औरादच्या मुलांचे दोन समुह होते. एक जकेकूर रस्त्याकडील व दुसरा उमरगा रस्त्याकडील. हरिश्चंद्र गुरुजी उमरगा रस्त्याला नेहमी मुलांना वाळूत बसवून उपदेश करायचे. एकदा त्यांच्याही लक्षात आले की, काही मुले तर जकेकूर रस्त्याला पण खेळतात. हरिश्चंद्र गुरुजींनी ठरविले की, गायरानात दोन्ही रस्त्याच्या मधोमध बसल्यास दोन्ही कडीला मुलांना बोलता येईल. आत्ता गुरुजी गायरानात बसू लागले. मुले गुरुजीभोवती गोल कडे करून बसायची. दरम्यान त्यांचेच शिष्य व माझे मावसभाऊ डॉ.सुग्रीव काळे यांच्या प्रेरणेने मी दहावी उत्तीर्ण झालो. पुढचेही शिक्षण आजोळी औरादमध्येच झाले. यामुळे गुरुर्जींच्या सान्निध्यात आपोआपच आलो. मी पी.डी.आर्ट पास होऊन एफ.वाय.बी.ए.ला शिवाजी कॉलेजला शिकू लागलो. गुरुर्जींच्या प्रेरणेने सकाळी रविवारी ८ वाजता आर्यसमाज मध्ये येणे, समाजाची स्वच्छता करणे व मुलांना रांगेत शिस्तीत यज्ञाला बसवणे व यज्ञाची तयारी करणे ही कामे आवडीने करू लागलो. दररोज संध्याकाळी शाळेच्या मैदानावर मुलांना जमवणे व झेंडा लावून प्रार्थना, जयघोष देणे ही कामे पण करू लागलो. एके दिवशी गुरुर्जींच्या हस्ते झेंडा वंदन झाले. जयघोष झाला. तो काळ साधारणत: १९६४-६५ चा असेल. याच वेळी आर्य वीर दलाची स्थापना झाली. एकेदिवशी पंडीत नरेंद्रजी आले होते. त्यांनी शाखेला भेट दिली. मानवंदना स्वीकारली. गुरुजींना फार फार आनंद झाला. याच काळात गुरुजींना भेटण्यासाठी अंबादासराव सोमवंशी, तानाजीराव आचार्य, सोनेराव, दिनकरराव मोरे भेटण्यासाठी यायचे. या सर्वांना ते जेव्हा येतील, तेव्हा गुरुर्जींची भेट घालून देणे व रात्रीची झोपण्याची व्यवस्था शाळेत करणे ही कामे मी नियमाने करू लागलो.

छोट्या-छोट्या अशा कितीतरी प्रसंगातून गुरुजी आम्हाला आदर्श पायवाट दाखवून द्यायचे. नदीत अंघोळ करण्यापासून ते लंगोट मारून व्यायाम कसा करावा? या साऱ्या गोष्टी शिकवायचे. या त्यांच्या महान प्रेरणेनेच मी आणि माझे मित्र राम सतानत, बळीराम सूर्यवंशी, माणिक घाटे हे सर्व आदर्श शिक्षक बनलो. त्यांच्या त्यागातून अनेक तरुण तयार झाले. १९६३ ते १९६६ या काळात औराद येथे तीन 'मानवता संस्कार शिबिर' झाले या तिन्ही शिबिरात आलेल्या पाहुण्यांची बैठक व्यवस्था, जेवण वाटप व्यवस्था इत्यादी कामे अतिशय मन लावून करीत होतो. स्वयंपाक बनवण्याची व्यवस्था कोतवाल शंकर हे करीत असत. सर्वजन तन, मन, धनाने शिबिरास मदत करीत. धान्य व निधी जमा करणे, तसेच इतर सर्व कामे सरपंच हणमंतराव पाटील यांच्यापासून ते उत्तमराव, शंकरराव, रघुराम, विठ्ठलराव पवार सर्व गुरुजन अतिशय मेहनतीने करीत होते.

गुरुजींचे सान्निध्य लाभले व आमचे जीवन सुसंस्कारित झाले. ही आमच्यासाठी भाग्याची गोष्ट ठरली. गुरुजींना दीर्घ आयुष्य लाभो, धर्मसेवा, राष्ट्रसेवेचा हा अखंड झरा कधीही अटू नये, ही ईश्वरचरणी प्रार्थना!

– लक्ष्मी कॉलनी, कालिकादेवी मंदिराजवळ,
जुना औसा रोड, लातूर

माणसे जन्मावी लागतात

- सौ.लीलावती राजेंद्र जगदाळे(परभणी)

पूर्वाश्रमीचे पूज्य हरिश्चंद्र गुरुजी अर्थात सध्याचे स्वामी श्रद्धानंदजी सरस्वती हे माझे काका. माझ्या स्वर्गीय वडिलांचे ज्येष्ठ बंधू. यांच्याबद्दल बरेच काही लिहून झाल्यानंतर उरले ते एक पान .. जन्मशताब्दीचे! साधारणत: १९१८ च्या कार्तिक किंबहुना मार्गशीर्ष पौर्णिमेचा जन्म ! सर्व नात्यांच्या गारव्याने वाढणारे हरित जीवन असतांना या जीवाने नेहमी नूतन वाटा चालल्या. व्यापून असलेल्या ईश्वर अस्तित्वाचा अविरत शोध घेतला आणि माणसांतच मानतवतेचे कमालीचा अभाव जाणला!

कर्मठ हाडामासाचं, प्रेमळ-निश्चयी वृत्तीचं, विरागी स्वभावाचं आणि अतिशय संवेदनशील मनाचं असं एक लाखातलं जीवन.... आपल्याचं स्वतंत्र रंगात रंगलेलं एक अत्यंत दुर्मिळ व्यक्तिमत्व असलं तरी प्राचीच्या लालिमेला ही लाजवावं असं तेजस्वी नि तपस्वी दर्शन! काकांच्या विषयी कोणी विचारणाचं केली तर मी पटकन सांगून टाकत असते की अहो, ते २० व्या शतकातले प्रचंड समाजसुधारक असून युवा जगताचे जीवन निर्माते आहेत...

यांच्या विषयी लिहित असतांना या शताब्दी विशेषांकात यांच्या सामाजिक सौहार्दतेबद्दल लिहिल्याशिवाय राहवत नाही. समाजाला आपल्यात कसं अभिन्नपणे सामावलं होतं त्याचं एक उदाहरण! माझ्या लहानपणापासून म्हणजे माझ्या वयाच्या चार-पाच वर्षापासून मी त्यांना चांगली ओळखते. असाच एकदाचा प्रसंग जो आजपावेतो स्मरणीय क्षणाला माझ्या डोळ्याच्या कडा ओलावून जातो. तो प्रसंग आहे १९८१ चा. मी इयत्ता नववीत प्रवेश घेतला. जून चा महिना होता. एकीकडे खरीप पेरणींची घाई नि दुसरीकडे नवीन शैक्षणिक वर्षाची धावपळ. मी 'श्रीकृष्ण विद्यालय गुंजोटी'त प्रवेश तर घेतला खरा पण माझा गणवेशाचा सदरा (शर्ट) हा खांद्यावर पूर्णपणे फाटलेला. मला मुलगी या नात्याने ते घालायला कसं तरी वाटू लागलं. म्हणून मी माझ्या वडिलांना म्हणाले, 'अण्णा! मला गणवेशाचा सदरा कधी आणणार आहात हो ? मला वर्गात बसायला नको झालंय?' त्यावर माझे वडील काय म्हणाले असतील, ते जाणून घ्याल ?

ते म्हणाले, 'अगं लीला! अण्णा(श्रद्धानंदजी) म्हणत होता की पहिल्यांदा फलाण्यासाठी चड्डया(अंडरवेअर) चा कपडा आण आणि मग त्या नंतर दुसऱ्या गुरुवारी लीलाला सदरा आण!' तो फलाणा कोण असेल बरे? तत्कालीन पंजाबमधून आचार्य, दशर्शनकार झालेले आणि आज विदेशात स्थित असलेले वैदिक धर्मप्रचारक! ज्यांनी त्यांच्या आयुष्याचा वीस वर्षाचा (गुरुकुलासह) कालावधी आमच्याच घरातून काढला. हे कोणी आमच्या वंशातले की घरातले नव्हते. पण आमच्या मनातले, ह्रदयातले समाज प्रतिनिधी होते. आम्हांला आपले वाटणारे, ममत्व देणारे, आमच्यातच अभिन्नपणे सामावणारे. याला म्हणतात माणसं!

माझे वडील उन्हाळी भुईमुग फार काढायचे. ते बऱ्याच वेळेला धोधारी पावसातचं निघायचे. भुईमुग घरी आणायला बैलगाडीचं साधन. रस्ता दलदलीच्या पाणंदीचा. तशा भयंकर वेळी ते फलाणे माझ्या

वडिलांच्या सोबत बैलगाडीतून भुईमुगाचे पोते उतरवू लागायचे. याही पेक्षा आपले ते कोण? .... कसे असतात बरे ? का, कोण जाणे ? मी वडिलांना म्हणाले, 'अण्णा, तुम्ही त्यांनाच अगोदर कपडा आणा, मग मला सदरा(शर्ट) आणा!' मला वाटतं सामाजिकतेचं किंबहुना मानवतेचं हस्तांतरण याही पेक्षा वेगळं असं कांही नसावं. जर काय पूज्य काकांनी १९५५-१९६० पासूनच एखादी स्वतंत्र सामाजिक संस्था किंवा संघटना उघडली असती, तर निश्चितपणे आज ती संपूर्ण भारतातून नामांकित नि वलयांकित झाली असती यात शंका नाही. पण काकांनी तसं न करता आपल्या घरातच कित्येक संस्था-संघटनांना, माणसं-समाजाला सामावून घेतलं आणि जिव्हाळ्यानं पोसलं!

आज अशी माणसं दुर्मिळ झाली आहेत, महाग झाली आहेत. त्यांनी चाललेल्या वाटा विराण आणि पडीक पडलेल्या आहेत. त्यांनी पोसलेल्या संस्था, संघटना जेरीला येत आहेत. याची मला खंत आहे. पण काळानं विन्मुख होऊ नये तरच सर्व सार्थक होईल. ईश्वर करो, यांच्या वाटा चालणारे पाऊल यांच्या हयातीतच यांच्या वाटेवर-मार्गावर पडो! या वाटा पुन्हा गजबजून-बहरून जावोत! शेवटी जे शब्दातीत असतं त्यांनाच कधी-कधी असं शब्दात बसवावं लागतं. यांच्या जन्मशताब्दी दिनानिमित्त आता मी इतकंच म्हणू शकेल-

हर ऊषा करती रहे, आपका पान
हर मंजर गाता रहे, आपका गान !
चराचर करता है, आपको नमन
युग-सदियाँ करती हैं आपको अभिवादन-वन्दन!

***

राष्ट्रीय कार्यों में गुरुजी का योगदान

राष्ट्रीय कार्यों में भी गुरुजी का योगदान अतुलनीय है। अंग्रेजों तथा रजाकारों के बढते अत्याचारों से हैदराबाद क्षेत्र की जनता त्रस्त थी उस समय औराद ग्राम एवं उसका परिसर भी हैदराबाद क्षेत्र में ही विद्यमान था। वहां के लोगों को भी रजाकारों के उत्पीढन का शिकार होना पडा। बढते हुए अत्याचारों के विरुद्ध गुरुजी ने क्रान्तिकारी कार्य किये। किल्लारी (जहां पर अक्तूबर १९९३ में भीषण भूकम्प हुआ।) गांव के आर्यों की रजाकारों ने हत्या की, तो उसका बदला आपने स्वयं हाथ के बन्दुक लेकर किया। जब वे हत्यारे रजाकार गांव की सीमा से गुजर रहे थे, तो गुरुजी ने उनपर रात के अन्धेरे में हीं गोलियां बरसायी। अनेकों आर्यों को उन्होंने अन्याय के खिलाफ आन्दोलन छेडने हेतु प्रेरणा दी। गांव से दूसरे गांव तक गुप्त संवाद पहुंचाने का जोखिमभरा उत्तरदायित्व भी आप बडी कुशलता के साथ निभाया।

गुरुजी ने १९५५ में अपने गांव के ११ व्यक्तियों को साथ लेकर गोवा मुक्तिसंग्राम में भाग लिया, उस समय बांदा नामक गांव केपास स्थित ५२ क्रमांक अंबड नाके पर उन्होंने क्रमशः रामेश्वर अशान्त (दिल्ली) तथा आजाद हिन्द फौज के कैप्टन भोलासिंह के नेतृत्व में कुल दो बार गोलियों की छाया में सत्याग्रह किया।

आमचे भूषण - गुरुजी

- गुणवंत पाटील

जवळपास १०० वर्षापूर्वी एका साधारण शेतकरी कुटुंबात राम व प्रयागबाई या सात्विक वृत्तीच्या दांपत्याच्या पोटी एक हिरा जन्माला आला. आमच्या गावासाठी हा बाळ म्हणजे भूषणावह ठरला. आई-वडिलांनी याचे नाव 'हरिश्चंद्र' असे ठेवले. त्यांनी सातवीपर्यंतचे शिक्षण घेऊन औराद गावात खाजगी शाळा सुरु केली. नंतर सरकारने पगार सुरु करण्याविषयी विचारणा केली असता त्यांनी या पगारीस स्पष्टपणे नकार दिला. गावासाठी त्यांनी शाळेबरोबरच विहीर खोदण्याचेही कार्य केले. त्याचबरोबर गावात सुधारणा घडवून आणण्याचाही प्रयत्न केला. लहानच वयात 'सत्यार्थ प्रकाश' हा सद्ग्रंथ मिळाला. त्याचे वाचन करून त्यांनी खरा वैदिक धर्म आत्मसात केला. आपणास मिळालेले हे पवित्र व शुद्ध ज्ञान जगाला वितरीत करण्यासाठी त्यांनी आजन्म ब्रह्मचारी राहण्याचे व्रत धारण केले.

असंख्य विद्यार्थ्यांना वेदाधारित मानवीय मूल्यांची जाणीव करून देण्यास सुरुवात केली. जास्तीत जास्त विद्यार्थ्यांमध्ये हिंडून-फिरून त्यांना शाश्वत वेद ज्ञानाचा बोध करून दिला. खेडोपाडी व शहरो-शहरी शाळा-महाविद्यालयात, वसतिगृहात जाऊन जिथे कुठे चांगले विद्यार्थी भेटतील, तिथे त्यांनी आपला गुरुपदेश कथन केला. त्यांच्या सात्विक उपदेशाची सुरुवात **'प्रिय बाळांनो!'** अशा संबोधनाने होत असे. अगदी साध्या व सोप्या भाषेत ते विद्यार्थ्यांना एक ईश्वर, एक मानवजात, अंधश्रद्धा निर्मुलन, ब्रह्मचर्य पालन, राष्ट्रीय व सामाजिक कर्तव्ये आदींची जाणीव करून देत असत.

सुरुवातीला आमच्या गावाच्या परिसरातील उमरगा, गुंजोटी, तुरोरी, मुळज आदी गावात फिरून विद्यार्थ्यांना सुविकसित करण्याचा प्रयत्न केला. नंतर मराठवाड्यातील सर्व जिल्ह्यात व कर्नाटकातील कांही भागात विद्यार्थ्यांचा शोध घेत गुरुजींची भ्रमंती सुरु झाली आणि पाहता-पाहता अनेक विद्यार्थी त्यांचे शिष्य बनत गेले. त्या विद्यार्थ्यांना मानवतेच्या उपदेशाबरोबरच आपल्या शेतातील शेंगा, बोरे, आंबे वगैरे वितरीत करत असत.

आम्ही औराद याच गावचे असल्याने आमचा गुरुजींशी निकटचा संबंध आला. माझे वडील बंधू श्री अण्णाराव(विज्ञानमुनी) व मी असे दोघेही गुरुजींच्या सान्निध्यात राहून वैदिक धर्माचे धडे घेऊ लागलो. आम्हा भावंडांना बोलावून गुरुजी नेहमीच आदर्श मार्गाने जीवन जगण्याचा उपदेश देत. वैदिक धर्माची विशालता, एक मानवता धर्म, ईश्वराचे सत्य स्वरूप, शुभ संस्कार, सच्चारित्र्य, अहिंसा, परोपकार, दान-धर्म इत्यादी बाबींचा आम्हाला सदैव उपदेश मिळत असे. गुरुजींच्या या चांगल्या बाबी आम्हाला देखील मनापासून आवडत असत. म्हणूनच आम्ही त्यांच्या विचारांचे वाटसरु बनलो. गुरुजींच्या सत्संगामुळे आम्हाला व आमच्या कुटुंबियांना चांगली फळेही मिळाली. त्यामुळे आमचे घराणे वैदिक धर्माच्या मार्गावर चालण्यास प्रवृत्त झाले.

पाटील कुटुंबातील चार-पाच मुले गुरुकुलात जाऊन संस्कृत शिकली व पुढे विद्वान, प्रचारक, शिक्षक, पुरोहित पदावर जाऊन सन्मानित झाली. यामुळे खरोखरच आम्ही धन्य झाले आहोत. हे सर्व घडले ते गुरुजीमुळेच !

गुरुजींच्या तपश्चर्येतून भारतमातेस आदर्श नवीन पिढी मिळाली. अनेक तरुण आज वैदिक तत्त्वज्ञानाच्या आधारे जीवन जगत आहेत. त्याचबरोबर समाजाला नवी दिशा देण्याचे कार्यही ते करीत आहेत. विद्वान, डॉक्टर, शास्त्रज्ञ, इंजिनिअर, शिक्षक प्राध्यापक आदी पदावर राहून गुरुजींचे अनेक शिष्य मोठ्या मान-सन्मानाने आपली कर्तव्ये बजावत आहेत. तसेच आर्य समाजासारख्या मानवकल्याणकारी संस्थेला देखील गुरुजींचा शिष्यवर्ग लाभला. त्यामुळेच आर्यसमाज आज मोठ्या प्रमाणावर वैदिक धर्माच्या प्रचार व प्रसारासाठी अग्रेसर आहेत. डॉ.तानाजीराव, प्रा.सोनेराव, डॉ.रामचंद्रजी, डॉ.नवलकेले इत्यादी शिष्यमंडळी साता-समुद्रापलीकडे पोहोंचली. अमेरिका, लंडन इत्यादी ठिकाणी वैदिक धर्माचा प्रचार व प्रसार करून लागले.

महाराष्ट्रात कुठेही गेल्यावर अनेकांच्या तोंडून गुरुजींचे नाव निघते. अनेक विद्यार्थ्यांच्या भेटीगाठी होतात. तेंव्हा ते अगदी कृतज्ञतेने असेच म्हणतात की, 'जर गुरुजींची भेट झाली नसती, तर आम्ही घडलोच नसतो. गुरुजींमुळे आम्हाला आदर्श पद्धती जीवन जगण्याची कला अवगत झाली' असे ते हृदयातून सांगतात. गुरुजींच्याच मार्गदर्शनामुळे हे सर्व विद्यार्थी निर्व्यसनी, सदाचारी आणि मानवनिर्मित जाती-पाती च्या भिंतींना भेदून ईश्वरीय सत्यव्यवस्थेप्रमाणे जीवन जगतांना आढळतात.

दरवर्षी उन्हाळी सुट्यात मानवता संस्कार शिबिरे आयोजित करून अनेक विद्वानांच्या माध्यमाने विद्यार्थ्यांना सुसंस्कारित करण्याचे गुरुजींनी मोठ्या प्रमाणात केले आहे. याच संस्कार शिबिरातून घडलेले अनेक विद्यार्थी आज मोठ्या अभिमानाने शिबिराविषयी बोलताना ऐकावयास मिळतात. याबरोबरच गुरुजींनी गोवधबंदी, हिंदी सत्यागृह, गोवा मुक्ती संग्राम या राष्ट्रीय कार्यात देखील भाग घेतला. त्यांच्या समवेत आमच्या गावातील अनेकजण सत्याग्रहात सहभागी झाले.

राष्ट्रीय कार्याबरोबरच जातिप्रथेच्या निर्मूलनासाठी गुरुजींनी कृतिशीलतेतून प्रयत्न केला. अनेक विद्यार्थ्यांचे जात-पात तोडून विवाह लावले. खऱ्या अर्थाने जातीअंताचा लढा यशस्वी जर कोणी केला असेल तर तो आर्य समाज व पूज्य गुरुजी यांनीच! या तपस्वी व्यक्तिमत्वामुळे वैदिक मानवतेच्या मार्गावर अनुगमन करणारा आदर्श समाज घडला आहे. या महापुरुषास माझ्या कुटुंबातर्फे विनम्र अभिवादन! पूज्य गुरुजींना शताधिक्य आयुष्य लाभो अशी ईश्वरचरणी कामना!

- मु.पो.औराद ता.उमरगा जि.धाराशिव
मो.९१४५२९४२३०

माझे प्रेरणास्थान -गुरुजी

- प्रा.डॉ.विठ्ठल यशवंतराव जाधव

एका सामान्य कुटूंबात माझा जन्म झाला. घरात शिक्षणाचा अभाव अज्ञान व अंधश्रद्धा भरपूर. मला समजू लागले त्यावेळी भारताला नुकतेच स्वातंत्र्य मिळाले होते. स्वातंत्र्य चळवळ व हैद्राबाद मुक्ती संग्राम यांचा अनुभव घेता आला. भारताला पूर्ण स्वातंत्र्य मिळाले. तेंव्हापासून शिक्षणाचे वारे समाजात वाहू लागले. यातूनच सदैवाने शिक्षणाची संधी पण मिळाली. मला शिक्षणाची फार आवड. इयत्ता ७वी पर्यंतचे शिक्षण गावात पूर्ण करून उमरग्यातील भारत विद्यालयामध्ये प्रवेश घेतला.

एके दिवशी शाळा सुटल्यानंतर निरोप मिळाला की, औरादचे गुरुजी बोलवत आहेत. मी शाळेच्या खेळाच्या मैदानाच्या बाजूला असलेल्या आंब्याच्या झाडाखाली बसलेल्या गुरुजींकडे गेलो. नमस्कार करून पुढे बसलो. ओळख करून घेतल्यानंतर गुरुजींनी मला कांही प्रश्न विचारले. 'मुला! तुला महान व थोर मानव होऊ वाटते का?', मी म्हणालो, 'हो!' गुरुजी म्हणाले, 'महान मानव होण्यासाठी श्रीरामासारखे व श्रीकृष्णासारखे जीवन बनवले पाहिजे.'

मी म्हणालो, 'महान मानव कसे बनायचे?'

गुरुजींनी महान मानव बनण्यासाठी सत्य आचरण, संयम व ब्रह्मचर्याचे पालन, सत्यधर्माचे पालन केले पाहिजे याची सविस्तर माहिती दिली.

गुरुजींची साधी राहणी. सरळ, सोपी भाषा व विद्यार्थ्यांबद्दल तळमळ बघून मी गुरुजींकडे आकर्षित झालो. आठवड्यातून एकदा ते मला भेटू लागले व वैदिक विचारांची प्रेरणा मिळाली. सुट्टीमध्ये मी गुरुजींच्या औरादला जाऊन विचारांना उत्तम संस्कार व प्रेरणा देणारी पुस्तके आणून वाचन केले. औरादला छोटेसे ग्रंथालय गुरुजी चालवत होते. या ग्रंथालयातून 'सत्यार्थ प्रकाश' ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका व हे ग्रंथ इतर महान लोकांची चरित्रे वाचू लागलो. या वाचनामुळे माझ्यातील धार्मिक अंधश्रद्धा दूर होऊन निराकार परमेश्वरावर श्रद्धा निर्माण झाली.

औरादला जाऊन यज्ञोपवीत धारण केले. यज्ञ करू लागलो व गायत्री मंत्राची दीक्षा घेऊन दररोज गायत्री मंत्राचा जप करू लागलो. आर्ष ग्रंथांचा अभ्यास व गुरुजींच्या शिकवणीमुळे धार्मिक अंधश्रद्धा व अज्ञान दूर झाले. मनुष्य जन्म सर्व प्राण्यात श्रेष्ठ आहे. हे जीवन सत्य धर्म पालनामुळे सुखी व आनंदी बनविणे शक्य आहे, याची दृढ धारणा मनात निर्माण झाली.

गुरुजींच्या शिकवणीमुळे व वैदिक ग्रंथाच्या प्रेरणेने माझ्या जीवनाला वैचारिक कलाटणी मिळली. मोठ्या प्रयत्नाने मी एम.एस्सी. शिक्षण यशस्वीपणे पूर्ण केले. अशक्य ते यश मी प्राप्त करू शकलो. शिवाजी कॉलेज येथे प्राध्यापक म्हणून काम करीत समाजसेवा कौटुंबिक जबाबदारी, राजकारण यशस्वीरीतीने पार पाडले. सामाजिक ऋण, देशाचे ऋण व ऋषीमुनींचे ऋण यांची सतत जाणीव ठेवून जीवन जगण्याचा जाणिवपूर्वक प्रयत्न केला. कॉलेजमधील विद्यार्थ्यांवर उत्तम ज्ञान व संस्कार देण्याचा प्रयत्न केला.

सन १९९१ मध्ये गुरुजींच्या मार्गदर्शनाने व डॉ.सुग्रीव काळे (ब्रह्ममुनी) यांच्या प्रेरणेने उमरगा येथ आर्यसमाजाची स्थापना केली. या आर्य समाजासाठी गुरुजींनी राज्यस्तरावरील अत्यंत मौल्यवान जागा दान दिली. या जागेत आर्य समाजा साठी यज्ञशाळा व सभागृह बांधून वैदिक विचारांचा प्रचार करण्याचे कार्य सतत चालू ठेवले. या आर्य समाजाच्या मंत्रीपदाची जबाबदारी श्रद्धेने व निष्ठेने सांभाळत. आजपर्यंत कार्य करीत आहे. या मंत्रीपदामुळे अनेक वैदिक विद्वानांचा परिचय झाला. त्यांच्याकडून अनेक चांगल्या गोष्टी मला शिकता आल्या. माझे जीवन सुसंस्कारित होत गेले. वैदिक तत्त्वज्ञानावर दृढ श्रद्धा निर्माण झाली. पूज्य हरिश्चंद्र गुरुजींच्या मार्गदर्शनामुळे व आर्यसमाजाच्या सतत संपर्कामुळे तसेच वैदिक शिकवण व धर्मावरील दृढ श्रद्धेमुळे माझ्या जीवनाला नवीन दिशा लाभली. यामुळे माझे जीवन सर्वच पातळीवर यशस्वी झालेले. आरोग्यसंपन्न आयुष्य, संततीकडून समाधान आणि धार्मिक, राजकीय व सामाजिक कार्यात मला भरपूर यश प्राप्त झाले. आज मला जीवनात कसलीच त्रुटी व विवंचना राहिलेली नाही. सुखी समाधानी आयुष्य जगावयास मिळावे.

पूज्य हरिश्चंद्र गुरुजी व आर्य समाज यांचा मी ऋणी आहे. या ऋणाची परतफेड करण्याचा माझ्या परीने मी आजपर्यंत केला आहे व यापुढेही करण्यासाठी मी जीवनभर प्रयत्नशील राहणार आहे.

पूज्य गुरुजींनी आरोग्यसंपन्न जीवन लाभो, याहीपेक्षा उदंड आयुष्य लाभो, हीच ईश्वरचरणी प्रार्थना...!

– मंत्री, आर्य समाज, आनंदीपुर ता.उमरगा जि.धाराशिव
मो.८२७५२७२९५९, ९४०५६७४४९५

गुरुजींची प्रेमळ छाया...!

- विजयकुमार कानडे(निलंगा)

पूज्य गुरुजी हे आमच्यासाठी खऱ्या अर्थाने माता-पिता व गुरु स्वरूपात आहेत. त्यांच्या प्रेमळ छायेखाली आम्ही सर्व कुटुंबिय आनंदाने यशस्वी जीवन जगत आहोत. माझी व गुरुजींची ओळख ही बेचाळीस वर्षापूर्वी झाली. चांगले व्यक्ती(मनुर्भव) तयार करणे किंवा चांगुलपणात अधिक भर घालणे हा त्यांच स्वभाव. मी मुळात बावन्न वर्षापासून आर्य समाज लातूरच्या वार्षिक उत्सवात जात असे. ते ही तिथे विद्यार्थ्यांना विद्वानांची प्रवचने ऐकावयास आणावयाचे. लातूरच्या उत्सवात त्यांची नजर माझ्यावर पडली. तेंव्हापासून मला त्यांनी जवळ केले आणि सतत माझ्यावर वैदिक ज्ञानाचा वर्षाव करीत राहिले. मला एक 'धडपड्या आर्य कार्यकर्ता' या रूपाने पाहतात. माझ्या मुलांवर देखील त्यांची छत्रछाया आहे.

आर्य समाजाच्या प्रचार व प्रसार कार्यात त्यांचा व त्यांच्या शिष्यांचा सिंहाचा वाटा आहे. गुरुजींचे जीवन साधे, जेवण सात्विक आहे. त्यांच्या संपर्काने हजारो विद्यार्थ्यांच्या जीवनाचे सोने झाले आहे. त्यांच्या क्रांतिकारी राष्ट्रीय व सामाजिक कार्याची शासनाने व इतर सामाजिक संस्थांनी दखल घेऊन त्यांच्या कार्याचा गौरव करावयास हवा. प्रसिद्धीपासून अत्यंत दूर असलेल्या या महान तपस्वी व्यक्तिमत्त्वास शताब्दी वर्षानिमित्त मनोमन अभिवादन!

पाळणा गुरुजींचा...!

- सौ.सुभद्रा मारुतीराव घोरपडे

सन १९१७ सालात - आनंद झाला औराद गावात
प्रयागबाईच्या पोटी हिरा जन्मला - बाप रामराव आनंदी झाला
आजी पार्वतीबाई साखर वाटायला - जो बाळा जो रे जो....

बाळाचे रूप गोजीरे छान - सया सख्या घाली तो स्नान
बाळाचा रंग गोरा-गोरापान - डोक्यावर काळी जावळ छान
दिसा-दिसानं बाळ वाढू लागला- जो बाळा जो रे जो....

बाळाच्या बारशाचा दिवस ठरला - पाना फुलांनी पाळणा सजला
सुहासिनींनी पाळणा पूजिला - पाचजनींनी पाळणा गाईला
हरिश्चंद्र नाव शोभे बाळाला- जो बाळा जो रे जो....

रामाचा हरी ९ वर्षाचा झाला - पद्मासनात मग्न बसू लागला
ईश्वर एक आहे सांगू लागला - भविष्याबद्दल चिंताग्रस्त झाला
स्वजन्माचे प्रयोजन विचारी ईश्वराला- जो बाळा जो रे जो....

निरागस बालपण हरपून गेला - आकाशात ओ३म् लिहू लागला
'सत्यार्थ प्रकाश' भावले त्याला- सात वेळा वाचून ओळखले दयानंदाला
वैदिक ज्ञान प्राप्त झाले हरीला - जो बाळा जो रे जो....

ईश्वराचे ध्यान उपासना करु लागला - कांतीमान चेहरा, सहा फुट उंच झाला
भविष्याच्या कार्याबद्दल गंभीर झाला - अंतः प्रेरणा मिळाली हरिश्चंद्राला
'विद्यार्थी जीवन घडविणे हे कार्य तुला' - जो बाळा जो रे जो....

गुरुजी ध्यान संध्या हवन करू लागले - ईश्वराला नाना प्रश्न विचारु लागले
विद्यार्थी जीवन घडवणे मी करेन - सांगा मला संसारी राहुन का ब्रह्मचारी जीवन
'आजन्म ब्रह्मचारी राहुन कार्य कर' - ईश्वराचे उत्तर हरीला, जो बाळा जो रे जो....

सन १९४८ सालात - हैद्राबाद मुक्ती संग्रामात
आर्य समाजी मोठ्या जोशात - तरुण मंडळी गेली तुरुंगात
हरिश्चंद्र गुरुजी झाले भूमिगत - जो बाळा जो रे जो....

सन १९५५ सालात - गोवा मुक्ती आंदोलनात
गावच्या दहा जणांचे नेतृत्व केले - सवंगड्यासह तुरुंगात गेले
सत्याग्रही यशस्वी आनंद गावात - जो बाळा जो रे जो....

सन १९५७ सालात - पंजाबमध्ये चंदीगड शहरात
हिंदी सत्याग्रह झाला जोरात - १७ साथीदार गेले तुरुंगात
गुरुजींची साथ मोठी सोबत्यांना - जो बाळा जो रे जो....

सन १९६६ सालात - गोहत्या बंदी आंदोलनात
सात माणसासह गुरुजी तुरुंगात - दुमदुमले आंदोलन ओ३म्च्या उच्चारात
घाबरले सरकार भगव्या झेंड्याला - जो बाळा जो रे जो....

गुरुजी आजन्म ब्रह्मचारी राहिले - हातात भगवा झेंडा कायम ठेवले
भारतभर हुशार विद्यार्थी शोधीले, ब्रह्ममुनी, विज्ञानमुनी, शिवमुनी तयार केले
प्रणाम आमचा गुरुजींच्या कठीण यशस्वी कार्याला - जो बाळा जो रे जो....

- लक्ष्मी कॉलनी, लातूर मो.७५८८४१८००२

गुरुजींचा सहवास दीपस्तंभासारखा...!

- रवींद्र साळुंके(उस्मानाबाद)

मी स्वत:ला भाग्यवान समजतो की, मला ऐन तारुण्याच्या उंबरठ्यावर महाविद्यालयीन शिक्षण घेत असतांना 'हरिश्चंद्र गुरुजी' सारखे गुरु भेटले ! परभणी येथील कृषि महाविद्यालयात शिकत असताना मी वसतिगृहात राहत असे. तिथेच गुरूजींची व माझी भेट झाली. पहाटे लवकर उठणे, व्यायाम, वाचन-मनन करणे, तसेच मांसाहार न करणे, विविध व्यसनांपासून दूर राहणे इत्यादी सर्व चांगल्या गोष्टी आई-वडिलांच्या इतक्याच मायेने गुरुजींनी मला सतत सांगितल्या. भरकटत जाण्याच्या वयात, गुरूजींच्या वारंवार होणाऱ्या भेटी व मिळणारा सहवास हा एखाद्या दीपस्तंभासारखा, आयुष्याच्या नौकेला दिशा दर्शविणारा ठरला! त्यांच्या विचारांच्या प्रेरणेमुळेच माझे जीवन सफल ठरले आहे.

परमेश्वर गुरुजींना शताधिक्य आयुष्य व उत्तम प्रकृतीची साथ देवो, हीच प्रार्थना!

विद्यार्थ्यांचे दीपस्तंभ : स्वामी श्रद्धानंदजी

- माधव चव्हाण

माझ्या जीवनात पूज्य हरिश्चंद्र गुरुजींचे मोठे स्थान आहे. हजारो विद्यार्थ्यांचे व जीवन घडविणाऱ्या या महान व्यक्तिमत्वाने माझ्या व परिवाराच्या जडणघडणीमध्ये अतिशय मोलाची भूमिका बजावली आहे.

इ.सन १९६० चा काळ होता. उस्मानाबाद जिल्ह्यातील उमरगा शहरात असणाऱ्या व प्रचंड मोठा ऐतिहासिक वारसा जपलेल्या भारत विद्यालयाच्या विस्तीर्ण मैदानावरच्या आंब्याच्या झाडाखाली एक छोटेखानी संस्कारशाळा भरलेली! त्या शाळेचे, किंबहुना चलत्या फिरत्या वैदिक विद्यापीठाचे आगमनच जणू त्या ठिकाणी झालेले! कांही विद्यार्थी गोलाकार बसून तो उपदेश ह्रदयात साठवत होते. तिकडून जातांना मी देखील लगेच त्या घोळक्यात सामील झालो. गुरुजींनी परिचय वगैरे विचारून आपल्या वैदिक तत्त्वज्ञानाचे अमृतपान करवण्यास सुरुवात केली. तेंव्हापासून आजतागायत गुरुजींचा सदुपदेश व मार्गदर्शन सुरुच आहे. शाळेच्या आवारात नेहमी गुरुजींची भेट होत राहिली. पुढे त्यांच्याशी आणखी जवळीक वाढली, माझे त्यांच्या गावी औराद व त्यांच्या गावी मुळज येणे-जोण सुरु झाले. आता मी त्यांच्या कुटुंबाचा सदस्य झालो होतो.

वैदिक तत्त्वज्ञान, खरा ईश्वर, मूर्तिपूजा, ब्रह्मचर्य, संताननिर्मिती इत्यादी कितीतरी विषय गुरुजींच्या तोंडून ऐकत असू आणि त्याचा जीवनात अवलंब करण्याची कसोशीने प्रयत्न करत असू. गुरुजींच्या तप आणि त्यागाचा असा काही परिणाम व्हायचा की त्यांच्या वाणीतून निघालेला प्रत्येक शब्द प्रत्यक्ष आचरावा असे वाटे. त्यांच्याच मुशीतून तयार झोले डॉ.सु.ब.काळे (डॉ.ब्रह्ममुनी), श्री अण्णाराव पाटील(श्री विज्ञानमुनी), स्व.मयाचारी गुरुजी(शिवमुनी), श्री गुणवंतराव पाटील, श्री दि.मा.मोरे, विजयकुमार कानडे, प्रा.अर्जुनराव सोमवंशी अशी कितीतरी गुरुजींच्या विद्यावंशातली मंडळी मित्र म्हणून मिळाली. त्यातली बहुतांश सर्व आजही माझ्या नित्य संपर्कात आहेत.

गुंजोटी, औराद या गावांमध्ये आर्य समाजाने मूळ धरले असले तरी माझ्या गावात मुळजमध्ये मात्र नावात 'मूळ'असले तरी या विचारांचे तिथे मूळही नव्हते. सुरुवात कदाचित माझ्यापासूनच होती. मी गुरुजींच्या प्रेरणेने गावात सभा घ्यायला सुरुवात केली. नव्याचा स्वीकार करायला ग्रामस्थ तयार होत नसत. मूर्तीपूजा आणि अंधश्रद्धा यांना चिकटलेल्या तथाकथित भक्तांना निर्गुण निराकार परमेश्वर समजावण्याचा पुरेपुर प्रयत्न केला. पण त्याचा काही उपयोग झाला नाही. दरम्यान मी उमरग्याच्या डी.सी.सी. बँकेत रुजू झालो. गुरुजींच्या कार्यात त्यांची बेताची आर्थिक परिस्थिती बाधक ठरू लागली. विद्यार्थ्यांना घडविण्याच्या त्यांच्या महत्कार्याचा आवाका वाढू लागला. तसतशी ही गोष्ट आम्हाला प्रकर्षाने जाणवू लागली. विपरीत परिस्थितीतही परावलंबी विद्यार्थ्यांकडून छदामही घ्यायचा नाही, ही गुरुजींची भीष्मप्रतिज्ञा. पण आता आर्थिकदृष्ट्या मी स्वावलंबी झालो होतो. भीतभीतच गुरुजींना आम्ही म्हटले की, तुमच्या कार्यासाठी आर्थिक स्वरूपात हातभार लावण्याची आमची इच्छा आहे. तेंव्हा सुदैवाने गुरुजींनी होकार दिला. याचा

आम्हाला मनोमन आनंद आहे. त्यांच्या पर्वताएवढ्या कामात खारीचा वाटा उचलता आला, याचे आम्हाला मनस्वी समाधानच वाटते. माझ्या व स्वामीजींच्या घरातील कौटुंबिक सुख-दुःखामध्ये सदैव मला संगत करता आली, हे मी माझे पुर्वसुकृताचे फळ समजतो. स्वामीजींनी त्यांची व मीही माझी कुठलीच गोष्ट, मग ती कितीही वैयक्तिक असो, कधीच एकमेकांपासून लपविली नाही. आजही स्वामीजी आवर्जून माझ्याकडे येतात. मीही अधुन-मधून त्यांना भेटतच असतो. क्वचित अपवाद वगळता मी स्वामीजींच्या आज्ञांचे व उपदेशांचे तत्त्वत: पालन करण्याचा कसोशीने प्रयत्न केला आहे. आणि असाच प्रयत्न करणारे श्री बाबुरावजी म्हेत्रे हेही आहेत. या दोन्ही परिवारांना एकत्र आणण्यातही स्वामीजींची मोठी भूमिकाआहे. कारण हा जातपात तोडून विवाह होता. यानिमित्ताने आमच्या कुटुंबात आंतरजातीय विवाहाचे क्रांतिकारी पाऊल उचलण्यात आले हे गुरुजींमुळेच!

पूज्य गुरुजींनी त्यांच्या वयाची शंभर वर्षे पूर्ण केली आहेत. यानिमित्ताने त्यांना यापुढेही उत्तम आरोग्य शताधिक आयुष्य लाभो व त्यांचा आशीवाद सदैव सर्वांवर राहो, अशी ईश्वरचरणी प्रार्थना!

-निवृत्त शाखाधिकारी, डी.सी.सी.बँक कॉलनी,

उमरगा जि.उस्मानाबाद

गुरुजीमुळे जीवनाला नवी दिशा...!

- प्रा.अर्जुनराव सोमवंशी (उदगीर)

सन् १९६२ मध्ये उमरग्याच्या छत्रपती महाविद्यालयात शिकत असतांना माझा गुरुजींशी परिचय झाला. मित्रांसमवेत बसून मी गुरुजींचा उपदेश ऐकला व मी फारच प्रभावित झालो. विविध विषयावर चर्चा झाली. तेंव्हा मी त्यांना 'सत्यार्थ प्रकाश' विषयी विचारले. त्यावेळी त्यांनी मला औराद ला येऊन हा ग्रंथ घेऊन जाण्याचा आग्रह केला. परीक्षा संपल्यानंतर मी त्यांचे गावी जाऊन 'सत्यार्थ प्रकाश' व इतर ग्रंथ घेऊन आलो. त्यांचे साधे घर पाहून मला फारच आश्चर्य वाटले. इतक्या प्रतिकूल परिस्थितीत सुद्धा विद्यार्थ्यांचा शोध घेत व त्यांना सत्याची जाणीव देत फिरणाऱ्या गुरुजींबद्दल कमालीचा आदर्श वाटला.

गुरुजींनी दिलेल्या ग्रंथांचे वाचन मी अतिशय तन्मयतेने केले. पुढे मी त्यांच्या नेहमीच सान्निध्यात राहिलो. मला त्यांच्याकडून मानवतेचा जो दिव्य संदेश मिळाला, तो खरोखरच माझ्या जीवनाला कलाटणी देणारा ठरला. गुरुजींनी मला माझ्या अज्ञ बालवयात, माझी करंगळी पकडून पुढे नेले आणि माझ्या जीवनाचे सोने झाले.

जर गुरुजी मला भेटले नसते तर न आर्य समाज कळला असता, ना ही वैदिक तत्त्वज्ञान! गुरुजींच्याच प्रयत्नांमुळे माझा आंतरजातीय विवाह झाला. माझ्या कुटुंबातील सर्व मुलांचे मी जात-पात तोडून विवाह केले आहेत. एक प्रामाणिक व्यक्ती होण्याबरोबरच विद्यार्थीप्रिय शिक्षक होण्याचे भाग्य मला लाभले आणि जीवनभर निष्ठेने विद्यादान करण्याचा योग लाभला. आर्य समाज उदगीर व महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेचे कार्य करण्याचे भाग्य लाभले, हे शक्य होतेय केवळ गुरुजींच्याच सान्निध्यामुळे. अशा महापुरुषास शताब्दी वर्षानिमित्त वंदन!

जातीअंताच्या चळवळीतील प्रेरक व्यक्तिमत्त्व

- ज्ञानकुमार आर्य

स्वामी श्रद्धानंदजी अर्थात पूर्वाश्रमीचे पूज्य हरिश्चंद्र गुरुजी शेकडो नव्हे, हजारो युवकांचे प्रेरणास्थान आहेत. एखादा कुशल शिल्पी ओबडधोबड दगडास तासून योग्य आकार देऊन, टाकीचे अलगद हळुवार घाव घालून त्यावर जसे नानाविध संस्कार करून त्यापासून एखादे सुंदर शिल्प तयार करतो, त्याप्रमाणे गुरुजींनी संपर्कात आलेल्या युवकांचा अक्षरशः कायापालट केला आहे.

गुरुजींनी आपल्या शिष्यांना अंधश्रद्धेकडून डोळस श्रद्धेकडे वळविले. अवतारवाद व मूर्तिपूजेच्या मायाजालातून ओढून काढून त्यांच्यात वैदिक एकेश्वरवाद, त्रैतवाद रुजविला. खऱ्या ईश्वराचे स्वरूप त्यांना पटवून दिले. त्यांना कोणत्याही व्यसनात फसू न देता त्यांचे जीवन निर्व्यसनी बनविले. त्यांना जीवनातील अर्थशुचितेचे बोधामृत पाजले. वरीलप्रमाणे विद्यार्थ्यांची जडणघडण करत असतांनाच गुरुजींनी आणखी एक अत्यंत मोलाचे कार्य केले. ते म्हणजे जात-पात निर्मुलनाचे! जातीभेदाच्या चौकटी मोडून पडलेला समाज व राष्ट्र एकसंघ बनविण्यासाठी त्यांनी आपल्या शिष्यांना आंतरजातीय विवाहाची प्रेरणा दिली. हे करण्यासाठी त्यांनी कोणावरही कधी दडपण आणले नाही. गुरुजींची प्रश्नशैली फार वैशिष्ट्यपूर्ण आहे. त्यांच्या प्रश्नांमध्ये तर्क, निसर्ग नियम, विज्ञान, शास्त्र यांबरोबरच आपुलकीचा, आत्मीयतेचा व कल्याणाचा भाव असतो.

प्रचलित जातिव्यवस्थेस कसलाही आधार नाही. त्या ईश्वरनिर्मित नसून मानवनिर्मित आहेत. ईश्वराने सर्व मानवांस समान रूपाने निर्माण केले. कोणी उच्च नाही, कोणी नीच नाही. उच्च-नीचपणा हा आपापल्या कर्माने प्राप्त होतो. आपण सर्व त्या अमृतस्वरूपी ईश्वराचे पुत्र आहोत. जातिबाह्य विवाह करण्यात एक वैज्ञानिक दृष्टिकोन आहे. रक्तबदलामुळे, जाती तोडून विवाह केल्यामुळे, संतती बुद्धिमान निपजते, सामाजिक सलोखा नांदते, जाती-जातींमधील तेढ नष्ट होते. यामुळे समाजात एक प्रकारचे सौख्य वाढते. वेद आणि वैदिक साहित्यात कोठेही जातींचा उल्लेख नाही. गुरुजींनी आपल्या प्रत्येक शिष्यास जातिभेदातील फोलपणा उघड करून दाखविला आहे. त्यांच्या या तर्कशुद्ध मांडणीमुळे शिष्यांना हे विचार पटत असत. याबाबतीत गुरुजींचा हेतू उदात्त आहे. 'आपले कल्याण व्हावे' या प्रेमापोटी ते आपणास हा सल्ला देत आहेत. हे समजून घेऊन अनेक शिष्यांनी आंतरजातीय विवाह केला. ते आज गृहस्थ जीवनात आनंदी आहेत.

रेणापूरचे आंतरजातीय विवाह मंडळ गेल्या ४७ वर्षांपासून आंतरजातीय विवाह जुळविण्याचे काम करते. परंतु गुरुजींनी त्यापूर्वी कितीतरी वर्षे अगोदर हे कार्य सुरु केले व आर्यसमाजीयांना एक दिशा दिली. सुरुवातीपासून गुरुजींचे मंडळास मार्गदर्शन मिळत राहिले आहे.

जातिअंताच्या चळवळीस योगदान देणाऱ्या या महान व्यक्तिमत्त्वास ईश्वर उदंड आयुष्य देवो! शतसांवत्सरिक महोत्सवानिमित्त गुरुजींना हार्दिक शुभेच्छा!

-सचिव, आंतरजातीय विवाह मंडळ, रेणापूर
कार्यालय, सीतारामनगर, लातूर. मो.९६२३८४२२४०

गुरुजी - वन मॅन आर्मी

- राजेंद्र दिवे

मानवता संसकार शिबीरांच्या माध्यमातून गुरुजींचा व माझा परिचय झाला. तो हळूहळू वाढतच गेला. तसे आर्य/वैदिक तत्त्वज्ञानाचे संस्कार माझ्यावर लहानपणापासूनच होत होते. परंतु शिबिराच्या माध्यमातून ते दृढ झाले. मी ठरवून आंतरजातीय विवाह केला. त्या योगे पुन्हा वैदिक तत्त्वज्ञानाच्या अधिक जवळ येत गेलो.

गुरुजी अधुन-मधून माझ्या घरी येत असत. आले की कोठे-कोठे भेट दिली? कोणते विद्यार्थी भेटले? काय-काय मार्गदर्शन केले? याची सविस्तर चर्चा होत असे. गुरजींचा त्याग, तपश्चर्या खरे तर एखाद्या महंतापेक्षा फार मोठी आहे व त्यांनी विद्यार्थ्यांच्या दारापर्यंत जावून त्यांची जडण-घडण केली. परंतु या 'वन मॅन आर्मी'ला जो मान सन्मान मिळावयास पाहिजे, तो मिळाला नाही. त्याला अनेक कारणे असली तरी महत्त्वाचे कारण गुरुजींचा स्वभाव हा प्रदर्शनीय नाही. त्यांनी कधीही आपल्या कार्याचे प्रदर्शन केले नाही. लोकेष्णा हा त्यांचा स्वभावच नाही. जे चांगले जमेल, तेवढे जमेल व जसे जमेल, तेवढे करायचे व समाजात सोडून द्यायचे. त्यांचे विद्यार्थी सुपर क्लासवन पासून ते खालच्या पदापर्यंत आहेत. तसेच गुरुजींच्या प्रयत्नातूनच आर्य समाज व महाराष्ट्र आर्य प्र. सभेच्या कार्यास कार्यकर्ते आणि या कार्यासाठी निश्चित अशी बळकटी देखील मिळत गेली.

एके ठिकाणी न थांबणे, पाण्यासारखे प्रवाही राहणे हा स्वभाव गुरुजींचा असल्याने माझ्या सभामंत्री पदाच्या काळात किंवा अगोदरही गुरुजी सभा कार्यालयात कधी रमलेच नाहीत. तो त्यांचा पिंडच नाही. गुरुजी 'वन मॅन आर्मी' आहेत. याचे कारण त्यांची कधी कोणाला माझ्या ह्या कामात बरोबर 'चल, मदत कर' असे कधीही म्हटले नाही. त्यामुळे त्यांच्या शिष्यांचा पसारा बराच असला तरी त्यांच्या पश्चात त्यांचे कार्य कोण करु शकेल? याबाबत साशंकता वाटते. गुरुजींचे लक्ष हे वसतिगृहावरील विद्यार्थी असत. त्यामुळे त्यांना त्यांच्यात सिद्धांताची पेरणी करणे सोपी जात असे. त्यांना जवळ बसवून जीवनातील सर्व बरे-वाईट समजावून सांगावयाचे व आपुलकीच्या प्रेमाचा झरा ते निर्माण करावयाचे. जो कि भविष्यातील अखंडीतपणे वाहत राहायचा. गुरुजी प्रारंभीच्या काळात महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेचे मंत्री होते. या पदावर असतांना देखील त्यांचे विद्यार्थ्यांमधील कार्य अखंडीतपणे चालू असायचे. गरीब विद्यार्थ्यांना मदत करणे, होतकरूंना प्रोत्साहन देणे, वाट चुकलेल्यांना वाट दाखविणे अशा प्रकारची कामे गुरुजींच्या हातून झालेली आहेत. या गोष्टी समाजासाठी खूपच उपयोगी व नवीन पिढीच्या जडणघडणीत फारच मोलाच्या ठरतात.

गुरुजींचा गौरव हा एका संन्यस्त माणसाचा सत्कार आहे. एक विद्वान पण संन्यस्त जीवन जगत असलेले प्रख्यात विचारवंत डॉ.जनार्दनरावजी वाघमारे यांच्या हस्ते हा गौरव सोहळा संपन्न होत आहे. हा समारंभ पाहणे व अनुभवणे हे आपले भाग्यच! गुरुजींना शताधिक आयुष्य लाभो, अशी प्रार्थना!

- 'घरकुल', नारायण नगर, लातूर(मो.९८२२३६५२७२)

माझे संस्कार गुरु - पू.स्वामीजी

- विज्ञानमुनी वानप्रस्थ(परळी-वै.)

केवळ महाराष्ट्रातीलच नव्हे, तर शेजारच्या कर्नाटक व आंध्रप्रदेश सीमेवरील अनेक विद्यार्थ्यांना नैतिक, सामाजिक व आध्यात्मिक मूल्यांची जाणीव करून देऊन त्यांना 'श्रेष्ठ माणूस' घडविण्याचे पवित्र कार्य करणारे श्री हरिश्चंद्र गुरुजी(स्वामीजी) हे औराद गावचे रहिवाशी! मीही याच गावचा असल्याने अगदी लहानपणापासून माझ्यावर गुरुजींच्या वैदिक विचारांचे संस्कार रुजले. माझ्या ब्रह्मचर्य, गृहस्थ व वानप्रस्थ या तिन्ही आश्रमातील कर्तव्यांची जाणीव, ज्ञान व मार्गदर्शन करून देण्याचे कार्य गुरुजींनी केले. मी विद्यार्थी दशेत गुरुजींच्या सान्निध्यात राहत असे.

माझा विवाह बालपणी झाला, तेंव्हा मला ब्रह्मचर्य, संयम व योग्य त्या गोष्टींचे ज्ञान गुरुजींनी करून दिले. पुढे आदर्श संतती जन्माला घालण्यासाठी आवश्यक असलेल्या नियमांचे पालन करण्याचा उपदेश देखील गुरुजींनी केला.गावात शाळा उभारताना रुपये कमी पडले म्हणून गुरुजींनी मला पैसे मागीतले. तेंव्हा आई वडिलांना अंधारात ठेवून मी माझी दोन तोळ्याची सोन्याची साखळी कदेरच्या व्यंकटराव पाटलांकडे गहान ठेवली. मोबदल्यात जे रूपये मिळाले, त्याद्वारे त्यांनी शाळा उभारली. नंतर तो हार परत आणून दिला.

एकदा गुरुजी म्हणाले, 'अण्णाराव तुझ्याकडे पैसा भरपूर आहे. तेंव्हा तू गोरगरीबांच्या मुलांना आर्थिक सहाय्यता करीत राहा. तसेच गरीबांना लग्नासाठी, शेतीसाठी, व्यापारासाठी कमी व्याजदराने रूपये देऊन त्यांना मदत कर.' असे म्हणताच मी गुरुजींच्या आज्ञेचे पालन केले.शाळकरी मुलांना नियमाने दरवर्षी पुस्तके व गणवेशासाठी मदत करीत राहिलो. तसेच गोरगरीबांना कमी व्याजदरात अर्थसहाय्य देखील करू लागलो. तेंव्हा एकदा मला वडील रागावले पण लोकांनी वेळेवर परतफेड केल्यामुळे वडिलांचेही समाधान झाले.

गुरुजी माझ्या सुधारणेसाठी मला नेहमी रागवत असत. विद्यार्थी दशेत मी आळशी व प्रमादी होतो. उशीरा उठायचो. माझ्यासोबत भुजंग कृष्ण गायकवाड देखील होते. तेंव्हा आम्ही गुरुजींकडे गेलो असता ते आम्हांला म्हणाले - 'तुम्ही नियमांचे पालन करीत नाहीत, आई-वडिलांची सेवा करीत नाहीत, तुमच्या जगण्याचा उपयोग तरी काय आहे? तुम्ही खरोखरच बैल आहात रे!' अशा तऱ्हेने गुरुजी अगदी छोट्या-छोट्या गोष्टींचे संस्कार करत असत. नंतरच्या काळात गुरुजींचे विद्यार्थी घडविण्याचे पवित्र कार्य यशस्वी ठरण्यासाठी आम्ही आमच्या कुटुंबाच्या वतीने आर्थिक मदतही केली. या पवित्र कार्यामुळे व गुरुजींच्या संस्कारामुळे आमच्या कुटुंबात आर्य समाजाचे वातावरण तयार झाले. आमचे भाऊ व मुले हे सर्व आर्य समाजाचे विद्वान्, कार्यकर्ते व पदाधिकारी बनले. आज माझा मोठा मुलगा आर्य समाज औरादच्या मंत्री पदावर आहे, तर दुसरा विद्वान पुत्र लंडन येथे आर्य समाजाचा धर्मोपदेशक आहे. तसेच एक दिवंगत पुतणे स्व.विश्वमित्र शास्त्री हे हिसार(हरियाणा) येथील आर्य समाजाचे क्रियाशील पुरोहित व तेथील उपदेशक महाविद्यालयाचे आचार्य होते. त्याचबरोबर एक पुतणे सुधाकर शास्त्री हे महाराष्ट्र सभेचे सक्रिय उपदेशक होते. हे सर्व घडले ते गुरुजींच्या संस्कारांच्या शिदोरीमुळेच! अशा महान संस्कार गुरुस माझे नमन!

अजमेर में आयोजित म.दयानन्द के १२५वें बलिदान समारोह में विचार व्यक्त करते हुए स्वामी श्रद्धानन्दजी।

दिल्ली के अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में आर्यजनों को संबोधित करते हुए स्वामीजी।

परली के गुरुकुल आश्रम में भवन उद्घाटन समारोह में विचार रखते हुए स्वामीजी।

प्रान्तीय सभा द्वारा आयोजित कार्यकर्त्ता सम्मेलन में स्वामीजी ने आर्यों को सम्बोधित किया ।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली में गौरवपत्र पत्र प्रदान कर अभिनन्दन करते हुए स्वामी रामदेवजी एवं सार्वदेशिक सभा के पदाधिकारी।

महाराष्ट्र में आयोजित विशेष समारोह में स्वामीजी के साथ आर्यजगत् के कर्मठ संन्यासी आचार्य बलदेवजी, ब्र.राजसिंहजी,एड् प्रकाश आर्य आदि।

१०० वें वर्ष में पदार्पण करनेवाले गुरुजी(स्वामीजी) का प्रसिद्ध शिक्षणतज्ज्ञ डॉ.जे.एम.वाघमारेजी ने सर्वप्रथम अभिनन्दन किया।

परभणी में सम्पन्न हुए ग्रन्थ विमोचन समारोह में स्वामीजी का सम्मान करते हुए पूर्व केन्द्रीय राज्यमन्त्री जयसिंगराव गायकवाड पाटील।